नक्षत्र दिग्दर्शिका

Name - Shashi Bhushan Singh

Date - 18/12/1973 Time - 01:45:00

POB - New Delhi (Delhi) INDIA

Longitude - 077:12:00 E

Latitude - 028:36:00 N

Sidharth Singh

Mindsutra Software Technlogies

A-16, GF, Ramdutt Enclave Milap Nagar, Uttam Nagar New Delhi - 10059

Contact - 9818193410, 9350247058

© Mindsutra's StarLight Premium 11 (Report Date - 02/03/2026 Time - 19:00:01)

श्री गणेशाय नमः

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	18 दिसम्बर 1973
जन्म समय	01:45:00
जन्म दिन	मंगलवार
जन्म स्थान	New Delhi
राज्य	Delhi
देश	INDIA
अक्षांश	028:36:00 N
रेखांश	077:12:00 E
स्थानीय समय संस्कार	-00:21:12 hrs
स्थानीय समय	01:23:48 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	07:09:03 hrs
इष्ट काल	46: 26: 41 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	2030
शक संवत	1895
संवत्सर	प्रमादी
ऋतु	हेमन्त
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
वार	सोमवार
तिथि	नवमी
नक्षत्र (पद)	हस्ता (2)
योग	सौभाग्य
करन	गरिज

अवकहड़ा चक्र

पाया	स्वर्ण
वर्ण	वैश्य
वश्य	द्विपद
योनि	महिष (स्त्री)
गण	देव
नाड़ी	आदि
रज्जु	कंठ
तत्व	अग्नि
तत्वाधिपति	मंगल
विहग	वायस
नाड़ी पद	मध्य
वेध	शतभिषा
आद्याक्षर	श
दशा बैलेंस	चन्द्रमा – 5व05मा026दि0
वर्तमान दशा	शनि–केतु–केतु
भयात	27: 30: 36 Ghati
भभोग	61: 31: 27 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	धनु
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	धनु
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:29:36
देकानेट	3
फेस	VI
सूर्योदय	07:10:46AM
सूर्यास्त	05:24:36PM
जन्मदिन का ग्रह	चन्द्रमा
जन्मसमय का ग्रह	शनि

लग्न

कन्या

राशि

कन्या

नक्षत्र – पद

हस्ता – 2

लग्नाधिपति

बुध

राशिपति

बुध

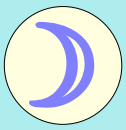

नक्षत्रपति

चन्द्रमा

घात चक्र

भद्रा अशुभ मास	शनिवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मिथुन अशुभ राशि	मीन अशुभ लग्न	5, 10, 15 अशुभ तिथि
श्रावण अशुभ नक्षत्र	सुकर्मन अशुभ योग	कौलव अशुभ करन

शुभ बिन्दु

9 मूलांक	5 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
2, 4 शत्रु अंक	18, 21, 23, 27, 30, 32, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार शुभ दिन
बुध, शुक्र शुभ ग्रह	मंगल, गुरू अशुभ ग्रह	धनु, मीन, वृष, कर्क मित्र राशि
धनु, मीन, वृष, कर्क मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
हीरा भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूरस शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रव्य

विस्तृत पंचागं विवरण

पंचागं ज्योतिष के पांच प्रमुख घटकों का सम्मिश्रण होता है– वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण, जो ज्योतिषियों को जातक के पंचाग फल की गणना करने में सहायता करता है। जातक के जन्म के समय इन पांच कारकों को ध्यान में रखते हुए ज्योतिषी जीवन के उतार–चढ़ाव को दर्शाते हुए एक स्पष्ट चित्र बना सकता है।

प्रमादी

संवत्सर

दक्षिण

अयन

हेमन्त

ऋतु

पौष

चन्द्र मास

कृष्ण

पक्ष

सोमवार

वार

नवमी

तिथि

हस्ता

नक्षत्र

गरिज

करण

सौभाग्य

सूर्य सिद्धान्त योग

रात्रि जन्म

दिवा / रात्रि जन्म

वृष

द्रेष्काण

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य

धनु
02:15:49
मूला (1)
सम राशि

चन्द्रमा

कन्या
16:00:58
हस्ता (2)
मित्र राशि

मंगल

मेष
04:42:18
अश्विनी (2)
स्व नक्षत्र

बुध (अ.)

वृश्चिक
19:51:24
ज्येष्ठा (1)
स्व राशि

गुरू

मकर
17:56:39
श्रवण (3)
स्व नक्षत्र

शुक्र

मकर
13:00:16
श्रवण (1)
नीच राशि

शनि (व.)

मिथुन
08:12:34
अरिद्रा (1)
मित्र राशि

राहु

धनु
05:10:35
मूला (2)
मित्र राशि

केतु

मिथुन
05:10:35
मृगशिर (4)
सम राशि

हर्षल

तुला
03:20:59
चित्रा (4)
सम राशि

नेपच्यून

वृश्चिक
14:20:41
अनुराधा (4)
सम राशि

प्लूटो

कन्या
13:11:14
हस्ता (1)
सम राशि

लग्न

कन्या
21:41:42
हस्ता (4)

10वां कस्प

मिथुन
22:25:07
पुनर्वसु (1)

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह		व/अ	राशि		अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC	लग्न		♍	कन्या	21:41:42	हस्ता (13)	4		
☉	सूर्य		♐	धनु	02:15:49	मूला (19)	1	दारा	मित्र राशि
☽	चन्द्रमा		♍	कन्या	16:00:58	हस्ता (13)	2	भ्रात्रि	स्व नक्षत्र
♂	मंगल		♈	मेष	04:42:18	अश्विनी (1)	2	ज्ञाति	स्व राशि
☿	बुध	अ.	♏	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (18)	1	आत्म	स्व नक्षत्र
♃	गुरू		♑	मकर	17:56:39	श्रवण (22)	3	अमात्य	नीच राशि
♀	शुक्र		♑	मकर	13:00:16	श्रवण (22)	1	मात्रि	मित्र राशि
♄	शनि	व.	♊	मिथुन	08:12:34	अरिद्रा (6)	1	अपत्या	मित्र राशि
☊	राहु		♐	धनु	05:10:35	मूला (19)	2		सम राशि
☋	केतु		♊	मिथुन	05:10:35	मृगशिर (5)	4		सम राशि
⚷	हर्षल		♎	तुला	03:20:59	चित्रा (14)	4		सम राशि
♆	नेपच्यून		♏	वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (17)	4		सम राशि
♇	प्लूटो		♍	कन्या	13:11:14	हस्ता (13)	1		सम राशि

नोट : – (व.) – वक्री, (अ.) – अस्त

लग्न कुण्डली

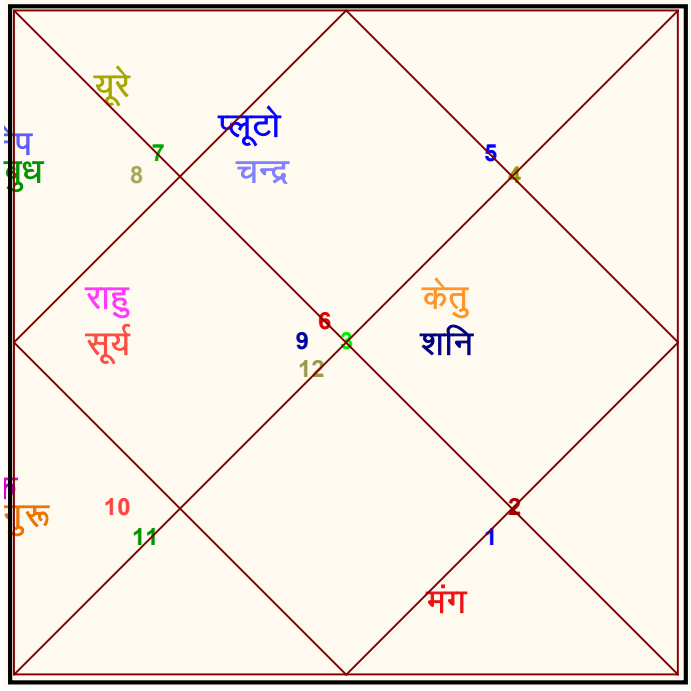

नवांश कुण्डली

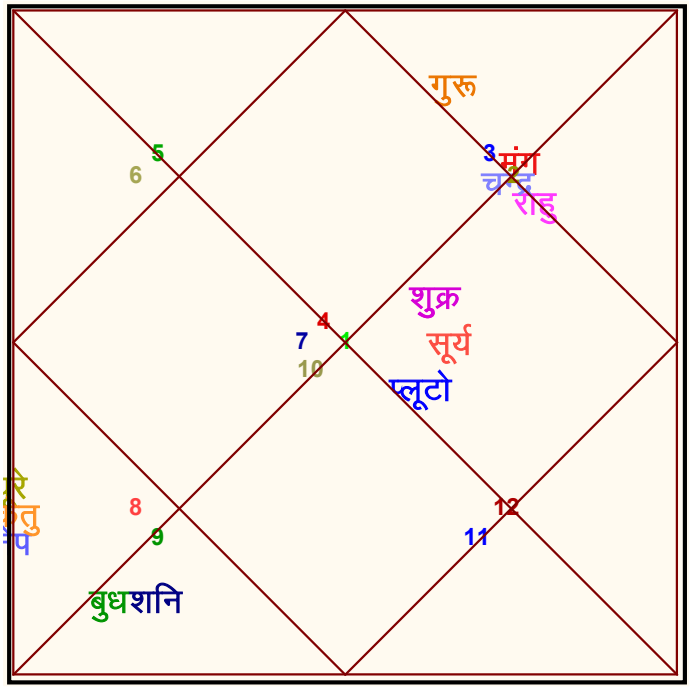

षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

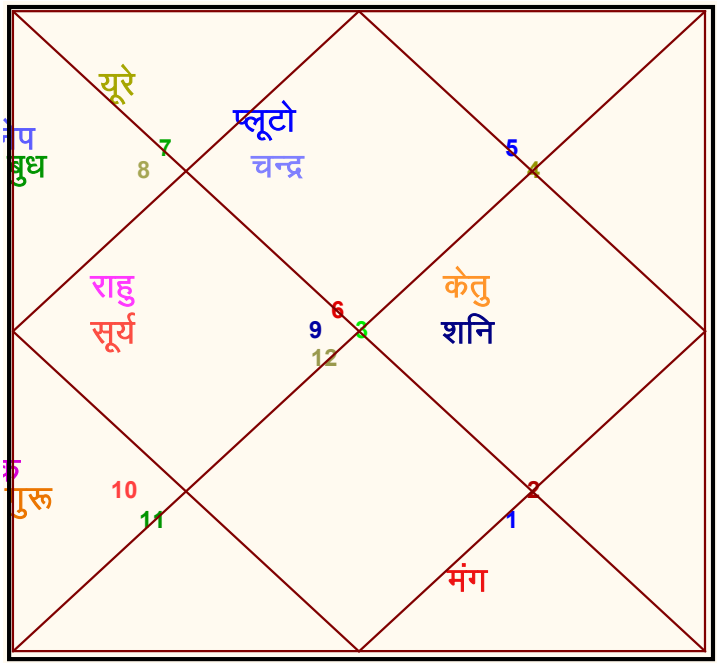

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

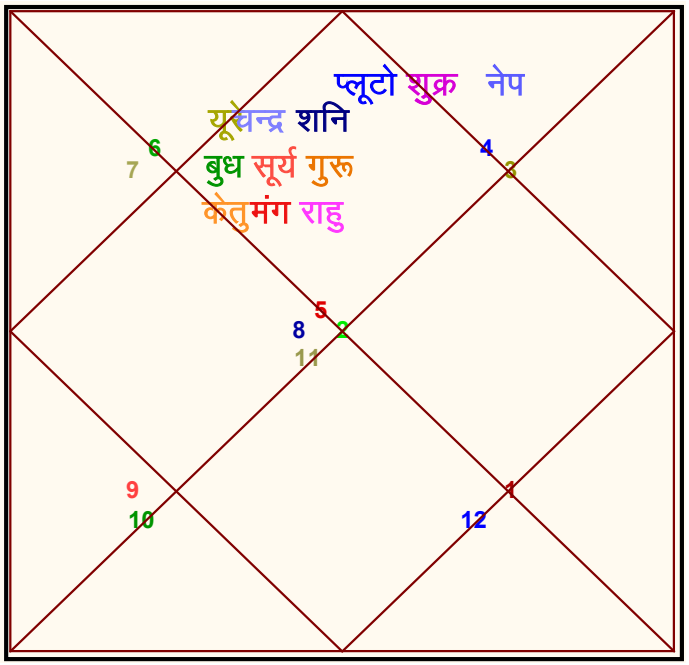

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

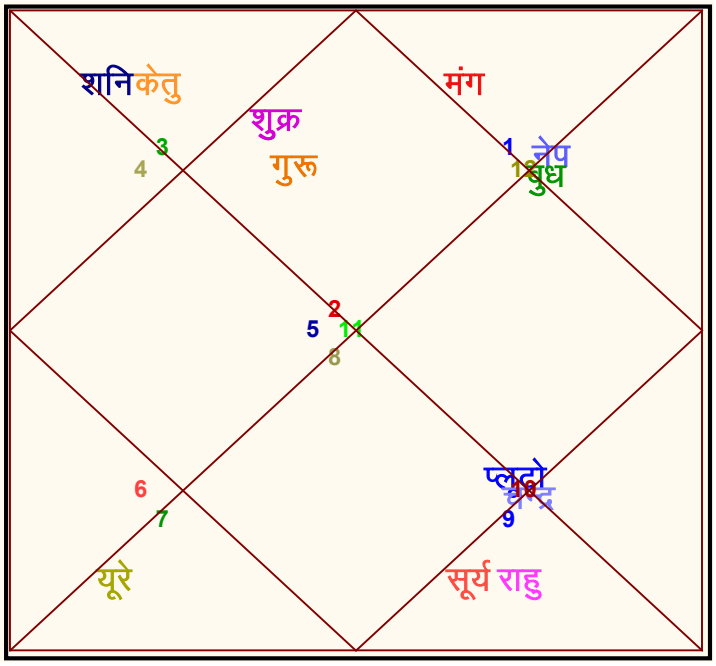

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई–बहनों, चचेरे भाई–बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

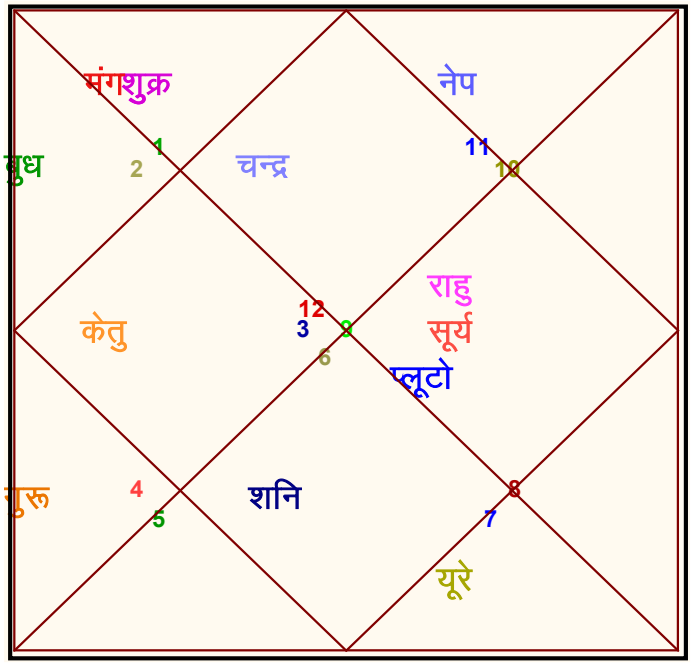

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और ऑटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

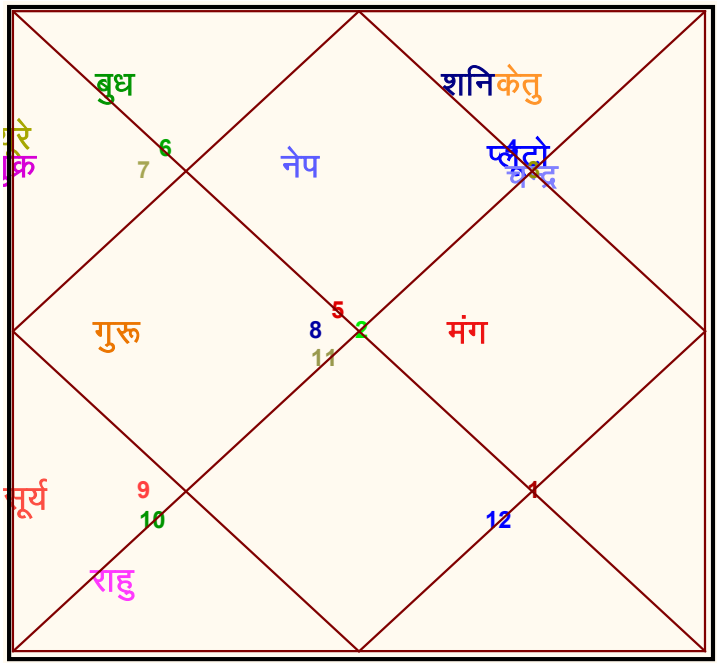

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

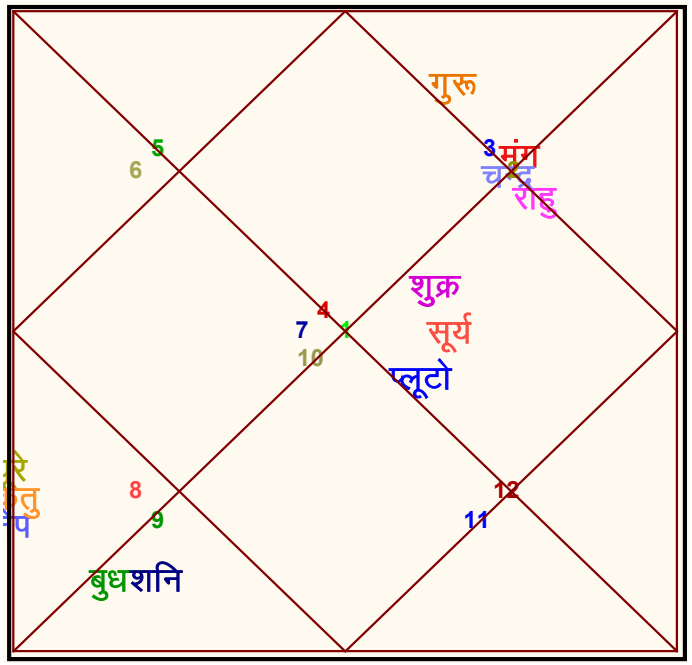

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

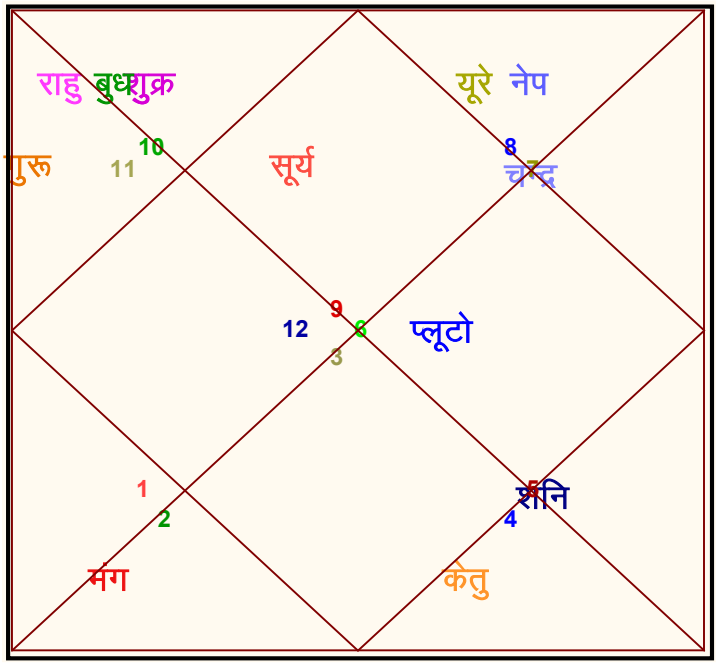

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ–साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

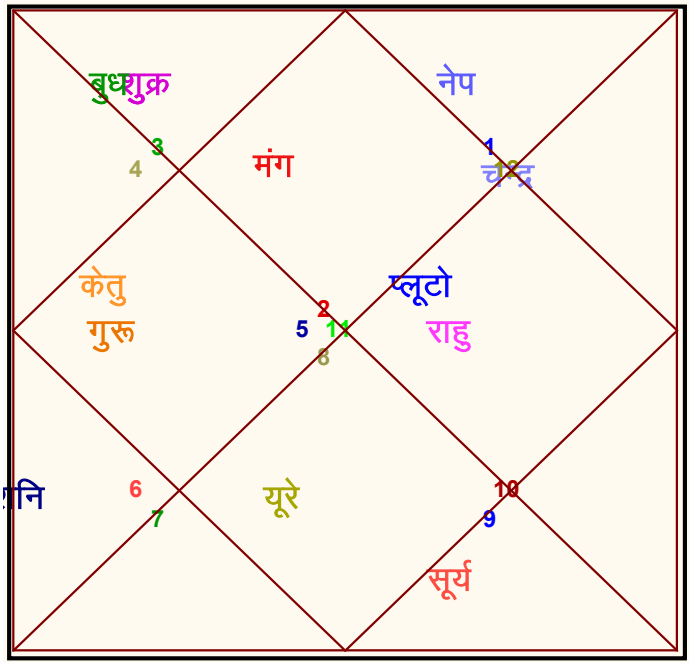

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता–पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता–पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

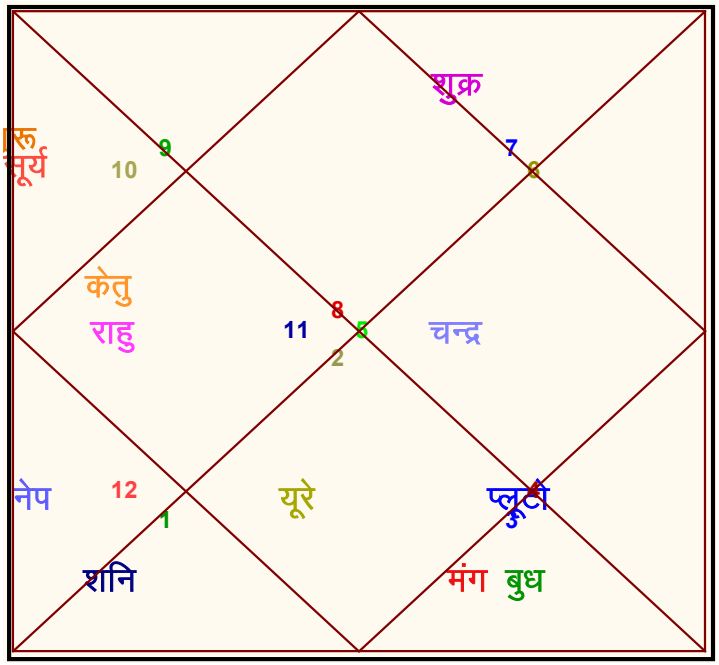

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के ऑटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

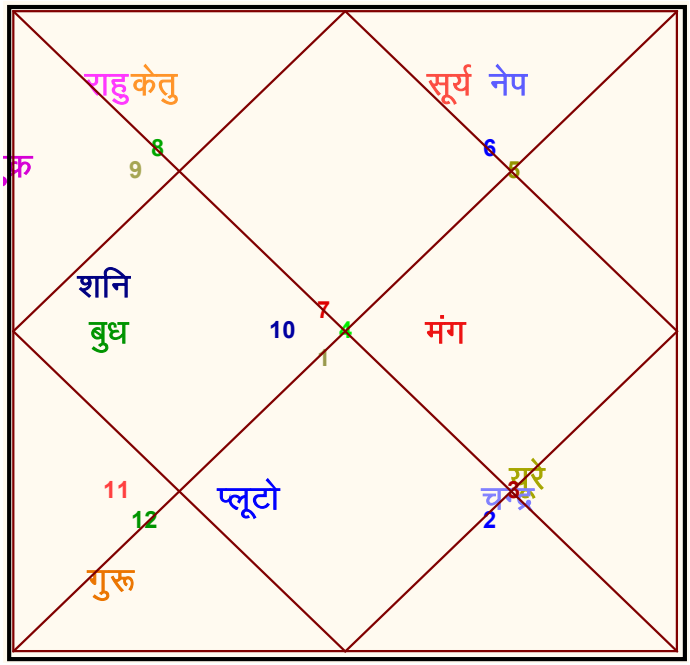

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

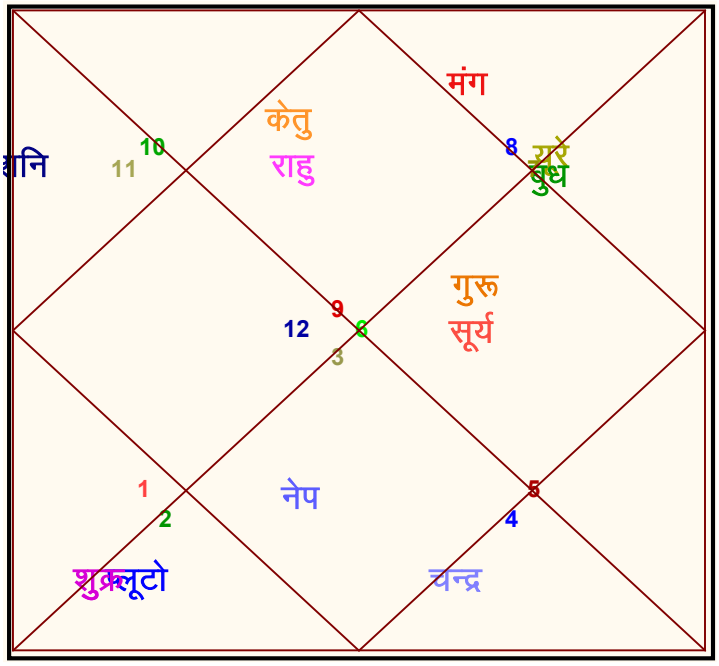

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

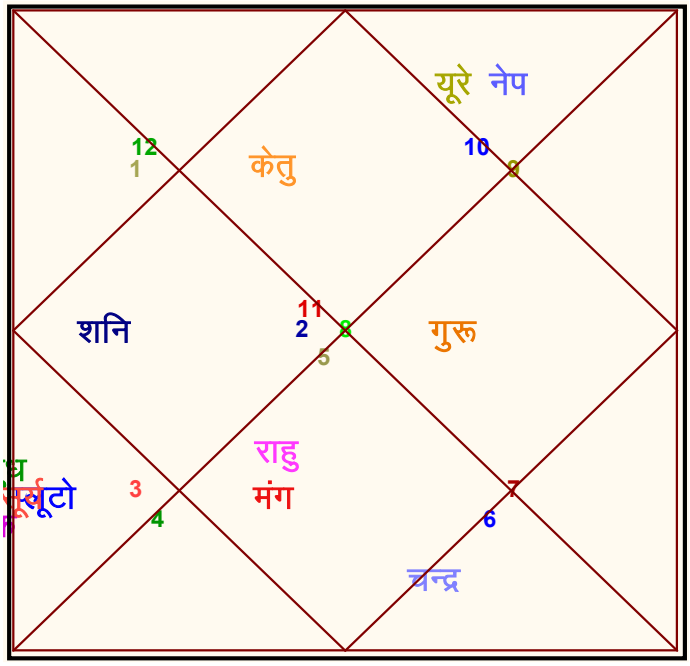

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

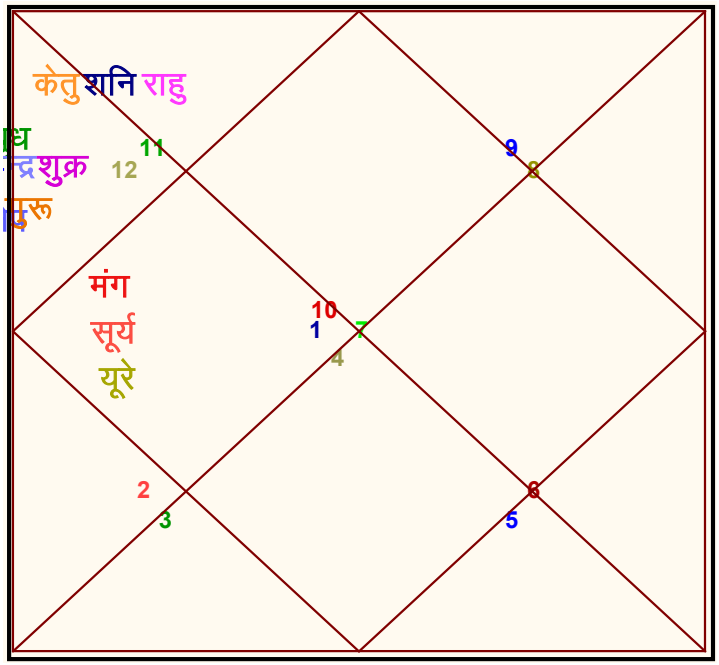

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

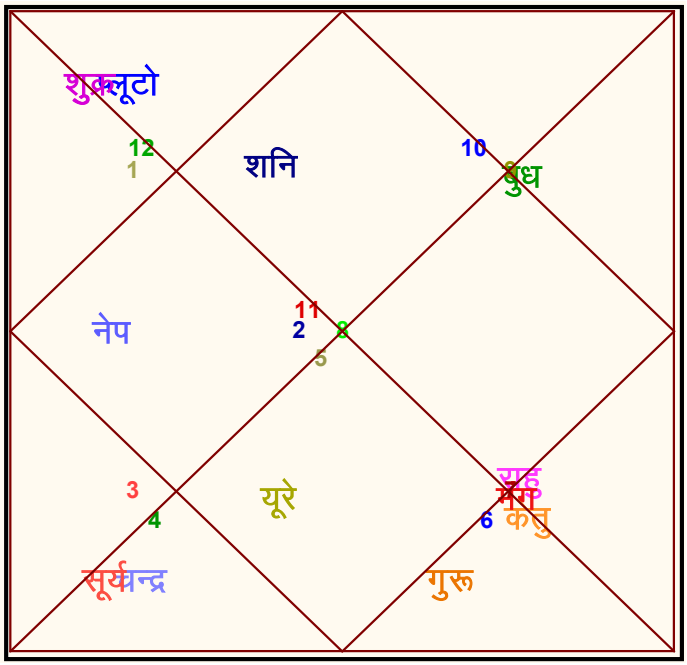

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

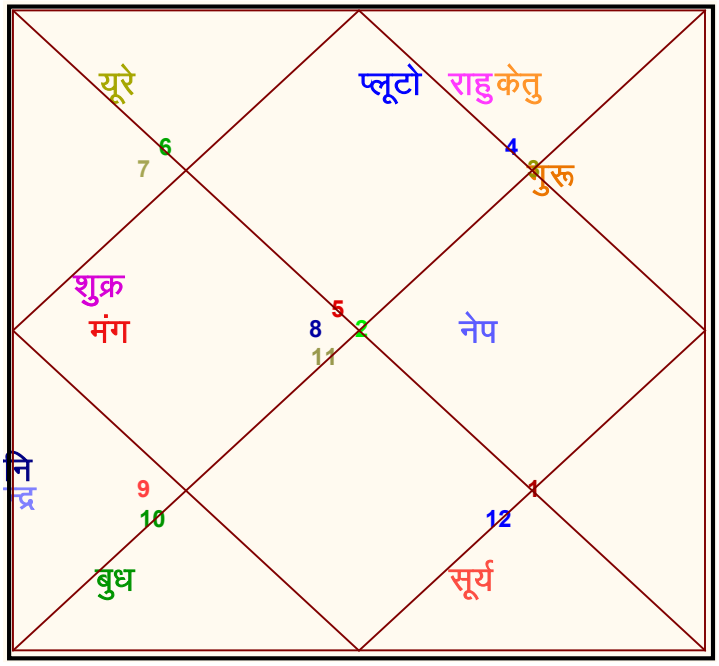

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्राकृतिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

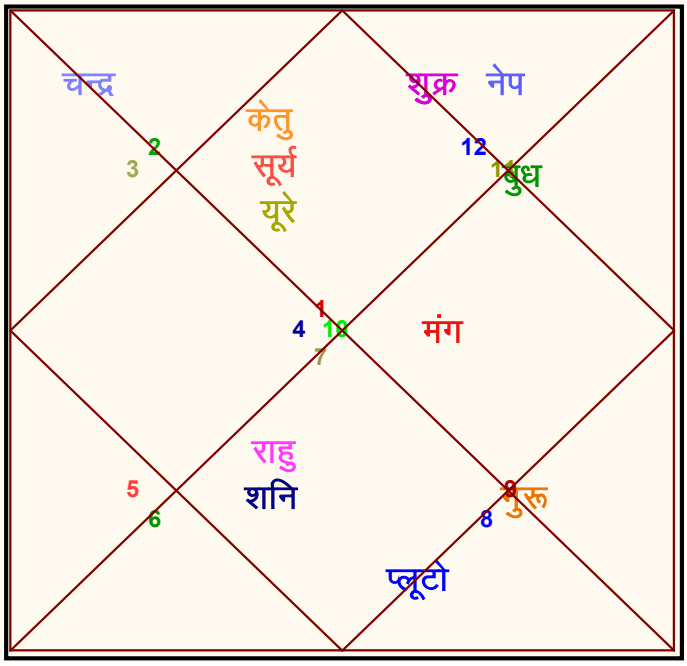

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षोडश वर्ग कुण्डली

पंचमांश कुण्डली (डी 5)

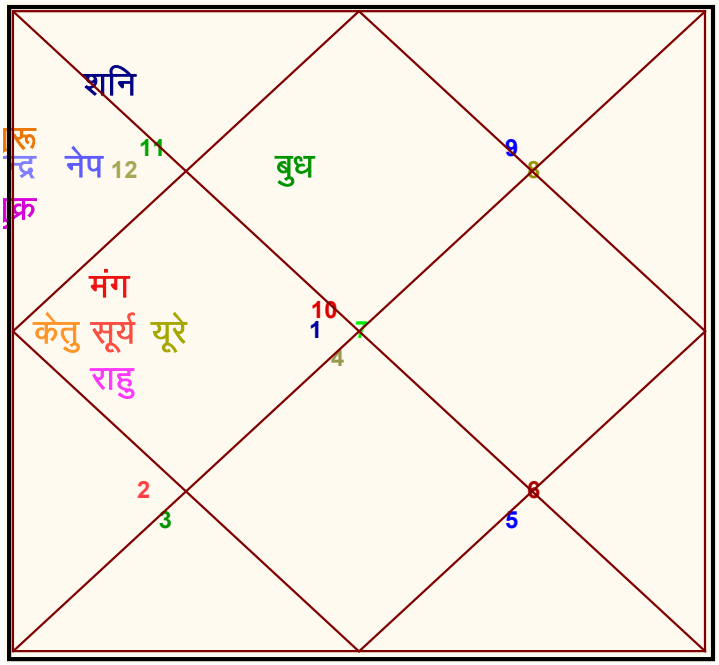

पंचांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 5 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 6 डिग्री में मापता है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। यह मुख्य रूप से जीवन के विभिन्न पहलुओं में किसी व्यक्ति की छिपी हुई प्रतिभा और क्षमता में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह उन ज्योतिषियों के लिए उपयोगी जानकारी हो सकती है जो लोगों को उनके विशेष कौशल और गुणों की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने में मार्गदर्शन करते हैं।

षष्टमांश कुण्डली (डी 6)

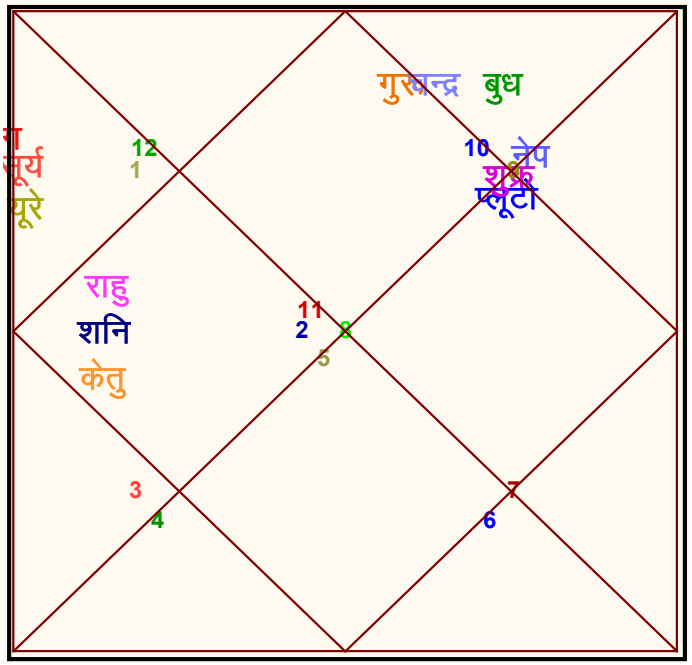

षष्टांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 6 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 5 डिग्री है। इस कुण्डली का पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। इसका प्राथमिक उद्देश्य किसी व्यक्ति की छिपी हुई शक्तियों और जीवन के कई हिस्सों में खामियों को प्रकट करना है। षष्टांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनकी क्षमता की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने के साथ–साथ समस्याओं पर काबू पाने में मार्गदर्शन करने में सहायता कर सकता है।

अष्टमांश कुण्डली (डी 8)

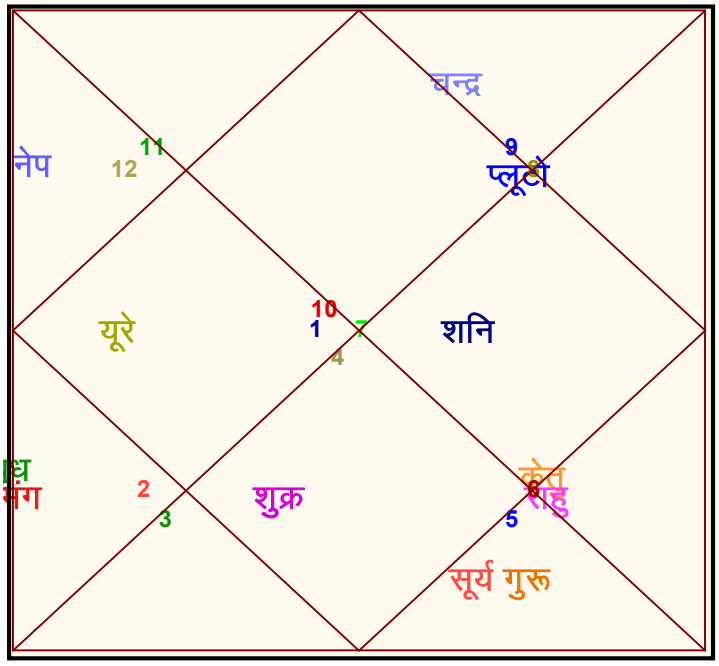

अष्टांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 8 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.75 डिग्री है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में शायद ही कभी उपयोग किया जाता है और वर्तमान अभ्यास में इसका बहुत कम उपयोग होता है। यह आमतौर पर किसी व्यक्ति की विशिष्ट विशेषताओं और उनके जीवन पथ से जुड़ी विशेषताओं का पता लगाने के लिए उपयोग किया जाता है। अष्टांश कुण्डली ज्योतिषियों को लोगों को उनके जीवन के कई पहलुओं को समझने और सुधारने में मदद करने के लिए अधिक जानकारी दे सकता है।

एकादशांश कुण्डली (डी 11)

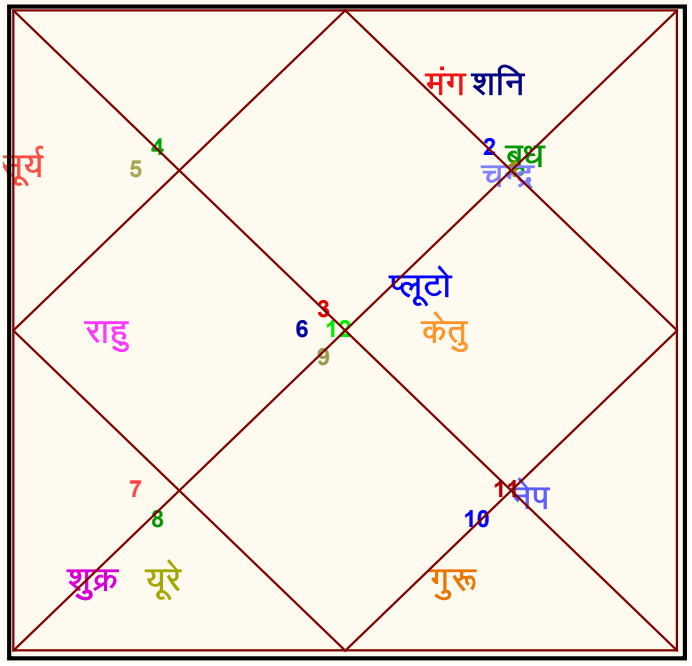

एकादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 11 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 2.73 डिग्री के आसपास फैला हुआ है। हांलाकि यह प्रायः पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में नियोजित नहीं होता है, यह वर्तमान अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। सामान्यतः इसका उपयोग किसी व्यक्ति की उपलब्धियों और जीवन के कई पहलुओं में सफलता, विशेष रूप से उनकी नौकरी और करियर में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। एकादशांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनके चुने हुए क्षेत्र में उनकी अधिकतम क्षमता तक पहुंचने में सहायता करने के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकता है।

षडबल और भावबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	17.42	15.66	37.77	38.38	04.31	35.33	16.07
सप्त वर्ग बल	135.00	93.75	157.50	131.25	110.63	110.63	65.63
युग्म अयुग्म बल	30.00	30.00	15.00	15.00	15.00	15.00	30.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	15.00	30.00	30.00	60.00
द्रेक्कन बल	15.00	00.00	15.00	15.00	00.00	00.00	00.00
स्थान बल	**257.42**	**199.41**	**255.27**	**214.63**	**159.94**	**190.96**	**171.69**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	156.01	149.93	265.90	130.08	96.93	143.58	178.85
दिग बल	**06.72**	**27.87**	**34.10**	**40.61**	**21.25**	**53.14**	**34.50**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	19.20	55.73	113.65	116.04	60.72	106.28	114.98
नतोन्नत बल	07.25	52.75	52.75	07.25	00.00	07.25	52.75
पक्ष बल	34.58	25.42	34.58	25.42	25.42	25.42	34.58
त्रिभाग बल	00.00	00.00	00.00	00.00	60.00	60.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00
मास बल	00.00	00.00	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	45.00	00.00	00.00	00.00	00.00
होरा बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	60.00
अयन बल	00.30	34.23	43.09	57.64	07.83	06.24	00.12
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**42.14**	**112.39**	**175.43**	**120.30**	**93.25**	**98.90**	**162.46**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	37.62	112.39	261.83	107.41	83.26	98.90	242.47
चेष्टा बल	**00.30**	**25.42**	**07.50**	**30.00**	**45.00**	**45.00**	**60.00**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	00.60	84.72	18.75	60.00	90.00	150.00	150.00
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**-31.39**	**-02.62**	**-10.34**	**-23.64**	**-17.60**	**-19.69**	**00.23**
कुल षड्बल	**335.18**	**413.90**	**479.09**	**407.62**	**336.13**	**411.17**	**437.45**
षड्बल (रूप में)	**5.59**	**6.90**	**7.98**	**6.79**	**5.60**	**6.85**	**7.29**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	85.94	114.97	159.70	97.05	86.19	124.60	145.82
तुलनात्मक स्थिति	**7**	**3**	**1**	**5**	**6**	**4**	**2**
इष्ट फल	**04.96**	**19.95**	**16.83**	**33.93**	**13.93**	**39.88**	**31.05**
कष्ट फल	**55.04**	**40.05**	**43.17**	**26.07**	**46.07**	**20.12**	**28.95**
दिप्ति बल	**100.00**	**25.42**	**40.81**	**26.59**	**15.23**	**52.01**	**58.02**

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं
भावाधिपति बल	407.62	411.17	479.09	336.13	437.45	437.45	336.13	479.09	411.17	407.62	413.90	335.18
भाव दिग्बल	60.00	50.00	20.00	00.00	50.00	10.00	30.00	40.00	50.00	30.00	10.00	40.00
भाव दृष्टिबल	-07.68	24.65	-21.96	-21.62	-15.55	-08.24	-23.57	22.35	-15.97	-11.73	-11.34	-03.46
भावबल योग	**459.94**	**485.82**	**477.13**	**314.51**	**471.90**	**439.21**	**342.56**	**541.44**	**445.20**	**425.89**	**412.56**	**371.73**
भावबल (रूप में)	**7.67**	**8.10**	**7.95**	**5.24**	**7.86**	**7.32**	**5.71**	**9.02**	**7.42**	**7.10**	**6.88**	**6.20**
तुलनात्मक स्थिति	**5**	**2**	**3**	**12**	**4**	**7**	**11**	**1**	**6**	**8**	**9**	**10**

सर्वाष्टकवर्ग (337)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39
♃ गुरू	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56
♂ मंगल	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39
☉ सूर्य	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48
♀ शुक्र	5	4	1	4	5	7	6	5	3	5	3	4	52
☿ बुध	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54
☽ चन्द्रमा	3	4	5	5	4	5	4	6	2	3	5	3	49
योग	27	21	29	34	24	32	31	35	25	26	31	22	337

ग्रहों के बल का मूल्यांकन

- ग्रहों के बल का मूल्यांकन
- घटनाओं की भविष्यवाणी
- अनुकूल समय की पहचान
- उपाचारीय ज्योतिष

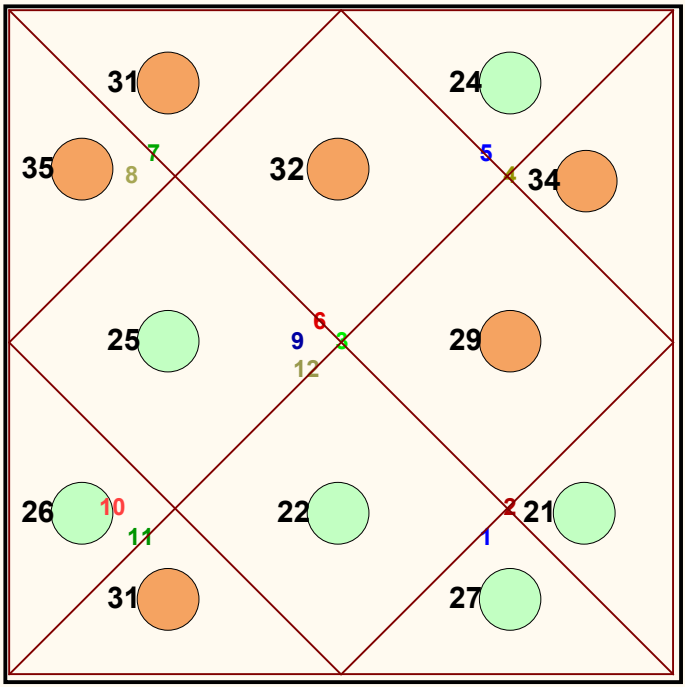

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

सर्वाष्टकवर्ग योग

दमरूक योग : आपकी जन्म कुण्डली के सर्वाष्टक वर्ग के मध्य भाग (पाँचवीं से आठवीं भाव राशि तक) में सबसे कम शुभ बिन्दु हैं, इस कारण आपकी कुण्ड़ली में दमरूक योग है। आप अपने जीवन के दूसरे चरण (लगभग 24 से 48 वर्ष) की अपेक्षा पहले चरण (24 वर्ष तक) और तीसरे चरण (लगभग 48 से 72 वर्ष) मे अधिक समृद्ध रहेंगे।

सुदर्शन चक्र

वैदिक ज्योतिष में सुदर्शन चक्र एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो किसी व्यक्ति के जीवन के तीन प्राथमिक पहलुओं, सूर्य (आत्मा), चंद्रमा (मन), और लग्न (शरीर) का प्रतिनिधित्व करने वाला एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह जन्म कुंडली के एकी.त विश्लेषण की अनुमति देता है, सटीक भविष्यवाणियों और व्यापक समझ में सहायता प्रदान करता है। यह तीन अलगअलग दृष्टिकोणों से गोचर का विश्लेषण करके घटनाओं के समय निर्धारण में भी मदद करता है। अंत में, यह समय अवधि की समग्र गुणवत्ता और किसी व्यक्ति के जीवन पर उनके प्रभावों को प्रकट करता है।

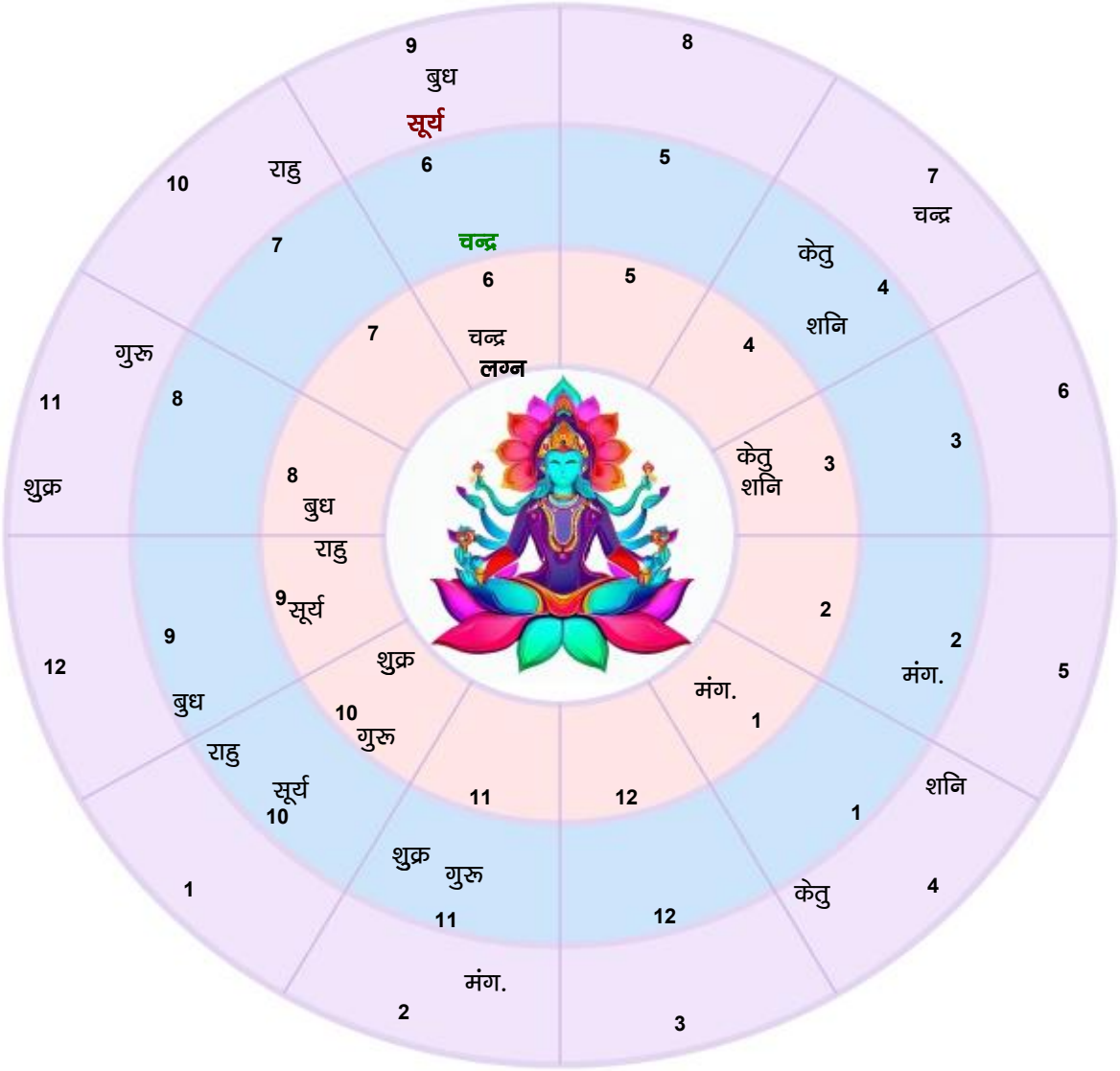

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़ेगें।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें। यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

विंशोत्तरी दशा (1)

Moon (5 y.5 m.26 d.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (023:29:36)

अयनांश

चन्द्रमा (10 वर्ष)

18/12/1973 To 14/06/1979

1st भाव स्वनक्षत्र विशेष	कन्या राशि हस्ता (2) नक्षत्र	सम संबंन्ध 11 भावपति
चन्द्रमा	-------	-------
मंगल	-------	-------
राहु	-------	-------
गुरू	-------	-------
शनि	14-04-1975	00.00
बुध	13-09-1976	01.32
केतु	14-04-1977	02.74
शुक्र	13-12-1978	03.32
सूर्य	14-06-1979	04.99

मंगल (7 वर्ष)

14/06/1979 To 14/06/1986

8th भाव स्वराशि विशेष	मेष राशि अश्वि. (2) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध 8 , 3 भावपति
मंगल	10-11-1979	05.49
राहु	28-11-1980	05.90
गुरू	04-11-1981	06.95
शनि	13-12-1982	07.88
बुध	10-12-1983	08.99
केतु	08-05-1984	09.98
शुक्र	08-07-1985	10.39
सूर्य	13-11-1985	11.55
चन्द्रमा	14-06-1986	11.90

राहु (18 वर्ष)

14/06/1986 To 13/06/2004

4th भाव वक्री विशेष	धनु राशि मूला (2) नक्षत्र	सम संबंन्ध भावपति
राहु	24-02-1989	12.49
गुरू	20-07-1991	15.19
शनि	26-05-1994	17.59
बुध	13-12-1996	20.44
केतु	31-12-1997	22.99
शुक्र	31-12-2000	24.04
सूर्य	25-11-2001	27.04
चन्द्रमा	26-05-2003	27.94
मंगल	13-06-2004	29.44

गुरू (16 वर्ष)

13/06/2004 To 13/06/2020

5th भाव नीच विशेष	मकर राशि श्रव. (3) नक्षत्र	सम संबंन्ध 4 , 7 भावपति
गुरू	01-08-2006	30.49
शनि	12-02-2009	32.62
बुध	20-05-2011	35.15
केतु	25-04-2012	37.42
शुक्र	25-12-2014	38.35
सूर्य	13-10-2015	41.02
चन्द्रमा	12-02-2017	41.82
मंगल	19-01-2018	43.15
राहु	13-06-2020	44.09

शनि (19 वर्ष)

13/06/2020 To 14/06/2039

10th भाव वक्री विशेष	मिथुन राशि अश्वि. (1) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध 5 , 6 भावपति
शनि	17-06-2023	46.49
बुध	24-02-2026	49.50
केतु	05-04-2027	52.19
शुक्र	05-06-2030	53.30
सूर्य	17-05-2031	56.46
चन्द्रमा	16-12-2032	57.41
मंगल	25-01-2034	59.00
राहु	01-12-2036	60.10
गुरू	14-06-2039	62.95

बुध (17 वर्ष)

14/06/2039 To 13/06/2056

3rd भाव स्वनक्षत्र विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	सम संबंन्ध 10 , 1 भावपति
बुध	10-11-2041	65.49
केतु	07-11-2042	67.90
शुक्र	07-09-2045	68.89
सूर्य	14-07-2046	71.72
चन्द्रमा	13-12-2047	72.57
मंगल	10-12-2048	73.99
राहु	29-06-2051	74.98
गुरू	04-10-2053	77.53
शनि	13-06-2056	79.80

विंशोत्तरी दशा (2)

केतु (7 वर्ष)

13/06/2056 To 14/06/2063

10th भाव	मिथुन राशि	मित्र संबंध
वक्री विशेष	मृग. (4) नक्षत्र	भावपति

केतु	10-11-2056	82.49
शुक्र	10-01-2058	82.90
सूर्य	17-05-2058	84.06
चन्द्रमा	16-12-2058	84.41
मंगल	14-05-2059	85.00
राहु	01-06-2060	85.40
गुरू	08-05-2061	86.45
शनि	17-06-2062	87.39
बुध	14-06-2063	88.50

शुक्र (20 वर्ष)

14/06/2063 To 14/06/2083

5th भाव	मकर राशि	सम संबंध
विशेष	श्रव. (1) नक्षत्र	9 , 2 भावपति

शुक्र	13-10-2066	89.49
सूर्य	13-10-2067	92.82
चन्द्रमा	14-06-2069	93.82
मंगल	14-08-2070	95.49
राहु	14-08-2073	96.65
गुरू	13-04-2076	99.65
शनि	14-06-2079	102.32
बुध	14-04-2082	105.49
केतु	14-06-2083	108.32

सूर्य (6 वर्ष)

14/06/2083 To 14/06/2089

4th भाव	धनु राशि	मित्र संबंध
विशेष	मूला (1) नक्षत्र	12 भावपति

सूर्य	01-10-2083	109.49
चन्द्रमा	01-04-2084	109.79
मंगल	07-08-2084	110.29
राहु	02-07-2085	110.64
गुरू	20-04-2086	111.54
शनि	02-04-2087	112.34
बुध	06-02-2088	113.29
केतु	13-06-2088	114.14
शुक्र	14-06-2089	114.49

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	शनि	13:06:2020 (15:28:46)	14:06:2039 (04:37:03)
अन्तर्रदशा	केतु	24:02:2026 (16:37:03)	05:04:2027 (05:37:03)
प्रत्यन्तर्रदशा	केतु	24:02:2026 (16:37:03)	20:03:2026 (06:58:33)
सूक्ष्मदशा	सूर्य	02:03:2026 (00:02:53)	03:03:2026 (04:21:58)
प्राणदशा	बुध	02:03:2026 (17:58:58)	02:03:2026 (21:59:40)

नोट : – सभी दिए गये समय दशा के समाप्ति काल के हैं।

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

चन्द्रमा दशा

(18:12:1973 To 14:06:1979)

चन्द्रमा अन्तर

चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--

मंगल अन्तर

मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--

राहु अन्तर

राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--

गुरू अन्तर

गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--

शनि अन्तर

(18:12:1973 To 14:04:1975)

शनि	-------	--
बुध	05-03-1974	00.00
केतु	08-04-1974	00.21
शुक्र	13-07-1974	00.31
सूर्य	11-08-1974	00.57
चन्द्रमा	28-09-1974	00.65
मंगल	01-11-1974	00.78
राहु	27-01-1975	00.87
गुरू	14-04-1975	01.11

बुध अन्तर

(14:04:1975 To 13:09:1976)

बुध	26-06-1975	01.32
केतु	26-07-1975	01.52
शुक्र	20-10-1975	01.60
सूर्य	15-11-1975	01.84
चन्द्रमा	28-12-1975	01.91
मंगल	28-01-1976	02.03
राहु	14-04-1976	02.11
गुरू	23-06-1976	02.32
शनि	13-09-1976	02.51

केतु अन्तर

(13:09:1976 To 14:04:1977)

केतु	25-09-1976	02.74
शुक्र	31-10-1976	02.77
सूर्य	10-11-1976	02.87
चन्द्रमा	28-11-1976	02.90
मंगल	11-12-1976	02.95
राहु	12-01-1977	02.98
गुरू	09-02-1977	03.07
शनि	15-03-1977	03.15
बुध	14-04-1977	03.24

शुक्र अन्तर

(14:04:1977 To 13:12:1978)

शुक्र	24-07-1977	03.32
सूर्य	24-08-1977	03.60
चन्द्रमा	13-10-1977	03.68
मंगल	18-11-1977	03.82
राहु	17-02-1978	03.92
गुरू	09-05-1978	04.17
शनि	14-08-1978	04.39
बुध	08-11-1978	04.65
केतु	13-12-1978	04.89

सूर्य अन्तर

(13:12:1978 To 14:06:1979)

सूर्य	22-12-1978	04.99
चन्द्रमा	07-01-1979	05.01
मंगल	17-01-1979	05.05
राहु	14-02-1979	05.08
गुरू	10-03-1979	05.16
शनि	08-04-1979	05.23
बुध	04-05-1979	05.30
केतु	14-05-1979	05.38
शुक्र	14-06-1979	05.40

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(14:06:1979 To 14:06:1986)

मंगल अन्तर

(14:06:1979 To 10:11:1979)

मंगल	22-06-1979	05.49
राहु	15-07-1979	05.51
गुरू	04-08-1979	05.57
शनि	27-08-1979	05.63
बुध	17-09-1979	05.69
केतु	26-09-1979	05.75
शुक्र	21-10-1979	05.77
सूर्य	28-10-1979	05.84
चन्द्रमा	10-11-1979	05.86

राहु अन्तर

(10:11:1979 To 28:11:1980)

राहु	06-01-1980	05.90
गुरू	26-02-1980	06.05
शनि	27-04-1980	06.19
बुध	21-06-1980	06.36
केतु	13-07-1980	06.51
शुक्र	15-09-1980	06.57
सूर्य	04-10-1980	06.75
चन्द्रमा	05-11-1980	06.80
मंगल	28-11-1980	06.89

गुरू अन्तर

(28:11:1980 To 04:11:1981)

गुरू	12-01-1981	06.95
शनि	07-03-1981	07.07
बुध	25-04-1981	07.22
केतु	14-05-1981	07.35
शुक्र	10-07-1981	07.41
सूर्य	27-07-1981	07.56
चन्द्रमा	25-08-1981	07.61
मंगल	14-09-1981	07.69
राहु	04-11-1981	07.74

शनि अन्तर

(04:11:1981 To 13:12:1982)

शनि	07-01-1982	07.88
बुध	05-03-1982	08.06
केतु	29-03-1982	08.21
शुक्र	04-06-1982	08.28
सूर्य	24-06-1982	08.46
चन्द्रमा	28-07-1982	08.52
मंगल	21-08-1982	08.61
राहु	20-10-1982	08.67
गुरू	13-12-1982	08.84

बुध अन्तर

(13:12:1982 To 10:12:1983)

बुध	02-02-1983	08.99
केतु	24-02-1983	09.13
शुक्र	25-04-1983	09.19
सूर्य	13-05-1983	09.35
चन्द्रमा	12-06-1983	09.40
मंगल	03-07-1983	09.48
राहु	27-08-1983	09.54
गुरू	14-10-1983	09.69
शनि	10-12-1983	09.82

केतु अन्तर

(10:12:1983 To 08:05:1984)

केतु	19-12-1983	09.98
शुक्र	13-01-1984	10.00
सूर्य	20-01-1984	10.07
चन्द्रमा	02-02-1984	10.09
मंगल	10-02-1984	10.13
राहु	04-03-1984	10.15
गुरू	24-03-1984	10.21
शनि	16-04-1984	10.27
बुध	08-05-1984	10.33

शुक्र अन्तर

(08:05:1984 To 08:07:1985)

शुक्र	18-07-1984	10.39
सूर्य	08-08-1984	10.58
चन्द्रमा	13-09-1984	10.64
मंगल	08-10-1984	10.74
राहु	11-12-1984	10.81
गुरू	05-02-1985	10.98
शनि	14-04-1985	11.14
बुध	13-06-1985	11.32
केतु	08-07-1985	11.49

सूर्य अन्तर

(08:07:1985 To 13:11:1985)

सूर्य	14-07-1985	11.55
चन्द्रमा	25-07-1985	11.57
मंगल	02-08-1985	11.60
राहु	21-08-1985	11.62
गुरू	07-09-1985	11.67
शनि	27-09-1985	11.72
बुध	15-10-1985	11.78
केतु	22-10-1985	11.83
शुक्र	13-11-1985	11.85

चन्द्रमा अन्तर

(13:11:1985 To 14:06:1986)

चन्द्रमा	01-12-1985	11.90
मंगल	13-12-1985	11.95
राहु	14-01-1986	11.99
गुरू	11-02-1986	12.07
शनि	17-03-1986	12.15
बुध	16-04-1986	12.24
केतु	29-04-1986	12.33
शुक्र	03-06-1986	12.36
सूर्य	14-06-1986	12.46

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(14:06:1986 To 13:06:2004)

राहु अन्तर

(14:06:1986 To 24:02:1989)

राहु	09-11-1986	12.49
गुरू	20-03-1987	12.89
शनि	23-08-1987	13.25
बुध	10-01-1988	13.68
केतु	07-03-1988	14.06
शुक्र	19-08-1988	14.22
सूर्य	07-10-1988	14.67
चन्द्रमा	29-12-1988	14.81
मंगल	24-02-1989	15.03

गुरू अन्तर

(24:02:1989 To 20:07:1991)

गुरू	21-06-1989	15.19
शनि	07-11-1989	15.51
बुध	11-03-1990	15.89
केतु	01-05-1990	16.23
शुक्र	24-09-1990	16.37
सूर्य	07-11-1990	16.77
चन्द्रमा	19-01-1991	16.89
मंगल	11-03-1991	17.09
राहु	20-07-1991	17.23

शनि अन्तर

(20:07:1991 To 26:05:1994)

शनि	01-01-1992	17.59
बुध	28-05-1992	18.04
केतु	28-07-1992	18.44
शुक्र	17-01-1993	18.61
सूर्य	10-03-1993	19.08
चन्द्रमा	05-06-1993	19.23
मंगल	05-08-1993	19.46
राहु	08-01-1994	19.63
गुरू	26-05-1994	20.06

बुध अन्तर

(26:05:1994 To 13:12:1996)

बुध	05-10-1994	20.44
केतु	29-11-1994	20.80
शुक्र	03-05-1995	20.95
सूर्य	18-06-1995	21.37
चन्द्रमा	04-09-1995	21.50
मंगल	28-10-1995	21.71
राहु	16-03-1996	21.86
गुरू	18-07-1996	22.24
शनि	13-12-1996	22.58

केतु अन्तर

(13:12:1996 To 31:12:1997)

केतु	05-01-1997	22.99
शुक्र	09-03-1997	23.05
सूर्य	29-03-1997	23.22
चन्द्रमा	30-04-1997	23.28
मंगल	22-05-1997	23.36
राहु	18-07-1997	23.43
गुरू	07-09-1997	23.58
शनि	07-11-1997	23.72
बुध	31-12-1997	23.89

शुक्र अन्तर

(31:12:1997 To 31:12:2000)

शुक्र	02-07-1998	24.04
सूर्य	26-08-1998	24.54
चन्द्रमा	25-11-1998	24.69
मंगल	28-01-1999	24.94
राहु	11-07-1999	25.11
गुरू	04-12-1999	25.56
शनि	26-05-2000	25.96
बुध	28-10-2000	26.44
केतु	31-12-2000	26.86

सूर्य अन्तर

(31:12:2000 To 25:11:2001)

सूर्य	17-01-2001	27.04
चन्द्रमा	13-02-2001	27.08
मंगल	04-03-2001	27.16
राहु	23-04-2001	27.21
गुरू	05-06-2001	27.35
शनि	27-07-2001	27.47
बुध	12-09-2001	27.61
केतु	01-10-2001	27.74
शुक्र	25-11-2001	27.79

चन्द्रमा अन्तर

(25:11:2001 To 26:05:2003)

चन्द्रमा	10-01-2002	27.94
मंगल	11-02-2002	28.06
राहु	04-05-2002	28.15
गुरू	16-07-2002	28.38
शनि	10-10-2002	28.58
बुध	27-12-2002	28.81
केतु	28-01-2003	29.03
शुक्र	29-04-2003	29.11
सूर्य	26-05-2003	29.36

मंगल अन्तर

(26:05:2003 To 13:06:2004)

मंगल	18-06-2003	29.44
राहु	14-08-2003	29.50
गुरू	04-10-2003	29.66
शनि	04-12-2003	29.80
बुध	27-01-2004	29.96
केतु	19-02-2004	30.11
शुक्र	23-04-2004	30.17
सूर्य	12-05-2004	30.35
चन्द्रमा	13-06-2004	30.40

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा
(13:06:2004 To 13:06:2020)

गुरू अन्तर (13:06:2004 To 01:08:2006)

गुरू	25-09-2004	30.49
शनि	27-01-2005	30.77
बुध	17-05-2005	31.11
केतु	02-07-2005	31.41
शुक्र	08-11-2005	31.54
सूर्य	17-12-2005	31.89
चन्द्रमा	20-02-2006	32.00
मंगल	07-04-2006	32.18
राहु	01-08-2006	32.30

शनि अन्तर (01:08:2006 To 12:02:2009)

शनि	26-12-2006	32.62
बुध	06-05-2007	33.02
केतु	29-06-2007	33.38
शुक्र	30-11-2007	33.53
सूर्य	15-01-2008	33.95
चन्द्रमा	01-04-2008	34.08
मंगल	25-05-2008	34.29
राहु	12-10-2008	34.44
गुरू	12-02-2009	34.82

बुध अन्तर (12:02:2009 To 20:05:2011)

बुध	09-06-2009	35.15
केतु	27-07-2009	35.48
शुक्र	12-12-2009	35.61
सूर्य	23-01-2010	35.99
चन्द्रमा	02-04-2010	36.10
मंगल	20-05-2010	36.29
राहु	21-09-2010	36.42
गुरू	09-01-2011	36.76
शनि	20-05-2011	37.06

केतु अन्तर (20:05:2011 To 25:04:2012)

केतु	09-06-2011	37.42
शुक्र	05-08-2011	37.48
सूर्य	22-08-2011	37.63
चन्द्रमा	19-09-2011	37.68
मंगल	09-10-2011	37.76
राहु	29-11-2011	37.81
गुरू	14-01-2012	37.95
शनि	08-03-2012	38.07
बुध	25-04-2012	38.22

शुक्र अन्तर (25:04:2012 To 25:12:2014)

शुक्र	05-10-2012	38.35
सूर्य	23-11-2012	38.80
चन्द्रमा	12-02-2013	38.93
मंगल	10-04-2013	39.15
राहु	03-09-2013	39.31
गुरू	11-01-2014	39.71
शनि	14-06-2014	40.07
बुध	30-10-2014	40.49
केतु	25-12-2014	40.87

सूर्य अन्तर (25:12:2014 To 13:10:2015)

सूर्य	09-01-2015	41.02
चन्द्रमा	02-02-2015	41.06
मंगल	19-02-2015	41.13
राहु	04-04-2015	41.17
गुरू	13-05-2015	41.29
शनि	28-06-2015	41.40
बुध	09-08-2015	41.53
केतु	26-08-2015	41.64
शुक्र	13-10-2015	41.69

चन्द्रमा अन्तर (13:10:2015 To 12:02:2017)

चन्द्रमा	23-11-2015	41.82
मंगल	21-12-2015	41.93
राहु	03-03-2016	42.01
गुरू	08-05-2016	42.21
शनि	24-07-2016	42.39
बुध	01-10-2016	42.60
केतु	29-10-2016	42.79
शुक्र	19-01-2017	42.87
सूर्य	12-02-2017	43.09

मंगल अन्तर (12:02:2017 To 19:01:2018)

मंगल	04-03-2017	43.15
राहु	24-04-2017	43.21
गुरू	08-06-2017	43.35
शनि	01-08-2017	43.47
बुध	19-09-2017	43.62
केतु	08-10-2017	43.75
शुक्र	04-12-2017	43.81
सूर्य	21-12-2017	43.96
चन्द्रमा	19-01-2018	44.01

राहु अन्तर (19:01:2018 To 13:06:2020)

राहु	30-05-2018	44.09
गुरू	24-09-2018	44.45
शनि	10-02-2019	44.77
बुध	14-06-2019	45.15
केतु	04-08-2019	45.49
शुक्र	28-12-2019	45.63
सूर्य	10-02-2020	46.03
चन्द्रमा	23-04-2020	46.15
मंगल	13-06-2020	46.35

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(13:06:2020 To 14:06:2039)

शनि अन्तर

(13:06:2020 To 17:06:2023)		
शनि	04-12-2020	46.49
बुध	09-05-2021	46.96
केतु	12-07-2021	47.39
शुक्र	11-01-2022	47.57
सूर्य	07-03-2022	48.07
चन्द्रमा	07-06-2022	48.22
मंगल	10-08-2022	48.47
राहु	21-01-2023	48.64
गुरू	17-06-2023	49.10

बुध अन्तर

(17:06:2023 To 24:02:2026)		
बुध	03-11-2023	49.50
केतु	30-12-2023	49.88
शुक्र	11-06-2024	50.03
सूर्य	31-07-2024	50.48
चन्द्रमा	21-10-2024	50.62
मंगल	17-12-2024	50.84
राहु	14-05-2025	51.00
गुरू	22-09-2025	51.40
शनि	24-02-2026	51.76

केतु अन्तर

(24:02:2026 To 05:04:2027)		
केतु	20-03-2026	52.19
शुक्र	26-05-2026	52.25
सूर्य	15-06-2026	52.44
चन्द्रमा	19-07-2026	52.49
मंगल	12-08-2026	52.59
राहु	11-10-2026	52.65
गुरू	04-12-2026	52.82
शनि	06-02-2027	52.96
बुध	05-04-2027	53.14

शुक्र अन्तर

(05:04:2027 To 05:06:2030)		
शुक्र	14-10-2027	53.30
सूर्य	11-12-2027	53.82
चन्द्रमा	17-03-2028	53.98
मंगल	23-05-2028	54.25
राहु	13-11-2028	54.43
गुरू	16-04-2029	54.91
शनि	16-10-2029	55.33
बुध	29-03-2030	55.83
केतु	05-06-2030	56.28

सूर्य अन्तर

(05:06:2030 To 17:05:2031)		
सूर्य	22-06-2030	56.46
चन्द्रमा	21-07-2030	56.51
मंगल	10-08-2030	56.59
राहु	01-10-2030	56.65
गुरू	16-11-2030	56.79
शनि	10-01-2031	56.91
बुध	28-02-2031	57.06
केतु	21-03-2031	57.20
शुक्र	17-05-2031	57.25

चन्द्रमा अन्तर

(17:05:2031 To 16:12:2032)		
चन्द्रमा	04-07-2031	57.41
मंगल	07-08-2031	57.54
राहु	02-11-2031	57.64
गुरू	18-01-2032	57.87
शनि	19-04-2032	58.09
बुध	10-07-2032	58.34
केतु	13-08-2032	58.56
शुक्र	17-11-2032	58.65
सूर्य	16-12-2032	58.92

मंगल अन्तर

(16:12:2032 To 25:01:2034)		
मंगल	09-01-2033	59.00
राहु	11-03-2033	59.06
गुरू	03-05-2033	59.23
शनि	07-07-2033	59.38
बुध	02-09-2033	59.55
केतु	25-09-2033	59.71
शुक्र	02-12-2033	59.77
सूर्य	22-12-2033	59.96
चन्द्रमा	25-01-2034	60.01

राहु अन्तर

(25:01:2034 To 01:12:2036)		
राहु	30-06-2034	60.10
गुरू	16-11-2034	60.53
शनि	29-04-2035	60.91
बुध	24-09-2035	61.36
केतु	23-11-2035	61.77
शुक्र	15-05-2036	61.93
सूर्य	06-07-2036	62.41
चन्द्रमा	01-10-2036	62.55
मंगल	01-12-2036	62.79

गुरू अन्तर

(01:12:2036 To 14:06:2039)		
गुरू	03-04-2037	62.95
शनि	28-08-2037	63.29
बुध	06-01-2038	63.69
केतु	01-03-2038	64.05
शुक्र	02-08-2038	64.20
सूर्य	17-09-2038	64.62
चन्द्रमा	03-12-2038	64.75
मंगल	26-01-2039	64.96
राहु	14-06-2039	65.11

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(14:06:2039 To 13:06:2056)

बुध अन्तर

(14:06:2039 To 10:11:2041)

बुध	16-10-2039	65.49
केतु	07-12-2039	65.83
शुक्र	01-05-2040	65.97
सूर्य	14-06-2040	66.37
चन्द्रमा	27-08-2040	66.49
मंगल	17-10-2040	66.69
राहु	26-02-2041	66.83
गुरू	24-06-2041	67.19
शनि	10-11-2041	67.52

केतु अन्तर

(10:11:2041 To 07:11:2042)

केतु	01-12-2041	67.90
शुक्र	30-01-2042	67.95
सूर्य	17-02-2042	68.12
चन्द्रमा	19-03-2042	68.17
मंगल	10-04-2042	68.25
राहु	03-06-2042	68.31
गुरू	21-07-2042	68.46
शनि	16-09-2042	68.59
बुध	07-11-2042	68.75

शुक्र अन्तर

(07:11:2042 To 07:09:2045)

शुक्र	28-04-2043	68.89
सूर्य	19-06-2043	69.36
चन्द्रमा	13-09-2043	69.50
मंगल	12-11-2043	69.74
राहु	16-04-2044	69.90
गुरू	01-09-2044	70.33
शनि	12-02-2045	70.71
बुध	09-07-2045	71.15
केतु	07-09-2045	71.56

सूर्य अन्तर

(07:09:2045 To 14:07:2046)

सूर्य	22-09-2045	71.72
चन्द्रमा	18-10-2045	71.76
मंगल	05-11-2045	71.83
राहु	22-12-2045	71.88
गुरू	01-02-2046	72.01
शनि	22-03-2046	72.13
बुध	05-05-2046	72.26
केतु	23-05-2046	72.38
शुक्र	14-07-2046	72.43

चन्द्रमा अन्तर

(14:07:2046 To 13:12:2047)

चन्द्रमा	26-08-2046	72.57
मंगल	25-09-2046	72.69
राहु	12-12-2046	72.77
गुरू	19-02-2047	72.98
शनि	12-05-2047	73.17
बुध	24-07-2047	73.40
केतु	23-08-2047	73.60
शुक्र	17-11-2047	73.68
सूर्य	13-12-2047	73.92

मंगल अन्तर

(13:12:2047 To 10:12:2048)

मंगल	03-01-2048	73.99
राहु	27-02-2048	74.05
गुरू	15-04-2048	74.19
शनि	12-06-2048	74.33
बुध	02-08-2048	74.48
केतु	23-08-2048	74.62
शुक्र	23-10-2048	74.68
सूर्य	10-11-2048	74.85
चन्द्रमा	10-12-2048	74.90

राहु अन्तर

(10:12:2048 To 29:06:2051)

राहु	29-04-2049	74.98
गुरू	31-08-2049	75.36
शनि	25-01-2050	75.70
बुध	06-06-2050	76.11
केतु	30-07-2050	76.47
शुक्र	02-01-2051	76.62
सूर्य	17-02-2051	77.04
चन्द्रमा	06-05-2051	77.17
मंगल	29-06-2051	77.38

गुरू अन्तर

(29:06:2051 To 04:10:2053)

गुरू	17-10-2051	77.53
शनि	25-02-2052	77.83
बुध	22-06-2052	78.19
केतु	09-08-2052	78.51
शुक्र	26-12-2052	78.64
सूर्य	05-02-2053	79.02
चन्द्रमा	15-04-2053	79.14
मंगल	02-06-2053	79.32
राहु	04-10-2053	79.46

शनि अन्तर

(04:10:2053 To 13:06:2056)

शनि	09-03-2054	79.80
बुध	26-07-2054	80.22
केतु	21-09-2054	80.60
शुक्र	04-03-2055	80.76
सूर्य	22-04-2055	81.21
चन्द्रमा	13-07-2055	81.34
मंगल	08-09-2055	81.57
राहु	03-02-2056	81.73
गुरू	13-06-2056	82.13

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(13:06:2056 To 14:06:2063)

केतु अन्तर

(13:06:2056 To 10:11:2056)

केतु	22-06-2056	82.49
शुक्र	17-07-2056	82.51
सूर्य	24-07-2056	82.58
चन्द्रमा	06-08-2056	82.60
मंगल	14-08-2056	82.63
राहु	06-09-2056	82.66
गुरू	26-09-2056	82.72
शनि	19-10-2056	82.77
बुध	10-11-2056	82.84

शुक्र अन्तर

(10:11:2056 To 10:01:2058)

शुक्र	20-01-2057	82.90
सूर्य	10-02-2057	83.09
चन्द्रमा	17-03-2057	83.15
मंगल	11-04-2057	83.25
राहु	14-06-2057	83.31
गुरू	10-08-2057	83.49
शनि	16-10-2057	83.64
बुध	16-12-2057	83.83
केतु	10-01-2058	83.99

सूर्य अन्तर

(10:01:2058 To 17:05:2058)

सूर्य	16-01-2058	84.06
चन्द्रमा	27-01-2058	84.08
मंगल	03-02-2058	84.11
राहु	22-02-2058	84.13
गुरू	11-03-2058	84.18
शनि	31-03-2058	84.23
बुध	19-04-2058	84.28
केतु	26-04-2058	84.33
शुक्र	17-05-2058	84.35

चन्द्रमा अन्तर

(17:05:2058 To 16:12:2058)

चन्द्रमा	04-06-2058	84.41
मंगल	16-06-2058	84.46
राहु	18-07-2058	84.50
गुरू	16-08-2058	84.58
शनि	19-09-2058	84.66
बुध	19-10-2058	84.75
केतु	31-10-2058	84.84
शुक्र	06-12-2058	84.87
सूर्य	16-12-2058	84.97

मंगल अन्तर

(16:12:2058 To 14:05:2059)

मंगल	25-12-2058	85.00
राहु	16-01-2059	85.02
गुरू	05-02-2059	85.08
शनि	01-03-2059	85.14
बुध	22-03-2059	85.20
केतु	31-03-2059	85.26
शुक्र	24-04-2059	85.28
सूर्य	02-05-2059	85.35
चन्द्रमा	14-05-2059	85.37

राहु अन्तर

(14:05:2059 To 01:06:2060)

राहु	11-07-2059	85.40
गुरू	31-08-2059	85.56
शनि	31-10-2059	85.70
बुध	24-12-2059	85.87
केतु	15-01-2060	86.02
शुक्र	19-03-2060	86.08
सूर्य	08-04-2060	86.25
चन्द्रमा	10-05-2060	86.31
मंगल	01-06-2060	86.39

गुरू अन्तर

(01:06:2060 To 08:05:2061)

गुरू	16-07-2060	86.45
शनि	09-09-2060	86.58
बुध	27-10-2060	86.73
केतु	16-11-2060	86.86
शुक्र	12-01-2061	86.91
सूर्य	29-01-2061	87.07
चन्द्रमा	26-02-2061	87.12
मंगल	18-03-2061	87.19
राहु	08-05-2061	87.25

शनि अन्तर

(08:05:2061 To 17:06:2062)

शनि	11-07-2061	87.39
बुध	07-09-2061	87.56
केतु	30-09-2061	87.72
शुक्र	07-12-2061	87.79
सूर्य	27-12-2061	87.97
चन्द्रमा	30-01-2062	88.03
मंगल	22-02-2062	88.12
राहु	24-04-2062	88.18
गुरू	17-06-2062	88.35

बुध अन्तर

(17:06:2062 To 14:06:2063)

बुध	07-08-2062	88.50
केतु	28-08-2062	88.64
शुक्र	27-10-2062	88.69
सूर्य	15-11-2062	88.86
चन्द्रमा	15-12-2062	88.91
मंगल	05-01-2063	88.99
राहु	28-02-2063	89.05
गुरू	17-04-2063	89.20
शनि	14-06-2063	89.33

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(14:06:2063 To 14:06:2083)

शुक्र अन्तर

(14:06:2063 To 13:10:2066)

शुक्र	02-01-2064	89.49
सूर्य	03-03-2064	90.04
चन्द्रमा	13-06-2064	90.21
मंगल	23-08-2064	90.49
राहु	22-02-2065	90.68
गुरू	03-08-2065	91.18
शनि	12-02-2066	91.63
बुध	03-08-2066	92.15
केतु	13-10-2066	92.63

सूर्य अन्तर

(13:10:2066 To 13:10:2067)

सूर्य	01-11-2066	92.82
चन्द्रमा	01-12-2066	92.87
मंगल	22-12-2066	92.95
राहु	15-02-2067	93.01
गुरू	05-04-2067	93.16
शनि	02-06-2067	93.30
बुध	23-07-2067	93.45
केतु	14-08-2067	93.60
शुक्र	13-10-2067	93.65

चन्द्रमा अन्तर

(13:10:2067 To 14:06:2069)

चन्द्रमा	03-12-2067	93.82
मंगल	08-01-2068	93.96
राहु	08-04-2068	94.06
गुरू	28-06-2068	94.31
शनि	03-10-2068	94.53
बुध	28-12-2068	94.79
केतु	02-02-2069	95.03
शुक्र	14-05-2069	95.13
सूर्य	14-06-2069	95.40

मंगल अन्तर

(14:06:2069 To 14:08:2070)

मंगल	09-07-2069	95.49
राहु	10-09-2069	95.56
गुरू	06-11-2069	95.73
शनि	13-01-2070	95.89
बुध	14-03-2070	96.07
केतु	08-04-2070	96.24
शुक्र	18-06-2070	96.30
सूर्य	09-07-2070	96.50
चन्द्रमा	14-08-2070	96.56

राहु अन्तर

(14:08:2070 To 14:08:2073)

राहु	25-01-2071	96.65
गुरू	20-06-2071	97.10
शनि	10-12-2071	97.50
बुध	14-05-2072	97.98
केतु	17-07-2072	98.40
शुक्र	16-01-2073	98.58
सूर्य	11-03-2073	99.08
चन्द्रमा	11-06-2073	99.23
मंगल	14-08-2073	99.48

गुरू अन्तर

(14:08:2073 To 13:04:2076)

गुरू	21-12-2073	99.65
शनि	24-05-2074	100.01
बुध	09-10-2074	100.43
केतु	05-12-2074	100.81
शुक्र	16-05-2075	100.97
सूर्य	04-07-2075	101.41
चन्द्रमा	23-09-2075	101.54
मंगल	19-11-2075	101.77
राहु	13-04-2076	101.92

शनि अन्तर

(13:04:2076 To 14:06:2079)

शनि	14-10-2076	102.32
बुध	27-03-2077	102.82
केतु	02-06-2077	103.27
शुक्र	12-12-2077	103.46
सूर्य	07-02-2078	103.98
चन्द्रमा	15-05-2078	104.14
मंगल	21-07-2078	104.41
राहु	11-01-2079	104.59
गुरू	14-06-2079	105.07

बुध अन्तर

(14:06:2079 To 14:04:2082)

बुध	07-11-2079	105.49
केतु	07-01-2080	105.89
शुक्र	27-06-2080	106.05
सूर्य	18-08-2080	106.53
चन्द्रमा	13-11-2080	106.67
मंगल	12-01-2081	106.90
राहु	16-06-2081	107.07
गुरू	01-11-2081	107.49
शनि	14-04-2082	107.87

केतु अन्तर

(14:04:2082 To 14:06:2083)

केतु	09-05-2082	108.32
शुक्र	19-07-2082	108.39
सूर्य	09-08-2082	108.58
चन्द्रमा	13-09-2082	108.64
मंगल	08-10-2082	108.74
राहु	11-12-2082	108.81
गुरू	06-02-2083	108.98
शनि	14-04-2083	109.14
बुध	14-06-2083	109.32

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(14:06:2083 To 14:06:2089)

सूर्य अन्तर

(14:06:2083 To 01:10:2083)

सूर्य	19-06-2083	109.49
चन्द्रमा	28-06-2083	109.50
मंगल	05-07-2083	109.53
राहु	21-07-2083	109.55
गुरू	05-08-2083	109.59
शनि	22-08-2083	109.63
बुध	07-09-2083	109.68
केतु	13-09-2083	109.72
शुक्र	01-10-2083	109.74

चन्द्रमा अन्तर

(01:10:2083 To 01:04:2084)

चन्द्रमा	16-10-2083	109.79
मंगल	27-10-2083	109.83
राहु	23-11-2083	109.86
गुरू	18-12-2083	109.93
शनि	16-01-2084	110.00
बुध	11-02-2084	110.08
केतु	21-02-2084	110.15
शुक्र	23-03-2084	110.18
सूर्य	01-04-2084	110.26

मंगल अन्तर

(01:04:2084 To 07:08:2084)

मंगल	08-04-2084	110.29
राहु	28-04-2084	110.31
गुरू	15-05-2084	110.36
शनि	04-06-2084	110.41
बुध	22-06-2084	110.46
केतु	30-06-2084	110.51
शुक्र	21-07-2084	110.53
सूर्य	27-07-2084	110.59
चन्द्रमा	07-08-2084	110.61

राहु अन्तर

(07:08:2084 To 02:07:2085)

राहु	25-09-2084	110.64
गुरू	08-11-2084	110.77
शनि	31-12-2084	110.89
बुध	15-02-2085	111.04
केतु	06-03-2085	111.16
शुक्र	30-04-2085	111.22
सूर्य	16-05-2085	111.37
चन्द्रमा	13-06-2085	111.41
मंगल	02-07-2085	111.49

गुरू अन्तर

(02:07:2085 To 20:04:2086)

गुरू	10-08-2085	111.54
शनि	25-09-2085	111.64
बुध	05-11-2085	111.77
केतु	23-11-2085	111.88
शुक्र	10-01-2086	111.93
सूर्य	25-01-2086	112.06
चन्द्रमा	18-02-2086	112.10
मंगल	07-03-2086	112.17
राहु	20-04-2086	112.22

शनि अन्तर

(20:04:2086 To 02:04:2087)

शनि	14-06-2086	112.34
बुध	02-08-2086	112.49
केतु	22-08-2086	112.62
शुक्र	19-10-2086	112.68
सूर्य	05-11-2086	112.84
चन्द्रमा	04-12-2086	112.88
मंगल	24-12-2086	112.96
राहु	14-02-2087	113.02
गुरू	02-04-2087	113.16

बुध अन्तर

(02:04:2087 To 06:02:2088)

बुध	16-05-2087	113.29
केतु	03-06-2087	113.41
शुक्र	24-07-2087	113.46
सूर्य	09-08-2087	113.60
चन्द्रमा	04-09-2087	113.64
मंगल	22-09-2087	113.71
राहु	07-11-2087	113.76
गुरू	19-12-2087	113.89
शनि	06-02-2088	114.00

केतु अन्तर

(06:02:2088 To 13:06:2088)

केतु	14-02-2088	114.14
शुक्र	06-03-2088	114.16
सूर्य	12-03-2088	114.22
चन्द्रमा	23-03-2088	114.23
मंगल	30-03-2088	114.26
राहु	19-04-2088	114.28
गुरू	06-05-2088	114.34
शनि	26-05-2088	114.38
बुध	13-06-2088	114.44

शुक्र अन्तर

(13:06:2088 To 14:06:2089)

शुक्र	13-08-2088	114.49
सूर्य	31-08-2088	114.65
चन्द्रमा	01-10-2088	114.70
मंगल	22-10-2088	114.79
राहु	16-12-2088	114.85
गुरू	03-02-2089	115.00
शनि	02-04-2089	115.13
बुध	23-05-2089	115.29
केतु	14-06-2089	115.43

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विष्णु शहस्त्रनाम उपाय – 1

विष्णु सहस्रनाम का प्रयोग उपचारात्मक ज्योतिष में शांति लाने, बाधाओं को दूर करने और नकारात्मक ग्रहों के प्रभाव को कम करने के लिए किया जाता है। इन दिव्य नामों का जाप ऊर्जाओं को संतुलित करने, सकारात्मक परिणामों को आकर्षित करने तथा आध्यात्मिक सुरक्षा को मज़बूत करने में मदद करता है। यह कठिन समय में और समग्र कल्याण के लिए विशेष रूप से सहायक होता है।

ग्रह	मंत्र	विवरण
लग्न **हस्ता** **पद – 4**	भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः । दर्पहा दर्पदो .प्तो दुर्धरोऽथापराजितः ।। Bhootavaso Vasudevah Sarvasunilayo Analah | Darpaha Darpado Dripto Durdharo Athaparajitah ||	वे सभी प्राणियों के आश्रय हैं, प्राणों में निवास करते हैं और अविनाशी हैं। वे अभिमान का दमन करते हैं और अजेय हैं।
सूर्य **मूला** **पद – 1**	अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः । शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ।। Araudrah Kundali Chakri Vikramyurjitashasanah | Shabdatigah Shabdasahah Shishirah Sharvarikarah ||	वह दिव्य अस्त्रों का प्रयोग करते हैं और ध्वनि से परे हैं, अंधकार में भी प्रकाश फैलाते हैं।
चन्द्रमा **हस्ता** **पद – 2**	मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः । वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ।। Manojavas Teerthakaro Vasureta Vasupradah | Vasuprado Vasudevo Vasur Vasumana Havih ||	वे मन के समान तीव्र हैं, धन के दाता हैं और ब्रह्मांड का पालन करते हैं। वे वासुदेव हैं, अपने उत्तम गुणों के कारण पूजे जाते हैं।
मंगल **अश्विनी** **पद – 2**	सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः । सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ।। Suprasadah Prasannatma Vishvadrik Vishvabhug Vibhu | Satkarta Satkritah Sadhur Jahnur Narayano Narah ||	वह दयालु, शांत, ब्रह्मांड का पालनकर्ता, सबका भोक्ता और सर्वव्यापी उपकारी है, जिसकी पूजा नारायण और नर के रूप में की जाती है।
बुध **ज्येष्ठा** **पद – 1**	सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः । अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रिय.त् प्रीतिवर्धनः ।। Sattvavan Sattvikah Satyah Satyadharmaparanah | Abhiprayah Priyarho Arhah Priyakrit Preetivardhanah ||	वह सत्यवादी, धर्मी और प्रेममय हैं। वह आनंद को बढ़ाते हैं और सभी के प्रिय हैं।
गुरू **श्रवण** **पद – 3**	योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः । नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ।। Yogo Yogavidaam Neta Pradhaanapurusheshwarah | Naarasimha Vapuh Shreeman Keshavah Purushottamah ||	वे योग और उसके ज्ञान के स्वामी हैं, जड़ और आत्मा दोनों के स्वामी हैं, जिनका स्वरूप नरसिंह (मानव–सिंह) जैसा है। वे महिमावान, तेजस्वी और परम सत्ता हैं।
शुक्र **श्रवण** **पद – 1**	विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः । भूत.द्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ।। Vishvam Vishnuh Vashatkaaro Bhootabhavyabhavatprabhuh | Bhootakridbhootabhridbhaavo Bhootaatmaa Bhootabhaavanah ||	वे सभी काल – भूत, वर्तमान और भविष्य – के रचयिता, रक्षक और शासक हैं। वे सभी प्राणियों के मूल हैं, उनका पालन–पोषण करते हैं और करुणा के साथ उनके अस्तित्व का पोषण करते हैं।

विष्णु शहस्त्रनाम उपाय – 2

विष्णु सहस्रनाम का प्रयोग उपचारात्मक ज्योतिष में शांति लाने, बाधाओं को दूर करने और नकारात्मक ग्रहों के प्रभाव को कम करने के लिए किया जाता है। इन दिव्य नामों का जाप ऊर्जाओं को संतुलित करने, सकारात्मक परिणामों को आकर्षित करने तथा आध्यात्मिक सुरक्षा को मज़बूत करने में मदद करता है। यह कठिन समय में और समग्र कल्याण के लिए विशेष रूप से सहायक होता है।

ग्रह	मंत्र	विवरण
शनि **अरिद्रा** पद – 1	ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः । उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ।। Rituh Sudarshanah Kalah Parameshthi Parigrahah | Ugrah Samvatsaro Dakshah Vishramo Vishvadakshinah ||	वह काल हैं, सर्वोच्च पर्यवेक्षक, प्रचंड और सर्वव्यापी हैं। वह विश्रामशील, निपुण और ब्रह्मांड के पालनहार हैं।
राहु **मूला** पद – 2	अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणांवरः । विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ।। Akroorah Peshalo Dakshah Dakshinah Kshaminam Varah | Vidvattamo Veetabhayah Punyashravana Keertanah ||	वह बुद्धिमान, दयालु और भय का नाश करने वाले हैं। उनकी स्तुति पुण्य और आनंद प्रदान करती है।
केतु **मृगशिर** पद – 4	वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः । हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ।। Vaikunthah Purushah Praanah Praanadah Pranavah Prithuh | Hiranyagarbhah Shatrughno Vyapto Vaayur Adhokshajah ||	वह वैकुंठ, परमात्मा, जीवनदाता और सबमें व्याप्त हैं। वह विशाल, सूक्ष्म और पारलौकिक हैं।
हर्षल **चित्रा** पद – 4	अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् । सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ।। Amani Manado Manyo Lokasvami Trilokadhrik | Sumedha Medhajo Dhanyah Satyamedha Dharadharah ||	वे विनम्र हैं, फिर भी सम्मान प्रदान करते हैं, सभी के द्वारा पूज्य हैं और तीनों लोकों का पालन करते हैं। उनके पास महान बुद्धि, धन और सत्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता है।
नेपच्यून **अनुराधा** पद – 4	धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः । अपराजितः सर्वसहो नियन्ताऽनियमोऽयमः ।। Dhanurdharo Dhanurvedo Dando Damayita Damah | Aparajitah Sarvasaho Niyanta Aniyamo Ayamah ||	वह धर्म का धनुष धारण करते हैं, अनुशासन स्थापित करते हैं और उन्हें पराजित नहीं किया जा सकता।
प्लूटो **हस्ता** पद – 1	स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः । पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ।। Stavya Stavapriyah Stotram Stutih Stota Ranapriyah | Poornah Poorayita Punyah Punyakeertir Anamayah ||	वे प्रशंसनीय हैं, उनकी पूजा करने में आनंद आता है, तथा वे पूर्णता और पवित्रता प्रदान करते हैं। वे रोगों को दूर करने वाले और शांति प्रदान करने वाले हैं।

नक्षत्र गायत्री मंत्र – 1

नक्षत्र गायत्री मंत्रों का प्रयोग उपचारात्मक ज्योतिष में जन्म कुंडली में प्रतिकूल नक्षत्रों के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए किया जाता है। इन मंत्रों का जाप ऊर्जाओं को संतुलित करने, सकारात्मकता को आकर्षित करने तथा मानसिक शांति में सुधार करने में मदद करता है। ये स्वास्थ्य, रिश्तों या करियर से जुड़ी चुनौतियों पर विजय पाने के लिए विशेष रूप से उपयोगी हैं।

ग्रह	मंत्र	विवरण
लग्न **हस्ता** **पद – 4**	ऊँ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति Om Vibhradavrihan Pivatu Somyam Madhvaryudadhjna Pattavihutam Vatajuto Yo Abhirakshatitmana Praja Puposhah Purudhavirajati	हे तेजस्वी सविता, हमें दिव्य अमृत से पोषित करें और अपनी शक्ति से हमारी रक्षा करें। आपके आशीर्वाद समृद्धि और कल्याण में वृद्धि करते हैं। यह मंत्र प्रकाश और प्रेरणा के देवता सविता की स्तुति करता है।
सूर्य **मूला** **पद – 1**	ऊँ मातेवपुत्रम पृथिवी पुरीष्यमग्नि गवं स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदान प्रजापति विश्वकर्मा विमुन्च्त। Om Mateva Putram Prithivi Purishyamagni Gavam Svayonava Bharusha Tam Vishwedaivrittubhih Samvidana Prajapati Vishvakarma Vimunchat	हे देवी पृथ्वी, जैसे एक माँ अपने बच्चे की रक्ष करती है, वैसे ही अपनी ऊर्जा से हमारा पोषण करें। प्रजापति के दिव्य सहयोग और मार्गदर्शन से, विश्व–निर्माता हमें नकारात्मकताओं से मुक्त करें।
चन्द्रमा **हस्ता** **पद – 2**	ऊँ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति। Om Vibhradavrihan Pivatu Somyam Madhvaryudadhjna Pattavihutam Vatajuto Yo Abhirakshatitmana Praja Puposhah Purudhavirajati	हे तेजस्वी सविता, हमें दिव्य अमृत से पोषित करें और अपनी शक्ति से हमारी रक्षा करें। आपके आशीर्वाद समृद्धि और कल्याण में वृद्धि करते हैं। यह मंत्र प्रकाश और प्रेरणा के देवता सविता की स्तुति करता है।
मंगल **अश्विनी** **पद – 2**	ऊँ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम। ऊँ अश्विनी कुमाराभ्यो नमः। Om Ashvinau Tejasaa Chakshuh Pranena Saraswati Veeryyam Vachendro Balenendraya Dadhurindriyam Om Ashvini Kumarabhyo Namah	हे अश्विन, आप अपने तेज से दृष्टि, श्वास और बल को बढ़ाते हैं। आपकी शक्तियों से इं का तेज बना रहता है। मैं अश्विनी कुमारों क प्रणाम करता हूँ। यह मंत्र जुड़वां देवताओं अश्विनी कुमारों की उनकी उपचार क्षमता और जीवन शक्ति के लिए स्तुति करता है।
बुध **ज्येष्ठा** **पद – 1**	ऊँ त्राताभिंद्रमबितारमिंद्र गवं हवेसुहव गवं शूरमिंद्रम वहयामि शक्रं पुरुहूतभिंद्र गवं स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ऊँ इन्द्राय नमः। Om Tratab Indram Abitaram Indram Gavam Havesu Hav Gavam Shuram Indram Vahayami Shakram Puruhutabhindram Gavam Svastino Madhava Dhatvindrah	मैं रक्षक और परम पूजनीय इंद्र का आह्वान करता हूँ कि वे हमें शक्ति और सुरक्षा प्रदान करें। इंद्र हमें विजय और कल्याण का आशीर्वाद दें। यह मंत्र देवताओं के राजा और धर्म के रक्षक इंद्र से आशीर्वाद मांगता है।
गुरु **श्रवण** **पद – 3**	ऊँ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो धुर्वोसि वैष्णवमसि विष्नेत्वा। ऊँ विष्णवे नमः। Om Vishnoraratmasi Vishno Shnapatrestho Vishno Syurosivishno Dhruvosi Vaishnavamasivishnetva	हे विष्णु, ब्रह्मांड के पालनकर्ता, आप शाश्वत आधार हैं। आप सत्य का पालन करते हैं और हमें धर्म के मार्ग पर अग्रसर करते हैं। यह मंत्र विष्णु को सार्वभौमिक व्यवस्था के रक्षक और पालनकर्ता के रूप में स्तुति करता है।
शुक्र **श्रवण** **पद – 1**	ऊँ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो धुर्वोसि वैष्णवमसि विष्नेत्वा। ऊँ विष्णवे नमः। Om Vishnoraratmasi Vishno Shnapatrestho Vishno Syurosivishno Dhruvosi Vaishnavamasivishnetva	हे विष्णु, ब्रह्मांड के पालनकर्ता, आप शाश्वत आधार हैं। आप सत्य का पालन करते हैं और हमें धर्म के मार्ग पर अग्रसर करते हैं। यह मंत्र विष्णु को सार्वभौमिक व्यवस्था के रक्षक और पालनकर्ता के रूप में स्तुति करता है।

नक्षत्र गायत्री मंत्र – 2

नक्षत्र गायत्री मंत्रों का प्रयोग उपचारात्मक ज्योतिष में जन्म कुंडली में प्रतिकूल नक्षत्रों के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए किया जाता है। इन मंत्रों का जाप ऊर्जाओं को संतुलित करने, सकारात्मकता को आकर्षित करने तथा मानसिक शांति में सुधार करने में मदद करता है। ये स्वास्थ्य, रिश्तों या करियर से जुड़ी चुनौतियों पर विजय पाने के लिए विशेष रूप से उपयोगी हैं।

ग्रह	मंत्र	विवरण
शनि **आर्द्रा** पद – 1	ॐ नमस्ते रूद्र मन्यवऽ उतात इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः। ॐ रुद्राय नमः। Om Namaste Rudra Manyava Utaata Ishave Namah Bahubhyam Mutate Namah Om Rudraya Namah	हे रुद्र, मैं आपकी शक्तिशाली और सुरक्षात्मक भुजाओं को प्रणाम करता हूँ। आप उग्र होते हुए भी दयालु हैं, बाधाओं को दूर करते हैं और शांति लाते हैं। यह मंत्र सुरक्षा और मार्गदर्शन के लिए रुद्र (शिव) से प्रार्थना है।
राहु **मूला** पद – 2	ॐ मातेवपुत्रम पृथिवी पुरीष्यमग्नि गवं स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदान प्रजापति विश्वकर्मा विमुन्च्त। Om Mateva Putram Prithivi Purishyamagni Gavam Svayonava Bharusha Tam Vishwedaivrittubhih Samvidana Prajapati Vishvakarma Vimunchat	हे देवी पृथ्वी, जैसे एक माँ अपने बच्चे की रक्षा करती है, वैसे ही अपनी ऊर्जा से हमारा पोषण करें। प्रजापति के दिव्य सहयोग और मार्गदर्शन से, विश्वनिर्माता हमें नकारात्मकताओं से मुक्त करें।
केतु **मृगशिर** पद – 4	ॐ सोमधेनु गवं सोमाअवन्तुमाशु गवं सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य गवं सभेयम्पितृ श्रवणयोम। ॐ चंद्रमसे नमः। Om Somadhenugavam Somaavantumashugavam Somoveerah Karmanayandadati Yadatyavidadh Gavam Sabheyampitri Shravanayom Om Chandramase Namah	हे सोम, पोषण करने वाले, गायों और पृथ्वी का कल्याण करते हैं। सोम धार्मिक कर्मों का समर्थन करता है और समृद्धि लाता है। मैं चंद्र (चंद्रमा) को प्रणाम करता हूँ। यह मंत्र चंद्रमा को पोषण और शक्ति के स्रोत के रूप में दर्शाता है।
हर्षल **चित्रा** पद – 4	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्धुत इन्द्रागी पुष्टिवर्द्धनम। द्विपदापदायाः च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः। त्वष्ट्रेनमः। ॐ विश्वकर्मणे नमः। Om Tvashtaturiiyo Adbhuta Indragni Pushtivardhanam Dvipadapadayah Chhanda Indriyamuksha Gautra Vyodadhuh	हे त्वष्टा, अद्भुत, आप सामर्थ्य और जीवन शक्ति को बढ़ाते हैं। आप सभी प्राणियों के जीवन का पोषण करते हैं तथा रचनात्मकता एवं पूर्णता प्रदान करते हैं। यह मंत्र दिव्य शिल्पकार और रचयिता त्वष्टा की स्तुति करता है।
नेपच्यून **अनुराधा** पद – 4	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत गवं सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश गवं सत। ॐ मित्राय नमः। Om Namo Mitrasya Varunasya Chakshase Mahah Devaya Tadrita Gavam Saparyata Duran Drishe Dev Jataya Ketave Divasputraya	मैं मित्र और वरुण को नमन करता हूँ, जो महान देवता हैं तथा सत्य और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखते हैं। उनका प्रकाश हमारा मार्गदर्शन एवं हमारी रक्षा करे। यह मंत्र मित्र और वरुण की सद्भाव और न्याय बनाए रखने में उनकी भूमिका के लिए उनकी स्तुति करता है।
प्लूटो **हस्ता** पद – 1	ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति। Om Vibhradavrihan Pivatu Somyam Madhvaryudadhjna Pattavihutam Vatajuto Yo Abhirakshatitmana Praja Puposhah Purudhavirajati	हे तेजस्वी सविता, हमें दिव्य अमृत से पोषित करें और अपनी शक्ति से हमारी रक्षा करें। आपके आशीर्वाद समृद्धि और कल्याण में वृद्धि करते हैं। यह मंत्र प्रकाश और प्रेरणा के देवता सविता की स्तुति करता है।

नक्षत्र – पद का विवेचन

आप हस्त नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण देव, नाड़ी आद्य, योनि महिष, वर्ण वैश्य तथा वर्ग मेष होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके नाम का प्रारम्भ 'ष' अक्षर से होगा।

आप नैसर्गिक रूप से दानशील पुरुष होंगे तथा यथा शक्ति जरूरतमंद लोगों को जीवन में दान देते रहेंगे। समाज में आप लोकप्रिय होंगे तथा आपकी ख्याति दूर–दूर तक व्याप्त रहेगी। समाज के सभी वर्गों के प्रति आपके मन में सद्भाव विद्यमान रहेगा तथा अन्य जन भी आपको हार्दिक मान–सम्मान प्रदान करेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में अगााध श्रद्धा का भाव रहेगा तथा इनके पूजन एवं सत्कार में आप सदैव तत्पर रहेंगे। इसके साथ ही आप अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों को अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

दाता मनस्वी सुतरां यशस्वी भूदेवदेर्वाचनकृत्प्रयत्नतः।

प्रसूति काले यदि यस्य हस्तो हस्तोद्गता तस्य समस्तसम्पत्।।

जातकाभरणम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक दाता, मनस्वी, अतियशवाला, देवता और ब्राहमणों का भक्त तथा सर्वप्रकार की सम्पत्ति से सदैव युक्त रहता है।

आप सांसारिक तथा भौतिक भोग्य पदार्थों का अपने जीवन में प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे तथा परलौकिक कर्मों के लिए दान पुण्य इत्यादि धार्मिक क्रियाकलापों को भी सम्पन्न करते रहेंगे। इससे आप इस लोक तथा परलोक दोनों जगह आनन्द की प्राप्ति करेंगे। आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा आपकी बुद्धि भी अत्यन्त तीव्रता से युक्त रहेगी। फलतः बुद्धिचातुर्य से अपने सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे। समाज के सभी वर्गों के परोपकार सम्बन्धी कार्यों में आप पूर्णतया समर्पित रहेंगे तथा तन, मन, धन से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही आप विपुल धन के स्वामी भी बनेंगे।

हस्तर्क्षे यदि कामधर्मनिरतः प्राज्ञोपकर्ता धनी।

जातकपरिजातः

अर्थात् हस्त नक्षत्रोत्पन्न जातक सांसारिक भोग्य पदार्थ तथा पारलौकिक शुभ कर्मों को करने वाला तथा धनवान होता है।

उत्साह से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे तथा आपके समस्त कार्य उत्साहपूर्वक ही सम्पन्न होंगे। कभी–कभी आप मन से कठोरता का भी प्रदर्शन करेंगे।

उत्साही धृष्टः पानपोऽघृणी तस्करो हस्ते।

बृहज्जातकम्

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक उत्साही, लज्जाहीन, मदिरा का सेवन करने वाला, घृणा न करने वाला एवं तस्कर होता है।

अवसरानुकूल आप मिथ्याभाषण भी करेंगे। आपके स्वभाव से मदृता का आभास होगा। आप अपने समीपस्थ बन्धु बान्धवों से भी युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त महिला वर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ सम्बन्ध रहेंगे।

असत्यवचनो घृष्टः सुरापी बन्धुवर्जितः।

हसतो जातो नरश्चौरो जायते पारदारिकः।।

मानसागरी

अर्थात् हस्त नक्षत्र में उत्पन्न जातक झूठ बोलने वाला, निर्लज्ज, मद्यपान करने वाला बन्धुओं द्वारा वर्जित, चोर तथा अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

कन्या राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके हाथों की लम्बाई अधिक होगी तथा दाँत, नाक, कान तथा मुख मण्डल सुन्दर एवं दर्शनीय होंगे। स्त्रियों के लिए आपके मन में स्नेहाधिक्य रहेगा। आप एक उच्च कोटि के विद्वान होंगे तथा कई धार्मिक संस्थाओं के उच्च पदों पर आप आसीन रहेंगे। धर्म के प्रति आपमें विशेष श्रद्धा एवं आस्था का भाव रहेगा तथा यत्न से धर्मानुपालन में तत्पर रहेंगे। आप सर्वदा अपने भाषण में प्रिय एवं मधुर वाणी का ही उपयोग करेंगे जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही सत्य एवं शुद्धता का आप विशेष रूप से ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका पालन करेंगे। आप एक धैर्यवान पुरुष होंगे। फलतः सभी कार्यों को शीघ्रता से नहीं अपितु धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगे। परोपकारी वृत्ति भी आपके मन में विद्यमान रहेगी तथा इस वृत्ति का आप पालन करते रहेंगे। साथ ही समस्त जीव तथा प्राणियों के प्रति आपके मन में दया एवं करूणा का भाव विद्यमान रहेगा। देखने में आपका सौन्दर्यशाली रूप सभी को आकर्षित करेगा। आपका सम्पूर्ण जीवन सुख एवं वैभव से सम्पन्न होगा लेकिन संतति संख्या में कन्याओं की संख्या अधिक त ा पुत्रों की संख्या अल्प मात्रा में रहेगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णो।

विद्वानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।

धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।

कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।

सारावली

अर्थात् कन्याराशि में उत्पन्न जातक स्त्री में अनुरक्त, लम्बे हाथों वाला, सुन्दर मुख, दाँत, कान व नाक वाला, पंडित, आचार्य (अध्यक्ष), धर्मात्मा, प्रियवक्ता सत्य व शुद्धता से श्रेष्ठ धैर्यवान प्राणियों पर दया करने वाला, परोपकारी, सुन्दर, ऐश्वर्य से युक्त अधिक कन्या एवं अल्प पुत्रों वाला होता है।

आप लज्जा तथा आलस्यमय दृष्टि से युक्त होकर गमनशील रहेंगे। आपके कंधे तथा भुजाएँ भी शिथिलता से युक्त होंगी। आप समस्त प्रकार के सुखों का आनन्दपूर्वक अपने जीवन काल में उपभोग करेंगे तथा नाना प्रकार की कलाओं के आप ज्ञाता रहेंगे। विविध प्रकार के शास्त्रों के तत्व ज्ञान को प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगे। सभी वर्गों के प्रति कार्य करने की इच्छा का आप में बाहुल्य रहेगा। इसके अतिरिक्त आप किसी अन्य मित्र या सम्बन्धी के घर एवं धन का उपयोग करने वाले भी होंगे तथा विदेश जाने की इच्छा भी आपमें निरन्तर बनी रहेगी।

व्रीडामंथरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसबाहुः सुखी।

श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।

मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।

कन्यायां परदेशगः प्रियवच- कन्याप्रजोऽल्पात्मजः।।

बृहज्जातकम्

अर्थात् कन्याराशि का जातक लज्जा और आलस्य युक्त शोभन दृष्टि से गमनशील, शिथिलबाहु और कन्धेवाला, सुखी कोमल शरीर युक्त, सत्यवक्ता कलाविद्या में निपुण, शास्त्र तत्वार्थ ज्ञाता, धर्माचरणरत, बुद्धिमान, स्त्रीरतिप्रिय, अन्य के घर तथा धन से युक्त, परदेश प्रिय, प्रियवक्ता, अधिक संख्यक कन्या तथा अल्प संख्यक पुत्रों वाला होता है।

आप स्त्री जाति को अपनी हास्य एवं विलासी क्रियाओं एवं मुद्राओं के द्वारा प्रसन्न करने तथा अपनी ओर आकर्षित करने की कला में अत्यन्त निपुण होंगे। आपका स्वभाव छल कपट विहीन तथा चाल–चलन उत्तम होगा। आप हमेशा अच्छे कार्यों को करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। पापकर्मों में आप की कोई भी अभिरुचि नहीं होगी। साथ ही आप एक सौभाग्यशाली पुरुष होंगे तथा अपने जीवन के अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को भाग्यबल से ही सम्पन्न करेंगे।

यवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।

विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।

जातकाभरणम्

अर्थात् कन्या राशि का जातक अपने हास–परिहास पूर्ण क्रियाओं से स्त्रियों को प्रसन्न

रखने वाला, विनयशील अधिक सन्तति युक्त, सत्कार्यकर्ता तथा भाग्यवान होता है।

आपकी बुद्धि छल से विहीन निर्मल रहेगी तथा लेखन कार्य के प्रति आप हमेशा रूचिशील रहेंगे। आपका स्वभाव शान्त होगा परन्तु कभी–कभी आपको नेत्र कष्टों से पीड़ित रहना पड़ेगा साथ ही आप गुरुजनों के हित कार्यों को करने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।

कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।

भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।

गुरुजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।

जातकदीपिका

अर्थात् कन्या राशि में उत्पन्न जातक निर्मल बुद्धिवाला, सुशील लेखन कार्य में बुद्धि लगाने वाला, कवि, कृषि बल को बढ़ाने वाले गुणों से युक्त, क्षमाशील, नेत्र रोगी धार्मिक, शील स्वभाव वाला तथा गुरुजनों का हितकारी होता है।

आप विलासमय प्रवृति से युक्त रहेंगे तथा समस्त भौतिक एवं विलासमयी वस्तुओं पर खुले हाथ से व्यय करेंगे तथा जीवन में आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप भद्र पुरुषों के प्रति अत्यन्त ही सम्मान का भाव अपने मन में रखेंगे तथा ये लोग भी प्रायः आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप अपनी दानशील प्रवृति का प्रदर्शन समयानुसार करते रहेंगे। वैदिक धर्म के प्रति आपकी पूर्ण आस्था एवं श्रद्धा रहेगी तथा जीवन में इसका पालन करेंगे। समाज में आप एक लोकप्रिय व्यक्ति होंगे। जिससे उचित मान–सम्मान की प्राप्ति होगी। संगीत तथा अभिनय के प्रति आप पूर्णरूपेण समर्पित रहेंगे तथा आजीवन इनसे आप का गहन सम्बन्ध रहेगा। साथ ही आप प्रवासी भी होंगे।

विलासी सुजनाहलादी सुभगो धर्मपूरितः।

दातादक्षः कविर्बुद्धि देवमार्ग परायणः।।

सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।

प्रवासशीलः स्त्री दुःखी कन्याजातो भवेन्नरः।।

मानसागरी

अर्थात् कन्या राशि में उत्पन्न जातक विलासप्रिय, सज्जनों को आदर देकर प्रसन्न रखने वाला, सुन्दर, धर्मात्मा, दानी चतुर, कविता करने वाला, वैदिक रीति पर चलने वाला, सब लोगों से प्रेम करने वाला, नाटक और गान विद्या के व्यसन में रत रहने वाला, देशान्तर में निवास करने वाला तथा स्त्री के कारण दुःख प्राप्त करने वाला होता है।

आपका सम्पूर्ण जीवन सुख ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा। कामभावना की आप में प्रबलता रहेगी। फलतः आप इससे यदा–कदा व्याकुलता का एहसास भी करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपके

मन में सहानुभूति एवं सद्भावना विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त विविध शस्त्रों तथा कलाओं में भी आप निपुण रहेंगे।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।

जातकपरिजातः

अर्थात् कन्या राशि में उत्पन्न जातक कामवासना से व्याकुल रहने वाला, मृदु, सुन्दर ओर मनोहर वाणी से युक्त, अधिक विद्याओं को जानने वाला तथा सुखों का उपभोग करने वाला होता है।

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी श्रेष्ठ तथ मधुर होगी जो अन्य जनों को सुनने में प्रिय लगेगी। आप सत्य के पालन में हमेशा तत्पर रहेंगे। आप अत्यन्त ही सरल बुद्धि के स्वामी होंगे। आप अपने भावों को सादगी से प्रकट करेंगे तथा अन्य जनों के भावों को सादगी से ग्रहण करेंगे। आप शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। गुणों के आप पूर्ण ज्ञाता होंगे तथा स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों के द्वारा वर्णित गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे। आप सभी प्रकार की सम्पत्ति तथा धनैश्वर्य से सम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में कभी इनका अभाव महसूस नहीं करेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।

जायते सुरगणे डन्यगुणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।

जातकाभरणम्

अर्थात् देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बुद्धि से युक्त अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आपका सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा स्वभाव से ही दानशील होंगे। सादगी आपको बहुत पसन्द होगी तथा जीवन को सादगी पूर्ण ढंग से व्यतीत करने में आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। साथ ही अपने समाज में आप एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में पहचाने जायेंगे।

सुन्दरो दानशीलश्च कान्तिमान सरलः सदा।

अल्प भोगी महाप्रज्ञो नरो देवगणो भवेत्।।

मानसागरी

अर्थात् देवगण में पैदा हुआ मनुष्य सुन्दर, दानी, बुद्धिमान, सादगी पसन्द तथा महान विद्वान होता है।

महिष योनि में पैदा होने के कारण आप वाद–विवादों तथा लड़ाई–झगड़े के मामलों में सर्वथा विजयी रहेंगे। साथ ही शूरवीरता के लक्षणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा साहस एवं वीरता के साथ अपने कार्य–कलापों को सम्पन्न करेंगे। आपकी सन्तति संख्या भी अधिक होगी। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में पूर्ण निष्ठा व्याप्त रहेगी तथा यत्नपूर्वक धर्माचरण में तत्पर रहेंगे।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।

वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।

मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पूर्णमासी तिथियाँ, श्रवण नक्षत्र, शुभ योग, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5, 10, 15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभ योग तथा कौलव करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर एवं मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनो तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा गणेश चतुर्थी एवं बुधवार के उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरा वस्त्र, मूंग की दाल आदि पदार्थों का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शुभ कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

मंत्र – ऊँ ऐं स्त्री श्रीं बुधाय नमः।

सूर्य मूला (1) में

ॐ मातेवपुत्रम पृथिवी पुरीष्यमग्नि गवं स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदान प्रजापति विश्वकर्मा विमुन्च्त।

बीज – मंत्र	ओम नम्, ओम फम्
नाम – मंत्र	ॐ मूलाय नमः।
देवता – मंत्र	ॐ निऋतये नमः।

देवी–देवता	निरृति
शक्ति	बरहना शक्ति
गुण (त्रिगुण)	तमस (स र र)
स्वभाव	तीक्ष्ण
गण (स्वभाव)	राक्षस
त्रि–मूर्ति	ब्रह्मा
गतिविधि (कार्य–शैली)	सक्रिय
पुरुषार्थ	काम
त्रिदोष	वात (अध्या)
वर्ण (जाति)	क्रूर
गोत्र (कबीला)	पुलस्थ
पंच महाभूत	वायु
अभिविन्यास	अधो मुख
लिंग (योनि)	श्वान (पुरुष)
पक्षी	लाल गिद्ध
पंचपक्षी	कुक्कुट – मुर्गा
दिशा	उत्तर पश्चिम
पौधा	अजकर्ण, डामर, साल
रंग	भूरा पीला
चंद्र मास	ज्येष्ठ मास का दूसरा भाग
चंद्र तिथि	प्रतिपदा, चतुर्थी
प्रभाव	हानिप्रद
गणेश (गणपति)	उद्दंड गणपति
नित्य योग	ध्रुव
नाड़ी	आद्य (आरम्भ)
रज्जू	आरोह –पाद
गुण–धर्म	धातु
प्रक्रिया	सृजन
नक्षत्र गणना	11

आपके जीवन में सूर्य का प्रभाव

सूर्य को प्रायः पितातुल्य, व्यक्तिगत पहचान, अहंकार और आत्मा जैसे गुणों से जोड़ा जाता है। यह व्यक्तित्व, तार्किक सोच, सम्मान और सामाजिक प्रतिष्ठा को भी दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, सूर्य नेतृत्व कौशल को आकार दे सकता है, यह प्रभावित करता है कि व्यक्ति दूसरों का मार्गदर्शन कैसे करता है और उनके साथ कैसे व्यवहार करता है।

सूर्य मूला नक्षत्र में

सूर्य मूला नक्षत्र में है, यह आपके जीवन में एक शक्तिशाली और परिवर्तनकारी ऊर्जा लाता है। मूला हिंदू ज्योतिष में उन्नीसवां नक्षत्र है और केतु ग्रह से संबंधित है, जो अपने तीव्र और रहस्यमय प्रभाव के लिए जाना जाता है। केतु का इस नक्षत्र पर आधिपत्य होने से, आप तीव्रता और अस्थिरता में वृद्धि का अनुभव कर सकते हैं, लेकिन साथ ही स्वयं को रूपान्तरित करने और पुनर्जीवित करने की एक मजबूत क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।

यह ग्रह स्थिति आपको शोध, जांच और विश्लेषण जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद कर सकती है। आप खुद को छिपी हुई सच्चाइयों को उजागर करने और जटिल विषयों को समझने में गहनता से रुचि रखते हुए पा सकते हैं। एक शोधकर्ता और अन्वेषक के रूप में आपके कौशल को बढ़ाया जा सकता है, जिससे आप गहराई से खोज कर महत्वपूर्ण विवरण प्राप्त कर सकते हैं जो दूसरे लोग नहीं जान पाते हैं।

माना जाता है कि मूला नक्षत्र में सूर्य सौभाग्य और सफलता लाता है। आपके दृढ़ संकल्प और लचीलेपन की बदौलत आपको बाधाओं को दूर करना और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करना आसान लग सकता है। चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अनुकूलन और परिवर्तन करने की आपकी क्षमता आपके

व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में कई सकारात्मक परिणाम ला सकती है।

कुण्डली में सूर्य के कमजोर होने के प्रभाव –

जब आपका सूर्य कमजोर होता है, तो आपको अपने पिता, ब०स या अन्य अधिकारियों के साथ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और आपको सरकार से भी परेशानी हो सकती है। आप निम्न आत्मसम्मान या अहंकार के मुद्दों से जूझ सकते हैं, जो आपके लिए कार्य स्थल पर कठिनाई उत्पन्न कर सकता है और आत्म–सम्मान की कमी का कारण बन सकता है।

यदि आप अपने जीवन में इनमें से किसी भी चुनौती या समस्या का सामना कर रहें हैं, तो आप निम्नलिखित में से किसी भी उपाय को अपनाने पर विचार कर सकते हैं :–

(1) चूँकि केतु इस नक्षत्र का स्वामी है, इसलिए चंद्रमा के मूला नक्षत्र में गोचर करने वाले दिनों में देवी धूमावती की पूजा करें और उनका परिवर्तनकारी आशीर्वाद प्राप्त करें।

(2) उन दिनों पर ध्यान दें जब चंद्रमा मूला नक्षत्र से होकर गुजरता है, साथ ही उसके चंद्र माह का भी ध्यान रखें। ये समय नई परियोजनाएँ शुरू करने, बड़े फैसले लेने या महत्वपूर्ण लक्ष्य निर्धारित करने के लिए एकदम सही हैं।

(3) कम से कम हर छह महीने में यज्ञ या होम में भाग लें। ये पवित्र अग्नि अनुष्ठान पर्यावरण को शुद्ध करते हैं तथा समृद्धि और कल्याण के लिए दिव्य आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

(4) यदि आपको इस नक्षत्र से संबंधित समस्याएँ हैं, तो राहत पाने का एक शक्तिशाली तरीका अमंद या रुद्र जैसे उग्र देवी–देवताओं की पूजा करना है। उनकी प्रबल ऊर्जा आपको नकारात्मक प्रभावों से बचाने में मदद कर सकती है।

(5) देवी महाकाली की पूजा उनके मंत्र 'ऊँ श्री महाकालिकाये नमः' का 108 बार जाप करके करें। यह आह्वान नकारात्मकता को दूर भगाने और आपके जीवन में परिवर्तनकारी ऊर्जा लाने में मदद करता है।

चन्द्रमा हस्ता (2) में

ऊँ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम
वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति।

बीज – मंत्र	ओम झम, ओम न्यं
नाम – मंत्र	ऊँ हस्ताय नमः।
देवता – मंत्र	ऊँ सवित्रे नमः।

देवी–देवता	सवितृ आदित्य
शक्ति	हस्त स्थापनीय अगम शक्ति
गुण (त्रिगुण)	रजस (त त र)
स्वभाव	लघु
गण (स्वभाव)	देव
त्रि–मूर्ति	ब्रह्मा
गतिविधि (कार्य–शैली)	धैर्ययुक्त
पुरुषार्थ	मोक्ष
त्रिदोष	वात (अध्या)
वर्ण (जाति)	वैश्य
गोत्र (कबीला)	पुलह
पंच महाभूत	अग्नि
अभिविन्यास	त्रियंक मुख
लिंग (योनि)	महिष (स्त्री)
पक्षी	गिद्ध
पंचपक्षी	काक – कौआ
दिशा	दक्षिण पश्चिम
पौधा	मालति, चमेली
रंग	गहरा हरा
चंद्र मास	चैत्र मास के पहले 9 दिन
चंद्र तिथि	द्वादशी
प्रभाव	लक्ष्मीप्रद
गणेश (गणपति)	वरदा गणपति
नित्य योग	अतिगण्ड
नाड़ी	आद्य (आरम्भ)
रज्जू	आरोह –कण्ठ
गुण–धर्म	धातु
प्रक्रिया	सृजन
नक्षत्र गणना	3

आपके जीवन में चन्द्रमा का प्रभाव

चंद्रमा को प्रायः माता, मन और भावनाओं से जोड़ा जाता है। यह हमारे व्यक्तित्व, हमारे सामाजिक मेलजोल, हमारी खुशी और घर में मिलने वाले सुख को भी प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, चंद्रमा हमारी लोकप्रियता के स्तर और दूसरों द्वारा हमारे बारे में की जाने वाली धारणा को भी प्रभावित कर सकता है।

चन्द्रमा हस्ता नक्षत्र में

चंद्रमा हस्त नक्षत्र में है, यह आपके जीवन में बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और कलात्मक प्रतिभा की प्रबल भावना लाता है। आपकी याददाश्त अच्छी हो सकती है और आपके पास मजबूत विश्लेषणात्मक कौशल हो सकते हैं। यह ग्रह स्थिति आपको बहुत स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बना सकती है, साथ ही आपके अंदर आत्म-मूल्य की ठोस भावना भी हो सकती है।

आप अपने प्रियजनों के प्रति बहुत सहायक और देखभाल करने वाले हो सकते हैं, उनकी भलाई के लिए हमेशा मदद करने और त्याग करने के लिए तैयार रहते हैं। आपके पास समय की अच्छी समझ और उन चीजों को समझने की क्षमता भी हो सकती है जो दूसरे नहीं कर सकते, जिससे आपको विभिन्न स्थितियों में बढ़त मिलती है। यह ग्रह स्थिति आध्यात्मिक क्षेत्र से आपके जुड़ाव को भी बढ़ा सकती है, जिससे आध्यात्मिक अभ्यास और आत्म-खोज में गहरी रुचि पैदा हो सकती है। आपको आध्यात्मिकता की खोज करने और खुद को गहराई से समझने में खुशी और संतुष्टि मिल सकती है।

कुण्डली में चन्द्रमा के कमजोर होने के प्रभाव –

जब आपका चंद्रमा कमजोर होता है, तो आपको अपनी माँ के साथ कठिनाइयाँ हो

सकती हैं तथा तनाव, व्यग्रता और चिंता के उच्च स्तर का अनुभव हो सकता है। आप अधिक आसानी से प्रभावित और अतिसंवेदनशील हो सकते हैं, जिससे भावनात्मक उतार–चढ़ाव हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, आप कम ऊर्जा या जड़ता से जूझ सकते हैं, जो आपकी सामाजिक स्थिति को प्रभावित कर सकता है। कुछ मामलों में, कमज़ोर चंद्रमा बेईमानी या आत्मप्रतारणा का कारण भी बन सकता है।

यदि आप अपने जीवन में इनमें से किसी भी चुनौती या समस्या का सामना कर रहें हैं, तो आप निम्नलिखित में से किसी भी उपाय को अपनाने पर विचार कर सकते हैं :–

(1) यदि चंद्रमा रविवार को हस्त नक्षत्र में गोचर करता है, तो यह आपके ऋणों का एक छोटा सा हिस्सा चुकाने का एक उत्कृष्ट समय है। यह प्रतीकात्मक कार्य यह सुनिश्चित करने में मदद करेगा कि आपका पूरा ऋण या कर्ज जल्दी और आसानी से चुकाया जाए।

(2) अपने अंतर्मन से जुड़ने के लिए प्रतिदिन ध्यान में समय बिताएँ। इससे आपको शांत, केंद्रित और अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पित रहने में मदद मिलती है।

(3) हस्त नक्षत्र से संबंधित गणेश, वरद गणपति की पूजा के लिए 'ऊँ वरद गणपतये नमः' का 108 बार जाप करें। यह मंत्र बाधाओं को दूर करने तथा सफलता एवं समृद्धि का आशीर्वाद प्रदान करता है।

(4) आध्यात्मिक विकास और सुरक्षा के लिए, प्रत्येक पाद को समर्पित करते हुए, विष्णु सहस्रनाम श्लोक 73, 74, 75 और 76 का जाप करें।

मंगल अश्विनी (2) में

ऊँ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम। ऊँ अश्विनी कुमाराभ्यो नमः।

बीज – मंत्र	ओम आं, ओम इं
नाम – मंत्र	ऊँ अश्वयुगभ्यां नमः।
देवता – मंत्र	ऊँ अश्विनी कुमाराभ्यां नमः।

देवी–देवता	अश्विनी कुमार
शक्ति	शिघ्र व्यापनि शक्ति
गुण (त्रिगुण)	तमस (र र र)
स्वभाव	लघु
गण (स्वभाव)	देव
त्रि–मूर्ति	ब्रह्मा
गतिविधि (कार्य–शैली)	धैर्ययुक्त
पुरुषार्थ	धर्म
त्रिदोष	वात (अध्या)
वर्ण (जाति)	वैश्य
गोत्र (कबीला)	मरिची
पंच महाभूत	पृथ्वी
अभिविन्यास	त्रियंक मुख
लिंग (योनि)	अश्व (पुरूष)
पक्षी	जंगली बाज
पंचपक्षी	गरूड़ – गिद्ध
दिशा	पूर्व
पौधा	विषद्रम, तिन्दु, कुचिला
रंग	रक्त लाल
चंद्र मास	आश्विन मास का पहला आधा भाग
चंद्र तिथि	प्रतिपदा
प्रभाव	शुभप्रद
गणेश (गणपति)	द्विज गणपति
नित्य योग	सिद्ध
नाड़ी	आद्य (आरम्भ)
रज्जू	आरोह –पाद
गुण–धर्म	धातु
प्रक्रिया	सृजन
नक्षत्र गणना	3

आपके जीवन में मंगल का प्रभाव

मंगल को प्रायः भाइयों, मित्रों और यहाँ तक कि प्रतिद्वंद्वियों के साथ संबंधों से जोड़ा जाता है, जो मित्रता और संघर्ष दोनों की संभावना को दर्शाता है। यह ग्रह ऊर्जा, तार्किक सोच और वैज्ञानिक मानसिकता को भी नियंत्रित करता है। इसके अतिरिक्त, मंगल जुनून, कर्ज, साहस और ज़मीन से जुड़े मामलों से संबंधित है। अंत में, यह ताकत, शक्ति और आत्मविश्वास को बहुत प्रभावित करता है, और यह तय करता है कि व्यक्ति जीवन में कैसे कदम उठाता है।

मंगल अश्विनी नक्षत्र में

मंगल अश्विनी नक्षत्र में है, यह आपके जीवन में एक मजबूत और सकारात्मक ऊर्जा लाता है। अश्विनी नक्षत्र अपने गतिशील और सक्रिय गुणों के लिए जाना जाता है, तथा यहाँ मंगल के होने से ये गुण बढ़ जाते हैं। मंगल ऊर्जा, महत्वाकांक्षा और क्रिया का ग्रह है, इसलिए यह स्थान आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बहुत प्रेरित और केंद्रित बना सकता है।

आप खुद को अधिक बार पहल करते हुए पा सकते हैं, परियोजनाएं शुरू करने और उन्हें पूरा करने में सक्षम हो सकते हैं। यह ग्रह स्थिति आपको बहुत स्वतंत्र एवं साधन संपन्न बना सकती है, तथा आप अपने दम पर चुनौतियों का सामना करने एवं जरूरत पड़ने पर तुरंत निर्णय लेने में सक्षम हो सकते हैं।

अश्विनी नक्षत्र में मंगल आपको अच्छे स्वास्थ्य, ऊर्जा और जीवन शक्ति का आशीर्वाद दे सकता है। आप अधिक ऊर्जावान महसूस कर सकते हैं और शारीरिक गतिविधियों को आसानी से करने में सक्षम हो सकते हैं। यह ग्रह स्थिति आपको तेज दिमाग वाला तथा एक तेज सीखने वाला भी बना

सकती है, जिससे आपको नई अवधारणाओं को जल्दी समझने और जानकारी को अच्छी तरह से याद रखने में मदद मिलती है।

कुण्डली में मंगल के कमजोर होने के प्रभाव –

जब आपका मंगल कमज़ोर होता है, तो आपको जुनून, साहस, आत्मविश्वास या आंतरिक शक्ति की अनुभूति होना कठिन हो सकता है। आप खुद को अत्यधिक प्रतिस्पर्धी होते हुए या लोगों के साथ संघर्ष करते हुए देख सकते हैं। इससे कभी–कभी हिंसा या बार–बार चोट लग सकती है। आप बहुत अधिक आलोचनात्मक भी हो सकते हैं, दूसरों के बारे में गलत विचार रख सकते हैं, या कर्ज और ऋण से जूझ सकते हैं।

यदि आप अपने जीवन में इनमें से किसी भी चुनौती या समस्या का सामना कर रहें हैं, तो आप निम्नलिखित में से किसी भी उपाय को अपनाने पर विचार कर सकते हैं :–

(1) हल्दी–चावल का दान करना और प्रार्थना एवं .तज्ञता के माध्यम से पूर्व दिशा का सम्मान करना शक्तिशाली उपाय हो सकते हैं।

(2) यदि आप इस नक्षत्र से बुरे प्रभावों का अनुभव कर रहे हैं, तो भगवान गणेश की पूजा करना स्वयं की सहायता करने का एक बेहतरीन तरीका है। आप इसे दैनिक प्रार्थना के माध्यम से या किसी मंदिर में जाकर कर सकते हैं।

(3) लाल या अन्य मिश्रित रंगों के कपड़े पहनने से आप अश्विनी नक्षत्र की ऊर्जा के साथ जुड़ सकते हैं।

(4) विष्णु सहस्रनाम के श्लोक 25, 26, 27 और 28 का प्रत्येक पाद के लिए एक–एक पाठ करने से भी लाभ मिल सकता है।

(5) चूँकि अश्विनी नक्षत्र केतु द्वारा शासित है, इसलिए आप केतु के देवता भगवान गणेश की पूजा कर सकते हैं। इस दौरान गणेश अथर्वशीर्ष का ध्यान या जाप करना लाभकारी होता है।

बुध ज्येष्ठा (1) में

ऊँ त्राताभिंद्रमबितारमिंद्र गवं हवेसुहव गवं शूरमिंद्रम वहयामि शक्रं
पुरुहूतभिंद्र गवं स्वास्ति नो मघवा धात्विन्द्रः। ऊँ इन्द्राय नमः।

बीज – मंत्र	ओम धम्
नाम – मंत्र	ऊँ ज्येष्ठायै नमः।
देवता – मंत्र	ऊँ इन्द्राय नमः।

देवी–देवता	इन्द्र
शक्ति	आरोहण शक्ति
गुण (त्रिगुण)	सत्व (त स स)
स्वभाव	तीक्ष्ण
गण (स्वभाव)	राक्षस
त्रि–मूर्ति	महेश
गतिविधि (कार्य–शैली)	सक्रिय
पुरुषार्थ	अर्थ
त्रिदोष	वात (अध्या)
वर्ण (जाति)	कृषक
गोत्र (कबीला)	अत्रि
पंच महाभूत	वायु
अभिविन्यास	त्रियंक मुख
लिंग (योनि)	शशक (पुरूष)
पक्षी	ब्राह्मनी बत्तख
पंचपक्षी	कुक्कुट – मुर्गा
दिशा	पश्चिम
पौधा	शाल्मली, सेवर, सेमल
रंग	श्वेताभ
चंद्र मास	ज्येष्ठ मास का पहला भाग
चंद्र तिथि	सप्तमी, चतुर्दशी
प्रभाव	क्षयप्रद
गणेश (गणपति)	सृष्टि गणपति
नित्य योग	बृद्धि
नाड़ी	आद्य (आरम्भ)
रज्जू	अवरोह –पाद
गुण–धर्म	जीव
प्रक्रिया	विघटन
नक्षत्र गणना	3

आपके जीवन में बुध का प्रभाव

बुध व्यक्ति के शुरुआती वर्षों से गहराई से जुड़ा होता है, जो बचपन में अधिगम, बुद्धि और शिक्षा को आकार देता है। यह भाषण व लेखन सहित संवाद कौशल के साथ-साथ विभिन्न परिस्थितियों में अनुकूलनशीलता को भी प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, बुध वाणिज्य, करियर पथ और परिवहन में भी भूमिका निभाता है। इसका प्रभाव मज़बूत मित्रता बनाने और बुद्धिमता को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है, जिससे व्यक्तिगत और बौद्धिक विकास दोनों में सहायता मिलती है।

बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में

बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में है, इसे मिश्रित स्थान माना जाता है। ज्येष्ठा नक्षत्र पर देवताओं के राजा इंद्र का आधिपत्य है, तथा शक्ति, नेतृत्व एवं सफलता के विषयों से संबंधित है। इसका अर्थ है कि ज्येष्ठा नक्षत्र में बुध आपके जीवन में इन गुणों को लाने में मदद कर सकता है।

आपकी ज्योतिषीय कुण्डली में ज्येष्ठा नक्षत्र में बुध के होने पर, आप महत्वाकांक्षी, आत्मविश्वासी और उद्देश्य की प्रबल भावना वाले हो सकते हैं। आप राजनीति, व्यवसाय या प्रबंधन जैसे नेतृत्व वाले करियर की ओर आकर्षित हो सकते हैं। आप शिक्षण, कोचिंग या सलाह जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं, जहाँ आप दूसरों को प्रेरित और मार्गदर्शन कर सकते हैं। शक्ति और प्रतिष्ठा की आपकी तीव्र इच्छा आपको कानून, वित्त या सामाजिक कार्य जैसे क्षेत्रों में रुचि रखने के लिए प्रेरित कर सकती है।

ज्येष्ठा नक्षत्र धन और भौतिक सफलता से भी संबंधित है। इसलिए, ज्येष्ठा नक्षत्र में बुध का होना आपके प्रयासों में सफल होने की प्रवृत्ति तथा धन एवं भौतिक सफलता की तीव्र इच्छा का

संकेत दे सकता है। आपके पास बाधाओं को दूर करने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता हो सकती है, जिससे आप जीवन के विभिन्न पहलुओं में सफल हो सकते हैं।

कुण्डली में बुध के कमजोर होने के प्रभाव –

जब आपका बुध कमज़ोर होता है, तो आपमें अपरिपक्वता के लक्षण दिख सकते हैं या अपनी बुद्धि को पूर्णतः विकसित करना चुनौतीपूर्ण हो सकता हैं। आप भाषण समस्याओं, तंत्रिका तंत्र विकारों से भी जूझ सकते हैं, अथवा स्वयं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में असमर्थ महसूस कर सकते हैं।

यदि आप अपने जीवन में इनमें से किसी भी चुनौती या समस्या का सामना कर रहें हैं, तो आप निम्नलिखित में से किसी भी उपाय को अपनाने पर विचार कर सकते हैं :–

(1) पतंजलि योग सूत्र में वर्णित इंद्रियों को वापस लेने की कला, प्रत्याहार का अभ्यास करें। यह ज्येष्ठा नक्षत्र के लिए एक प्रभावी उपाय है, जिसके अधिपति देव, भगवान इंद्र, इंद्रियों को नियंत्रित करते हैं।

(2) इस नक्षत्र का सम्मान करने का एक और तरीका भगवान शिव का पवित्र भस्म से अभिषेक करना है।

(3) लिखित जप, मंत्र लिखने की क्रिया, का अभ्यास करने के लिए एक मंत्र पत्रिका रखें। केतु के वृश्चिक राशि में उच्च होने और स्याही का प्रतीक मंगल, जो इस नक्षत्र का स्वामी है, के साथ संबंध होने के कारण यह अभ्यास ज्येष्ठा नक्षत्र के लिए विशेष रूप से प्रभावी है।

(4) ज्येष्ठा नक्षत्र से संबंधित पशु, नर हिरण या खरगोश का चित्र बनाने, रेखाचित्र बनाने या पेंटिंग बनाने जैसी रचनात्मक गतिविधियों में संलग्न हों।

गुरू श्रवण (3) में

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो धुर्वोसि वैष्णवमसि विष्नेत्वा। ॐ विष्णवे नमः।

बीज – मंत्र	ओम मम्
नाम – मंत्र	ॐ श्रवणाय नमः।
देवता – मंत्र	ॐ विष्णवे नमः।

देवी–देवता	विष्णु
शक्ति	संहनन शक्ति
गुण (त्रिगुण)	सत्व (स त र)
स्वभाव	चर
गण (स्वभाव)	देव
त्रि–मूर्ति	ब्रह्मा
गतिविधि (कार्य–शैली)	धैर्ययुक्त
पुरुषार्थ	अर्थ
त्रिदोष	कफ (अंत्य)
वर्ण (जाति)	चाण्डाल
गोत्र (कबीला)	वशिष्ठ
पंच महाभूत	वायु
अभिविन्यास	उर्ध्व मुख
लिंग (योनि)	वानर (स्त्री)
पक्षी	तीतर (स्त्री)
पंचपक्षी	कुक्कुट – मुर्गा
दिशा	उत्तर
पौधा	अर्क, मदार
रंग	हल्का नीला
चंद्र मास	श्रावण मास के पहले 9 दिन
चंद्र तिथि	तृतीया
प्रभाव	सुखद
गणेश (गणपति)	द्विमुख गणपति
नित्य योग	वज्र
नाड़ी	अन्त्य (अन्त)
रज्जू	आरोह –कण्ठ
गुण–धर्म	धातु
प्रक्रिया	सृजन
नक्षत्र गणना	3

आपके जीवन में गुरू का प्रभाव

बृहस्पति को प्रायः विकास और प्रचुरता का ग्रह माना जाता है, जो महिलाओं की कुंडली में पति का प्रतिनिधित्व करता है। यह शिक्षकों या गुरुओं, आध्यात्मिक कर्तव्यों (धर्म), नैतिक सिद्धांतों तथा धन और सौभाग्य सहित भौतिक समृद्धि से भी जुड़ा है। बृहस्पति रचनात्मकता का समर्थन करता है, बच्चों के कल्याण को प्रभावित करता है, तथा आशावाद एवं सकारात्मक मानसिकता विकसित करने में मदद करता है। यह उदारता, आत्म–साक्षात्कार, आध्यात्मिकता और कानून व धर्म जैसे उच्च मूल्यों के प्रति समर्पण को भी प्रोत्साहित करता है।

गुरू श्रवण नक्षत्र में

श्रवण नक्षत्र में बृहस्पति के होने से, आप संवाद करने में बहुत कुशल हैं। आप स्पष्ट रूप से बोल और लिख सकते हैं, जिससे आपके विचार दूसरों के लिए समझना आसान हो जाता है। यह प्रतिभा आपको शिक्षण, सार्वजनिक भाषण या लेखन जैसी नौकरियों में मदद कर सकती है। आप सीखने और शिक्षा को महत्व देने की भी तीव्र इच्छा रखते हैं। आपको ज्ञान प्राप्त करना अच्छा लगता है और आप जो जानते हैं उसका विस्तार करने के लिए उच्च शिक्षा या उन्नत अध्ययन कर सकते हैं।

आप परंपरा और सांस्कृतिक विरासत के प्रति गहरा सम्मान रखते हैं। आप अपनी सांस्कृतिक जड़ों की सराहना करते हैं तथा पारंपरिक मूल्यों एवं प्रथाओं को संरक्षित करने का लक्ष्य रखते हैं। आप बारीकियों पर पूरा ध्यान देते हैं और अपने काम में सावधानी बरतते हैं, ऐसे व्यवसायों में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं जिनमें सटीकता की आवश्यकता होती है, जैसे लेखांकन, इंजीनियरिंग या अनुसंधान।

दूसरों की सेवा के माध्यम से नेतृत्व करना आपका एक और मजबूत पक्ष है। आप उदाहरण

प्रस्तुत करते हैं और अपनी दयालुता और उदारता से लोगों को प्रेरित करते हैं। समाज की मदद करना और स्वयंसेवी कार्य करना आपको संतुष्टि का एहसास कराता है। परिवार आपके लिए महत्वपूर्ण है, और आप अपने प्रियजनों की भलाई को प्राथमिकता देते हैं, उनका समर्थन करने में खुशी पाते हैं।

आध्यात्मिक रूप से, आप मार्गदर्शन और ज्ञान चाहते हैं, प्रायः आध्यात्मिक शिक्षकों या गुरुओं की मदद से जीवन को आगे बढ़ाते हैं। आप ईमानदारी और निष्ठा के लिए प्रतिबद्ध हैं, खुद को उच्च नैतिक मानकों पर रखते हैं और दूसरों से सम्मान अर्जित करते हैं। आपका समस्या-समाधान कौशल मजबूत है, और आप जटिल मुद्दों के व्यावहारिक समाधान खोजने में माहिर हैं, जो प्रबंधन या परामर्श की भूमिकाओं में मूल्यवान हो सकता है।

कुण्डली में गुरू के कमजोर होने के प्रभाव –

जब आपका बृहस्पति कमजोर होता है, तो आप अत्यधिक आशावादी और अत्यधिक निराशावादी होने के बीच झूल सकते हैं, जिसके कारण गलत अनुमान लगा सकते हैं या जोखिम भरे निर्णय ले सकते हैं। यह कमजोरी आपको कानूनी परेशानियों के जोखिम में भी डाल सकती है, जैसे मुकदमेबाजी में हारना। इसके अतिरिक्त, आप गुरुओं या सलाहकारों के साथ संघर्ष में पड़ सकते हैं, और अपने जीवन में असंतुलन की समग्र भावना महसूस कर सकते हैं।

यदि आप अपने जीवन में इनमें से किसी भी चुनौती या समस्या का सामना कर रहें हैं, तो आप निम्नलिखित में से किसी भी उपाय को अपनाने पर विचार कर सकते हैं :-

(1) श्रवण नक्षत्र के स्पंदन के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर शीश झुकांए और प्रार्थना करें।

(2) श्रवण नक्षत्र से संबंधित पशु, मादा बंदर का चित्र बनाकर, रेखाचित्र बनाकर या पेंट करके रचनात्मक गतिविधियों में संलग्न हों।

(3) समृद्धि, शांति और दैवीय कृपा प्राप्त करने के लिए महाराज गोपाल यंत्र की पूजा करें।

(4) उन दिनों का ध्यान रखें जब चंद्रमा श्रावण मास में और उसके चंद्र मास में भ्रमण करता है। ये समय नई परियोजनाएँ शुरू करने, महत्वपूर्ण निर्णय लेने या बड़े लक्ष्य निर्धारित करने के लिए एकदम सही हैं क्योंकि नक्षत्र की ऊर्जा आपका साथ देगी।

(5) शक्ति, सुरक्षा और दृढ़ता के लिए भगवान हनुमान का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु, विशेष रूप से

शनिवार को, हनुमान चालीसा सुनें। यह अभ्यास श्रवण नक्षत्र के आध्यात्मिक विषयों से मेल खाता है तथा मानसिक स्पष्टता और लचीलेपन को बढ़ावा देता है।

शुक्र श्रवण (1) में

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो धुर्वोसि वैष्णवमसि विष्नेत्वा। ॐ विष्णवे नमः।

बीज – मंत्र	ओम मम्
नाम – मंत्र	ॐ श्रवणाय नमः।
देवता – मंत्र	ॐ विष्णवे नमः।

देवी–देवता	विष्णु
शक्ति	संहनन शक्ति
गुण (त्रिगुण)	सत्व (स त र)
स्वभाव	चर
गण (स्वभाव)	देव
त्रि–मूर्ति	ब्रह्मा
गतिविधि (कार्य–शैली)	धैर्ययुक्त
पुरुषार्थ	अर्थ
त्रिदोष	कफ (अंत्य)
वर्ण (जाति)	चाण्डाल
गोत्र (कबीला)	वशिष्ठ
पंच महाभूत	वायु
अभिविन्यास	उर्ध्व मुख
लिंग (योनि)	वानर (स्त्री)
पक्षी	तीतर (स्त्री)
पंचपक्षी	कुक्कुट – मुर्गा
दिशा	उत्तर
पौधा	अर्क, मदार
रंग	हल्का नीला
चंद्र मास	श्रावण मास के पहले 9 दिन
चंद्र तिथि	तृतीया
प्रभाव	सुखद
गणेश (गणपति)	द्विमुख गणपति
नित्य योग	वज्र
नाड़ी	अन्त्य (अन्त)
रज्जू	आरोह –कण्ठ
गुण–धर्म	धातु
प्रक्रिया	सृजन
नक्षत्र गणना	3

आपके जीवन में शुक्र का प्रभाव

शुक्र प्रायः पुरुष की कुंडली में पत्नी या प्रेयसी का प्रतीक होता है तथा प्रेम, कला एवं रचनात्मकता से गहराई से जुड़ा होता है। यह ग्रह सुंदरता, आराम, आकर्षण और स्त्रीत्व के सार से भी जुड़ा है। शुक्र के प्रभाव में, व्यक्ति सामंजस्य, कविता, संगीत और नृत्य की ओर आकर्षित हो सकता है, साथ ही विभिन्न प्रकार की विलासिता और परिवहन के साधनों का आनंद भी ले सकता है। कुल मिलाकर, शुक्र आंतरिक और बाहरी दोनों तरह की सुंदरता को दर्शाता है, जो इस बात पर प्रकाश डालता है कि हम प्रेम तथा जीवन की बेहतरीन चीज़ों का अनुभव कैसे करते हैं।

शुक्र श्रवण नक्षत्र में

शुक्र श्रवण नक्षत्र में है, इसे आम तौर पर एक बहुत ही सकारात्मक स्थिति के रूप में देखा जाता है। यह ग्रह स्थिति आपके लिए सौभाग्य, धन और समृद्धि लाने वाली मानी जाती है। आप पाएंगे कि आपके रिश्ते और साझेदारी भी इस स्थिति से लाभान्वित होते हैं, जिससे वे अधिक सफल और सामंजस्यपूर्ण बनते हैं।

यहाँ शुक्र के होने से आप बहुत दृढ़-संकल्पित बन सकते हैं और यह आपके मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने में आपकी मदद कर सकता है। आप देखेंगे कि आपमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक मजबूत इच्छा है और चीजों को पूरा करने की दृढ़ता है, चाहे वे कितनी भी चुनौतीपूर्ण क्यों न हों।

श्रवण नक्षत्र अधिगम और ज्ञान से संबंधित है। इसका अर्थ है कि यह ग्रह स्थिति आपकी शैक्षिक गतिविधियों और व्यक्तिगत विकास में भी सफलता ला सकती है। आप पाएंगे कि आप खुद को

बेहतर बनाने तथा नए कौशल एवं ज्ञान प्राप्त करने के लिए अधिक अनुशासित और समर्पित हैं। यह विशेष रूप से लाभदायक हो सकता है यदि आप विद्यार्थी हैं या आप ऐसे पेशे में हैं जिसमें निरंतर सीखने की आवश्यकता होती है।

कुण्डली में शुक्र के कमजोर होने के प्रभाव –

जब आपका शुक्र कमजोर होता है, तो आप भौतिक सुखों से अत्यधिक जुड़ सकते हैं और जीवन में सच्ची सद्भाव का अनुभव करना कठिन हो सकता है। आप कला, संगीत या कविता के प्रति प्रशंसा खो सकते हैं, और आप ऐसा धन इकट्ठा कर सकते हैं जो खाली या अर्थहीन लगता है। यह असंतुलन आपके रिश्तों में भी समस्याएँ पैदा कर सकता है, जिससे गहरे स्तर पर जुड़ना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

यदि आप अपने जीवन में इनमें से किसी भी चुनौती या समस्या का सामना कर रहें हैं, तो आप निम्नलिखित में से किसी भी उपाय को अपनाने पर विचार कर सकते हैं :–

(1) नकारात्मक प्रभावों को कम करने तथा अपने जीवन में शांति एवं सद्भाव लाने के लिए नियमित रूप से गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र और विष्णु सहस्रनाम मंत्र जैसे शक्तिशाली मंत्रों का जाप करें।

(2) श्रवण नक्षत्र से संबंधित पशु, मादा बंदर का चित्र बनाकर, रेखाचित्र बनाकर या पेंट करके रचनात्मक गतिविधियों में संलग्न हों।

(3) अपनी माँ के चरण स्पर्श करके और उनका आशीर्वाद लेकर अपना सम्मान और कृतज्ञता प्रकट करें।

(4) नक्षत्र की ऊर्जा के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए, प्रत्येक पाद को समर्पित करते हुए, विष्णु सहस्रनाम श्लोक 1, 2, 3 और 4 का पाठ करें।

(5) ज्ञान और वाणी की देवी से जुड़ने के लिए सरस्वती मंत्र, 'ऊँ ऐं सरस्वतीये नमः' का 108 बार जाप करें। यह जाप सीखने और रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ाने के लिए विशेष रूप से शक्तिशाली है।

शनि अरिद्रा (1) में

ऊँ नमस्ते रूद्र मन्यवऽ उतात इषवे नमः
बाहुभ्यां मुतते नमः। ऊँ रुद्राय नमः।

बीज – मंत्र	ओम ऐं
नाम – मंत्र	ऊँ आर्द्रायै नमः।
देवता – मंत्र	ऊँ रुद्राय नमः।

देवी–देवता	रूद्र
शक्ति	यत्न शक्ति
गुण (त्रिगुण)	तमस (र त स)
स्वभाव	तीक्ष्ण
गण (स्वभाव)	मनुष्य
त्रि–मूर्ति	महेश
गतिविधि (कार्य–शैली)	संतुलित
पुरुषार्थ	काम
त्रिदोष	वात (अध्या)
वर्ण (जाति)	क्रूर
गोत्र (कबीला)	पुलह
पंच महाभूत	जल
अभिविन्यास	उर्ध्व मुख
लिंग (योनि)	श्वान (स्त्री)
पक्षी	एनड्रिल
पंचपक्षी	पिंगंल – उल्लू
दिशा	दक्षिण पूर्व
पौधा	कृष्णागरू, तेंदु, आबनूस
रंग	हरा
चंद्र मास	मार्गशीर्ष मास के मध्य के ९ दिन
चंद्र तिथि	एकादशी
प्रभाव	शुभप्रद
गणेश (गणपति)	हेरम्बा गणपति
नित्य योग	इन्द्र
नाड़ी	आद्य (आरम्भ)
रज्जू	अवरोह –कण्ठ
गुण–धर्म	जीव
प्रक्रिया	विघटन
नक्षत्र गणना	1

आपके जीवन में शनि का प्रभाव

शनि को प्रायः जीवन के कठिन या सीमित पहलुओं, जैसे मृत्यु, बुढ़ापा और बीमारी से जोड़ा जाता है। यह व्यक्ति की दीर्घायु को भी प्रभावित कर सकता है तथा हानि या दुःख की भावनाएँ उत्पन्न कर सकता है। यह ग्रह संपत्ति, सौभाग्य एवं लोगों के सामने आने वाली बाधाओं या संघर्षों से जुड़ा है। इसके अतिरिक्त, शनि दुर्भाग्य, कठिन कर्मों और कठिनाइयों पर विजय पाने से उत्पन्न होने वाली उदासीनता का प्रतिनिधित्व करता है।

शनि अरिद्रा नक्षत्र में

शनि आर्द्रा नक्षत्र में है, आपको ऋण या कर्ज से जुड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जिसका प्रभाव आपकी आर्थिक स्थिति पर पड़ सकता है। आप निम्न-स्तरीय नौकरियाँ या ऐसे पद ग्रहण करने की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं जो आपकी पूरी क्षमता को प्रतिबिंबित नहीं करते। यह स्थिति आपके पिता के साथ तनावपूर्ण संबंधों का भी संकेत दे सकती है, जिसमें संभवतः असहमति या टकराव शामिल हो सकते हैं। दोस्ती कभी-कभी आपको भटका सकती है, क्योंकि आप ऐसे व्यक्तियों की ओर आकर्षित हो सकते हैं या संगति कर सकते हैं जिनका आप पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, अनैतिक या अवैध तरीकों से आय अर्जित करने की संभावना है, इसलिए संतुलित और ईमानदार जीवन जीने के लिए अपने विकल्पों के प्रति सचेत रहना आवश्यक है।

कुण्डली में शनि के कमजोर होने के प्रभाव –

जब आपका शनि कमजोर होता है, तो आपको लगातार स्वास्थ्य समस्याओं का अनुभव हो सकता है, जिसमें ठंड के मौसम से निपटने में कठिनाई भी शामिल है।

आप खुद को लगातार बाधाओं और बार-बार होने वाले विलंब से जुझते हुए पा सकते हैं, साथ ही समय प्रबंधन और अनुशासन के साथ संघर्ष भी कर सकते हैं। एक कमजोर शनि कम ध्यान अवधि, सुन्नता और यहां तक कि अवसाद या पुरानी बीमारियों का कारण भी बन सकता है। अंततः, आप इन चुनौतियों में फँसा या बंधा हुआ महसूस कर सकते हैं, जिससे जीवन में आगे बढ़ना मुश्किल हो जाता है।

यदि आप अपने जीवन में इनमें से किसी भी चुनौती या समस्या का सामना कर रहें हैं, तो आप निम्नलिखित में से किसी भी उपाय को अपनाने पर विचार कर सकते हैं :-

(1) ध्यान से सुनने के लिए समय निकालें और जल्दबाज़ी में निष्कर्ष निकालने से बचें, विशेषकर उन दिनों में जब चंद्रमा आर्द्रा नक्षत्र में गोचर कर रहा हो। यह नक्षत्र भावनाओं और विचारों को प्रभावित कर सकता है, इसलिए धैर्य और सचेतनता का अभ्यास करने से आपको परिस्थितियों पर सोच-समझकर प्रतिक्रिया देने में मदद मिलेगी।

(2) राहु के प्रभाव को शांत करने तथा शांति एवं समृद्धि प्राप्त करने के लिए भगवान शिव या भगवान गणेश को समर्पित अनुष्ठान और पूजा करें।

(3) सुरक्षा और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए मृत्युंजय यंत्र की पूजा करें।

(4) विष्णु सहस्रनाम श्लोक 45, 46, 47 और 48 का पाठ करें, प्रत्येक पाद को एक समर्पित करते हुए।

(5) शनिवार या बुधवार को, काली ऊन लें, उसे अपने या किसी ज़रूरतमंद व्यक्ति के चारों ओर घुमाएँ, और फिर नकारात्मकता दूर करने के लिए उसे अग्नि में जला दें।

राहु मूला (2) में

ऊँ मातेवपुत्रम पृथिवी पुरीष्यमग्नि गवं स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदान प्रजापति विश्वकर्मा विमुन्च्त।

बीज – मंत्र	ओम नम्, ओम फम्
नाम – मंत्र	ऊँ मूलाय नमः।
देवता – मंत्र	ऊँ निऋतये नमः।

देवी–देवता	निरृति
शक्ति	बरहना शक्ति
गुण (त्रिगुण)	तमस (स र र)
स्वभाव	तीक्ष्ण
गण (स्वभाव)	राक्षस
त्रि–मूर्ति	ब्रह्मा
गतिविधि (कार्य–शैली)	सक्रिय
पुरुषार्थ	काम
त्रिदोष	वात (अध्या)
वर्ण (जाति)	क्रूर
गोत्र (कबीला)	पुलस्थ
पंच महाभूत	वायु
अभिविन्यास	अधो मुख
लिंग (योनि)	श्वान (पुरुष)
पक्षी	लाल गिद्ध
पंचपक्षी	कुक्कुट – मुर्गा
दिशा	उत्तर पश्चिम
पौधा	अजकर्ण, डामर, साल
रंग	भूरा पीला
चंद्र मास	ज्येष्ठ मास का दूसरा भाग
चंद्र तिथि	प्रतिपदा, चतुर्थी
प्रभाव	हानिप्रद
गणेश (गणपति)	उद्दंड गणपति
नित्य योग	ध्रुव
नाड़ी	आद्य (आरम्भ)
रज्जू	आरोह –पाद
गुण–धर्म	धातु
प्रक्रिया	सृजन
नक्षत्र गणना	11

आपके जीवन में राहु का प्रभाव

राहु को प्रायः बीमारी, मानसिक अशांति और बड़े पैमाने पर सामाजिक समस्याओं या अव्यवस्थाओं से जोड़ा जाता है। यह बहिष्कृत होने की भावना का भी संकेत दे सकता है, जिससे व्यक्ति लीक से हटकर सोचने के लिए प्रेरित होता है। इसके अतिरिक्त, राहु प्रबल इच्छाओं को भी बढ़ावा दे सकता है, जिससे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में लोकप्रियता या प्रसिद्धि मिल सकती है।

राहु मूला नक्षत्र में

राहु मूला नक्षत्र में है, यह बृहस्पति की राशि और केतु के नक्षत्र में है। मूला नक्षत्र जीवन के गुप्त, रहस्यमय या आध्यात्मिक पक्ष से जुड़ा हुआ है। इसका अर्थ है कि आप इन क्षेत्रों में बहुत रुचि रखते हैं और इनके प्रति जुनूनी हो सकते हैं। मूला नक्षत्र का प्रतिनिधित्व जड़ों द्वारा किया जाता है, जो किसी भी तरह के शोध का प्रतीक है। मूला नक्षत्र में राहु आपको शोध के माध्यम से और अधिक जानने के लिए उत्सुक बना सकता है, चाहे वह चिकित्सा, तकनीकी, वित्तीय या आध्यात्मिक हो। आपको अपना ज्ञान दूसरों के साथ साझा करने में आनंद आ सकता है। आप एक आदर्श रहस्यवादी और तंत्र-मंत्र विशेषज्ञ हो सकते हैं, जो हमेशा जीवन के गहनतम रहस्यों को उजागर करने की कोशिश करते हैं।

कुण्डली में राहु के कमजोर होने के प्रभाव –

जब आपका राहु कमज़ोर होता है, तो आपको मानसिक और भावनात्मक असंतुलन का सामना करना पड़ सकता है, जैसे कि तंत्रिका संबंधी कमज़ोरी और यहाँ तक कि

खुद को भूत-प्रेत के वश में महसूस करना। आप अपने दैनिक जीवन में असामान्य व्यवहार या असामान्यताएँ देख सकते हैं, साथ ही नशीली दवाओं की ओर जाने या मानसिक शक्तियों से प्रभावित होने की संभावना बढ़ सकती है। इसके अतिरिक्त, एक कमज़ोर राहु आपके लिए हानिकारक पैटर्न या पिछले अनुभवों को छोड़ना मुश्किल बना सकता है।

यदि आप अपने जीवन में इनमें से किसी भी चुनौती या समस्या का सामना कर रहें हैं, तो आप निम्नलिखित में से किसी भी उपाय को अपनाने पर विचार कर सकते हैं :-

(1) कम से कम हर छह महीने में यज्ञ या होम में भाग लें। ये पवित्र अग्नि अनुष्ठान पर्यावरण को शुद्ध करते हैं तथा समृद्धि और कल्याण के लिए दिव्य आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

(2) राशि चक्र की ऊर्जा के साथ तालमेल बिठाने और ज्ञान व सकारात्मकता को बढ़ावा देने के लिए बृहस्पति होरा के दौरान, धनु राशि के मंत्र 'ॐ श्रीं देवकृष्णाय उर्ध्वदंताय नमः' का जाप करें।

(3) मूला नक्षत्र का प्रतीक अंकुश, मार्गदर्शन का प्रतीक है, जो दूसरों का नेतृत्व करने और उनका समर्थन करने की आपकी क्षमता को मज़बूत करता है।

(4) मृत्यु के सभी रूपों के बारे में सोचने के लिए समय निकालने से आपको मूला नक्षत्र की ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग करने में मदद मिल सकती है। यह गंभीर लग सकता है, लेकिन यह आपको जीवन चक्रों की गहरी समझ की ओर ले जा सकता है।

(5) मूला नक्षत्र से संबंधित गणेश, उद्दंड गणपति को सम्मानित करने के लिए 'ॐ उद्दंड गणपतये नमः' का 108 बार जाप करें। यह जाप बाधाओं को दूर करने में मदद करता है तथा नई शुरुआत एवं विकास के लिए आशीर्वाद प्रदान करता है।

केतु मृगशिर (4) में

ऊँ सोमधेनु गवं सोमाअवन्तुमाशु गवं सोमोवीरः
कर्मणयन्ददाति
यदत्यविदध्य गवं सभेयम्पितृ श्रवणयोम। ऊँ चंद्रमसे नमः।

बीज – मंत्र	ओम एं
नाम – मंत्र	ऊँ मृगशीर्षाय नमः।
देवता – मंत्र	ऊँ चंद्रमसे नमः।

देवी–देवता	सोमदेव
शक्ति	प्रिणाना शक्ति
गुण (त्रिगुण)	तमस (र त त)
स्वभाव	मृदु
गण (स्वभाव)	देव
त्रि–मूर्ति	विष्णु
गतिविधि (कार्य–शैली)	धैर्ययुक्त
पुरुषार्थ	मोक्ष
त्रिदोष	पित्त (मध्य)
वर्ण (जाति)	कृषक
गोत्र (कबीला)	पुलस्थ
पंच महाभूत	पृथ्वी
अभिविन्यास	त्रियंक मुख
लिंग (योनि)	सर्प (स्त्री)
पक्षी	मुर्गी
पंचपक्षी	गरूड़ – गिद्ध
दिशा	पूर्व
पौधा	खदिर, खैर
रंग	हल्का स्लेटी
चंद्र मास	मार्गशीर्ष मास के पहले ९ दिन
चंद्र तिथि	पंचमी
प्रभाव	शुभप्रद
गणेश (गणपति)	क्षिप्रा गणपति
नित्य योग	व्रहमा
नाड़ी	मध्य
रज्जू	आरोह –सिर
गुण–धर्म	मूल
प्रक्रिया	प्रतिपालन
नक्षत्र गणना	3

आपके जीवन में केतु का प्रभाव

केतु जीवन के उन क्षेत्रों का संकेत दे सकता है जिनमें चोट, संघर्ष और समापन शामिल हैं। यह त्याग, गहरी समझ की खोज तथा आध्यात्मिक या मानसिक अंतर्दृष्टि की खोज का भी प्रतिनिधित्व करता है। केतु के प्रभाव में, व्यक्ति अधिक एकाग्रता विकसित कर सकता है, आध्यात्मिक क्षमताओं को जागृत कर सकता है एवं परम मुक्ति या मोक्ष के लिए प्रयास कर सकता है।

केतु मृगशिर नक्षत्र में

केतु मृगशिरा नक्षत्र में है, आपको अपने आस-पास की दुनिया के बारे में जानने और सीखने की तीव्र इच्छा हो सकती है। आप जिज्ञासु हैं और जीवन के रहस्यों को समझना चाहते हैं। यह स्थिति आपको विभिन्न अनुभवों और मुठभेड़ों के माध्यम से सत्य और ज्ञान की तलाश करने के लिए प्रेरित करती है।

आप बहुत अनुकूलनीय और लचीले हो सकते हैं, परिवर्तनों और अनिश्चितताओं को आसानी से संभालने में सक्षम हैं। केतु आपको नए विचारों और अवसरों के लिए और भी अधिक खुला बनाता है, जिससे आपको आगे बढ़ने और विभिन्न स्थितियों के अनुकूल होने में मदद मिलती है। आपकी रचनात्मक अभिव्यक्ति और संचार कौशल भी मजबूत हैं। चाहे लिखने, बोलने या अभिव्यक्ति के अन्य रूपों के माध्यम से, आपके पास अपने सोच-विचारों को प्रभावी ढंग से साझा करने की प्रतिभा है।

अपनी इंद्रियों के प्रति बढ़ी हुई जागरूकता के साथ, आप सुंदरता और जीवन की बेहतरीन चीजों की सराहना करते हैं। केतु इस प्रशंसा को गहरा करता है, लेकिन आध्यात्मिक संतुष्टि के लिए आपको इन्द्रिय सुखों से परे देखने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। आपको बेचैनी की भावना

तथा यात्रा करने एवं नए रोमांच का अनुभव करने की तीव्र इच्छा महसूस हो सकती है। जबकि यह आपके क्षितिज को व्यापक बना सकता है, यह स्थिरता और ध्यान बनाए रखना भी कठिन बना सकता है।

मृगशिरा नक्षत्र में केतु के साथ आपका अंतर्ज्ञान बढ़ जाता है। आपके पास गहरी सच्चाइयों को महसूस करने और आध्यात्मिक क्षेत्र से अंतर्दृष्टि प्राप्त करने की एक स्वाभाविक क्षमता है। यह सहज ज्ञान आपको जीवन की चुनौतियों के माध्यम से मार्गदर्शन करने में मदद करता है, जिससे आप अपनी आध्यात्मिक यात्रा को आगे बढ़ाते हुए स्पष्टता और समझ प्राप्त करते हैं।

कुण्डली में केतु के कमजोर होने के प्रभाव –

जब आपका केतु कमज़ोर होता है, तो आप आत्म-संदेह, आत्मविश्वास की कमी और आत्म-मूल्य में कमी की भावनाओं से जूझ सकते हैं। ये चुनौतियाँ आपको शराब के सेवन या धूम्रपान जैसी आदतों से निपटने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, आप आकस्मिक, अप्रत्याशित परिवर्तनों का अनुभव कर सकते हैं और पुरानी समस्याओं या पैटर्न को भूल पाना आपके लिए कठिन हो सकता है।

यदि आप अपने जीवन में इनमें से किसी भी चुनौती या समस्या का सामना कर रहें हैं, तो आप निम्नलिखित में से किसी भी उपाय को अपनाने पर विचार कर सकते हैं :-

(1) नए कार्यों पर आगे बढ़ने से पहले, उन कार्यों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करें जिन्हें आपने पहले ही शुरू कर दिया है। मृगशिरा नक्षत्र एक संरचित और व्यवस्थित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है, जो आपके काम में सफलता और स्पष्टता ला सकता है। उत्पादक और केंद्रित रहने के लिए इस दौरान एक साथ कई काम करने से बचें।

(2) यदि आपको मंगल ग्रह की ऊर्जा की कमी महसूस होती है या इसकी तीव्रता को नियंत्रित करने में कठिनाई होती है, तो मार्शल आर्ट की कक्षाएं लेने या ऐसी शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने पर विचार करें जो आपकी ऊर्जा को संतुलित करने में मदद करें।

(3) भगवान शिव का थिराविया पाउडर/अर्जुन की छाल के चूर्ण से अभिषेक करना, इस नक्षत्र को सम्मानित करने का एक अन्य उपाय है।

(4) मंगलवार को, बाधाओं को दूर करने और दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए गणेश मंदिर में नारियल फोड़ें।

(5) मृगशिरा नक्षत्र में चंद्रमा की गति और उसके चंद्र मास पर ध्यान दें। ये महत्वपूर्ण कार्य शुरू

करने, बड़े निर्णय लेने या व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करने के लिए बेहतरीन समय हैं।

विभिन्न नक्षत्रों में भाव स्वामियों का विश्लेषण

पहले भाव का स्वामी बुध ज्येष्ठा में

आपका लग्नेश ज्येष्ठा नक्षत्र में हैं, आपका व्यक्तित्व शक्तिशाली और प्रखर है जो ध्यान आकर्षित करता है। आपमें नियंत्रण और अधिकार की स्वाभाविक इच्छा होती है, और प्रायः चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में आप स्वयं को नियंत्रण में रखते हैं। जीवन में आने वाली बाधाएँ परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक का काम करती हैं, जिससे आपको अधिक मज़बूत और लचीला बनने में मदद मिलती है।

दूसरे भाव का स्वामी शुक्र श्रवण में

श्रवण नक्षत्र में आपका द्वितीयेश होने से, आपके पास संवाद करने का एक बुद्धिमान और विचारशील तरीका है जो दूसरों के साथ प्रतिध्वनित होता है। वित्तीय सफलता प्रायः आपके ज्ञान की खोज और उसे प्रभावी ढंग से साझा करने की आपकी क्षमता के माध्यम से आती है। आप अधिगम और मार्गदर्शन को अत्यधिक महत्व देते हैं, तथा दूसरों को सिखाने और उनके मार्गदर्शन से होने वाले विकास की सराहना करते हैं।

तीसरे भाव का स्वामी मंगल अश्विनी में

आपका तृतीयेश अश्विनी नक्षत्र में हैं, आपका संवाद ऊर्जावान और त्वरित है, जो प्रायः दूसरों को प्रेरित और प्रोत्साहित करता है। आप अपने भाई-बहनों के साथ मज़बूत और सार्थक संबंध साझा करते हैं, उनके समर्थन और जुड़ाव को महत्व देते हैं। आपका साहसी एवं अग्रणी रवैया आपको साहसिक कदम उठाने तथा आत्मविश्वास के साथ नए अवसरों की खोज करने के लिए प्रेरित करता है।

चौथे भाव का स्वामी गुरू श्रवण में

आपका चतुर्थेश श्रवण नक्षत्र में होने के कारण, आप अपने पारिवारिक जीवन में ज्ञान और चिंतनशील स्वभाव लाते हैं, प्रायः विचारशील अंतर्दृष्टि के साथ प्रियजनों का मार्गदर्शन करते हैं। आप घर में अधिगम और ज्ञान को महत्व देते हैं, विकास और समझ के वातावरण को बढ़ावा देते हैं। आपके माता-पिता के साथ आपके रिश्ते सामंजस्यपूर्ण होने की संभावना है, जिसकी विशेषता आपसी सम्मान और एक मज़बूत भावनात्मक जुड़ाव है।

पाँचवें भाव का स्वामी शनि अरिद्रा में

आपका पंचमेश आर्द्रा नक्षत्र में है, आपकी रचनात्मकता विश्लेषणात्मक और संवादात्मक है, जो प्रायः गहन विचार और तीक्ष्ण बुद्धि को दर्शाती है। प्रेम संबंधों में, आप भावनात्मक उतार-चढ़ाव का अनुभव कर सकते हैं, जिससे बेहतर समझ और व्यक्तिगत विकास हो सकता है। एक अभिभावक के रूप में, आप परिवर्तनकारी और विकासोन्मुखी दृष्टिकोणों को महत्व देते हैं, तथा अपने बच्चों को सार्थक अनुभवों के माध्यम से सीखने और विकसित होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

छठे भाव का स्वामी शनि अरिद्रा में

आपका षष्ठेश आर्द्रा नक्षत्र में है, आप स्वास्थ्य संबंधी मामलों में विश्लेषणात्मक और रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाते हैं, और समस्याओं के मूल को समझने और उनका समाधान करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। आप सेवा में बौद्धिक तरीकों को महत्व देते हैं, नवीन और सुविचारित समाधानों को प्राथमिकता देते हैं। चुनौतियों का सामना तार्किक सोच से करते हैं, जिससे आप समस्याओं का व्यवस्थित रूप से विश्लेषण कर पाते हैं और प्रभावी समाधान खोज पाते हैं।

सातवें भाव का स्वामी गुरू श्रवण में

आपका सप्तमेश श्रवण नक्षत्र में है, आप रिश्तों को बुद्धिमत्ता और विचारशीलता के साथ निभाते हैं, गहरी समझ और सार्थक संबंधों की तलाश करते हैं। आप साझेदारी में अधिगम और ज्ञान को महत्व देते हैं, तथा ऐसे रिश्तों को प्राथमिकता देते हैं जो विकास और साझा बौद्धिक अन्वेषण को बढ़ावा देते हैं। आपके रिश्ते आपसी सम्मान तथा व्यक्तिगत व सामूहिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने से और भी मज़बूत होने की संभावना है।

आठवें भाव का स्वामी मंगल अश्विनी में

आपका अष्टमेश अश्विनी नक्षत्र में है, आप ऊर्जा और परिवर्तन की इच्छा के साथ गुप्त मामलों का सामना करते हैं। आप स्वतंत्रता को महत्व देते हैं तथा साझा संसाधनों में आत्म-खोज पर ध्यान केंद्रित करते हैं, संयुक्त उद्यमों के प्रबंधन में अग्रणी भूमिका निभाते हैं।

नौवें भाव का स्वामी शुक्र श्रवण में

आपका नवमेश श्रवण नक्षत्र में है, आप उच्च ज्ञान की प्राप्ति के लिए बुद्धि और चिंतन का सहारा लेते हैं, और अपनी समझ को गहरा करने के लिए जो कुछ भी सीखते हैं उस पर ध्यानपूर्वक चिंतन करते हैं। आप अपनी आध्यात्मिक साधना में निरंतर सीखने और बौद्धिक विकास को महत्व देते हैं, तथा सार्थक अंतर्दृष्टि की तलाश करते हैं। आपके ज्ञान और समझ के माध्यम से भाग्य आपका साथ दे सकता है, क्योंकि आपका विचारशील दृष्टिकोण विकास और सफलता के अवसरों को आकर्षित करता है।

दसवें भाव का स्वामी बुध ज्येष्ठा में

आपका दशमेश ज्येष्ठा नक्षत्र में है, आप अपने व्यावसायिक जीवन में तीव्रता और शक्ति लाते हैं, अपने करियर को दृढ़ संकल्प और एकाग्रता के साथ आगे बढ़ाते हैं। आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन आपकी व्यक्तिगत शक्ति और लचीलापन आपको बाधाओं को दूर करने तथा और भी मज़बूत बनने में सक्षम बनाता है। सफलता प्रायः आपकी दृढ़ता की क्षमता के माध्यम से आपको प्राप्त होती है, क्योंकि आपका अटूट दृढ़ संकल्प आपको अपने क्षेत्र में पहचान और उपलब्धियाँ दिलाता है।

ग्यारहवें भाव का स्वामी चन्द्रमा हस्ता में

आपका एकादशेश हस्त नक्षत्र में है, आप धन संचय के लिए एक विस्तृत और कुशल मानसिकता के साथ आगे बढ़ते हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि आपके प्रयास गहन और सुनियोजित हों। आप सामाजिक संपर्क बनाने, विश्वसनीय और उद्देश्यपूर्ण संबंध बनाने में दक्षता और सटीकता को महत्व देते हैं। सफलता प्रायः आपके विवरणों पर ध्यान देने के माध्यम से आपको मिलती है, क्योंकि आपकी सावधानीपूर्ण योजना और सूक्ष्म दृष्टिकोण आपको अपनी आकांक्षाओं को प्रभावी ढंग से प्राप्त करने में मदद करते हैं।

बारहवें भाव का स्वामी सूर्य मूला में

आपका द्वादशेश मूला नक्षत्र में है, आप एकांतवास को गहन परिवर्तन और आत्म-खोज के अवसर के रूप में देखते हैं, तथा अपने बारे में गहन सत्यों को उजागर करने का प्रयास करते हैं। आप अपनी आध्यात्मिक साधनाओं में प्रामाणिकता को महत्व देते हैं, तथा उन प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो आपके सच्चे स्वरूप के साथ संरेखित होती हैं। परिवर्तनकारी और प्रामाणिक अनुभवों के लिए विदेश यात्राएँ हो सकती हैं, जो आपके आध्यात्मिक पथ पर सार्थक विकास और स्पष्टता लाएँगी।

विभिन्न नक्षत्रों में भाव स्वामियों का विश्लेषण

अश्विनी नक्षत्र सातवें भाव में

अश्विनी नक्षत्र आपकी कुण्डली के सप्तम भाव में है, यह संकेत देता है कि आप अपनी साझेदारियों में, चाहे वह विवाह में हो या व्यवसाय में, एक गतिशील और सक्रिय ऊर्जा लाते हैं। आप एक युवा और ऊर्जावान जीवनसाथी की ओर आकर्षित हो सकते हैं जो जीवन के प्रति आपके उत्साह को साझा करता हो। यह स्थिति एक उर्जावान और जीवंत रिश्ते की आपकी इच्छा को दर्शाती है, जहाँ दोनों साथी एक-दूसरे को आगे बढ़ने और सफल होने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते हैं।

भरणी नक्षत्र आठवें भाव में

भरणी नक्षत्र आपकी कुण्डली के अष्टम भाव में है, यह दर्शाता है कि आपको जीवन के गूढ़, गुप्त ज्ञान या रहस्यों की खोज में स्वाभाविक रुचि है। आपको ऐसे परिवर्तनकारी अनुभवों का सामना करना पड़ सकता है जो आपके दृष्टिकोण को आकार देंगे और व्यक्तिगत विकास को गति देंगे। यह स्थिति विरासत प्राप्त करने या साझा संसाधनों से लाभ प्राप्त करने की संभावना को भी दर्शाती है, जो आपकी वित्तीय या भावनात्मक यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

कृतिका नक्षत्र आठवें भाव में

कृतिका नक्षत्र आपकी कुण्डली के आठवें भाव में है, यह परिवर्तन, गूढ़ विद्या एवं जीवन के छिपे रहस्यों को उजागर करने में आपकी गहरी रुचि को दर्शाता है। आपको जीवन के ऐसे गहन अनुभवों का सामना करना पड़ सकता है जो आपको गहरे स्तर पर विकसित होने और सृजन करने की चुनौती देते हैं। यह स्थिति अज्ञात का सामना करने में आपके दृढ़ संकल्प और साहस को दर्शाती है, जिससे आप जटिल परिस्थितियों का सामना लचीलेपन एवं समझ की खोज के साथ कर पाते हैं।

रोहिणी नक्षत्र नौवें भाव में

रोहिणी नक्षत्र आपकी कुण्डली के नवम भाव में है, यह एक दार्शनिक और आध्यात्मिक रूप से प्रवृत्त स्वभाव को इंगित करती है, जो प्रायः जीवन में गहन अर्थ एवं सुंदरता की तलाश करता है। आपको उच्च शिक्षा प्राप्त करने में गहरी रुचि हो सकती है, विशेष रूप से कला, सौंदर्यशास्त्र या रचनात्मकता से संबंधित क्षेत्रों में। यह स्थिति लंबी यात्राओं की संभावना का भी संकेत देती है, जहाँ आपकी यात्राएँ

रचनात्मक प्रेरणा या आध्यात्मिक अन्वेषण से प्रेरित हो सकती हैं, जो आपके क्षितिज को व्यापक एवं आपके दृष्टिकोण को समृद्ध बना सकती हैं।

मृगशिर नक्षत्र नौवें भाव में

मृगशिरा नक्षत्र आपकी कुण्डली के नवम भाव में है, यह एक दार्शनिक और जिज्ञासु स्वभाव का संकेत देता है, जिसमें उच्च ज्ञान प्राप्त करने तथा गहन विचारों का अन्वेषण करने की प्रबल इच्छा होती है। आपको आध्यात्मिक यात्राओं या जीवन व ब्रह्मांड के बारे में आपकी समझ को बढ़ाने वाली यात्राओं में गहरी रुचि हो सकती है। यह स्थिति उच्च शिक्षा में संभावित सफलता का भी संकेत देती है, क्योंकि आपका जिज्ञासु मन एवं सीखने के प्रति प्रेम आपको शैक्षणिक या बौद्धिक गतिविधियों में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद करता है।

अरिद्रा नक्षत्र नौवें भाव में

आर्द्रा नक्षत्र आपकी कुण्डली के नवम भाव में है, यह एक दार्शनिक स्वभाव और मज़बूत संवाद कौशल का संकेत देता है, जो आपको सर्वोच्च ज्ञान की खोज करने और साझा करने के लिए प्रेरित करता है। आपको आध्यात्मिक यात्राओं एवं परिवर्तनकारी अनुभवों में गहरी रुचि हो सकती है जो जीवन और उसके रहस्यों के बारे में आपकी समझ का विस्तार करते हैं। यह स्थिति उच्च शिक्षा में सफलता की संभावना की ओर भी इशारा करती है, जहाँ आपकी जिज्ञासा एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण आपको बौद्धिक गतिविधियों में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद करते हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र दसवें भाव में

पुनर्वसु नक्षत्र आपकी कुण्डली के दसवें भाव में है, यह परिवार, पालन-पोषण या रियल एस्टेट से जुड़े करियर में सफलता की प्रबल संभावना को दर्शाता है, जहाँ आपका देखभाल करने वाला स्वभाव चमक सकता है। आपको अपने व्यावसायिक क्षेत्र में उन प्रयासों के माध्यम से पहचान मिलने की संभावना है, जो आपके समर्पण एवं दूसरों का समर्थन करने की क्षमता को प्रदर्शित करते हैं। यह स्थिति एक स्थिर एवं संतुष्टिदायक करियर की इच्छा को भी दर्शाती है, जहाँ सकारात्मक और पोषणकारी वातावरण बनाना एक प्रमुख प्राथमिकता है।

पुष्य नक्षत्र दसवें भाव में

पुष्य नक्षत्र आपकी कुण्डली के दसवें भाव में है, यह परिवार, पालन-पोषण या उपचार से जुड़े करियर में सफलता की प्रबल संभावना को दर्शाता है, जहाँ आपका देखभाल करने वाला स्वभाव निखरता है। आपके करुणामय एवं सहयोगी प्रयासों से आपको अपने व्यावसायिक क्षेत्र में पहचान मिलने की संभावना है। यह स्थिति एक स्थिर और संतुष्टिदायक करियर की गहरी इच्छा को भी दर्शाती है, जहाँ एक सकारात्मक और पोषणकारी वातावरण बनाना आपके लक्ष्यों एवं उपलब्धियों का केंद्रबिंदु है।

अश्लेषा नक्षत्र ग्यारहवें भाव में

अश्लेषा नक्षत्र आपकी कुण्डली के ग्यारहवें भाव में है, यह दर्शाता है कि आपकी मित्रता प्रगाढ़ और भावनात्मक रूप से गहरी होगी, जिसमें निष्ठा एवं लगाव की भावना प्रबल होगी। आपको भावनात्मक अभिव्यक्ति या उपचार पर केंद्रित सामूहिक गतिविधियों में सफलता मिल सकती है, क्योंकि दूसरों के साथ गहन स्तर पर जुड़ने की आपकी क्षमता सामूहिक विकास को बढ़ावा देने में मदद करती है। यह स्थिति समान विचारधारा वाले व्यक्तियों के प्रति आकर्षण का भी संकेत देती है जो आपकी भावनात्मक प्रबलता एवं समझ को साझा करते हैं, तथा घनिष्ठ, सहायक समुदाय बनाते हैं।

मघा नक्षत्र ग्यारहवें भाव में

मघा नक्षत्र आपकी कुण्डली के ग्यारहवें भाव में है, यह दर्शाता है कि आपके मज़बूत सामाजिक संबंध हैं तथा आपमें समूह में नेतृत्व करने की स्वाभाविक क्षमता है। आप सामाजिक या सामुदायिक गतिविधियों में मान्यता प्राप्त करने की कोशिश करेंगे और इन क्षेत्रों में सार्थक प्रभाव डालने का प्रयास करेंगे। यह स्थिति समान विचारधारा वाले व्यक्तियों के प्रति आकर्षण को भी दर्शाती है जो आपके मूल्यों एवं लक्ष्यों को साझा करते हैं, तथा आपसी सम्मान और साझा महत्वाकांक्षाओं पर आधारित संबंधों को बढ़ावा देते हैं।

पुर्वफाल्गुनी नक्षत्र बारहवें भाव में

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र आपकी कुण्डली के बारहवें भाव में है, यह आध्यात्मिक अभ्यासों में आपकी गहरी रुचि तथा अपनी अन्तर्रात्मा से जुड़ने के लिए एकांत के क्षणों को प्राथमिकता देने का संकेत देता है। आपको विशेष रूप से आपकी रचनात्मक या रोमांटिक गतिविधियों से संबंधित क्षेत्रों में, छिपी हुई चुनौतियों या प्रतिद्वंद्वियों का सामना करना पड़ सकता है, जिसके लिए आपको सचेत एवं दृढ़ रहने की आवश्यकता होगी। यह स्थिति एकांत और आत्मनिरीक्षण की गहरी इच्छा को भी दर्शाती है, जहाँ आपको

रचनात्मकता और रोमांस के मामलों में प्रेरणा और स्पष्टता मिलती है।

उत्तरफाल्गुनी नक्षत्र बारहवें भाव में

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र आपकी कुण्डली के बारहवें भाव में है, यह आध्यात्मिक साधनाओं में गहरी रुचि तथा अपनी अंतर्रात्मा की खोज के लिए एकांत के क्षणों को प्राथमिकता देने का संकेत देता है। आपको छिपी हुई चुनौतियों या प्रतिद्वंद्वियों का सामना करना पड़ सकता है, विशेषकर आपके रचनात्मक या रोमांटिक प्रयासों से संबंधित क्षेत्रों में, जहाँ आपको सजगता और लचीलेपन की आवश्यकता होती है। यह स्थिति एकांत और आत्मनिरीक्षण की गहरी इच्छा को भी दर्शाती है, जहाँ आपको रचनात्मकता, रोमांस तथा व्यक्तिगत विकास के मामलों में प्रेरणा एवं स्पष्टता मिलती है।

हस्ता नक्षत्र पहले भाव में

हस्त नक्षत्र आपकी कुण्डली के प्रथम भाव में है, यह जीवन के प्रति एक कुशल और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का संकेत देता है, जहाँ आप समस्या-समाधान तथा व्यावहारिक ज्ञान को लागू करने में उत्कृष्ट होते हैं। आपको उन व्यवसायों में सफलता मिलने की संभावना है जिनमें शारीरिक श्रम, शिल्प, या सटीकता की आवश्यकता वाले विस्तृत कार्य शामिल हैं। यह स्थिति आपके व्यक्तिगत कौशल एवं क्षमताओं को विकसित करने पर एक मजबूत ध्यान केंद्रित करने पर भी प्रकाश डालती है, क्योंकि आपको अपनी प्रतिभा में निपुणता प्राप्त करने तथा जीवन के विभिन्न पहलुओं में उनका प्रभावी ढंग से उपयोग करने पर गर्व है।

चित्रा नक्षत्र पहले भाव में

चित्रा नक्षत्र आपकी कुण्डली के प्रथम भाव में है, यह एक कलात्मकता और सौंदर्यात्मकता से प्रेरित व्यक्तित्व का संकेत देती है, जहाँ आपका आकर्षण और सौंदर्यबोध स्वाभाविक रूप से ध्यान आकर्षित करते हैं। आपमें व्यक्तिकता की प्रबल भावना है तथा आप आत्म-अभिव्यक्ति को महत्व देते हैं, प्रायः रचनात्मक माध्यमों से अपने अनूठे दृष्टिकोण का प्रदर्शन करते हैं। यह स्थिति रचनात्मक प्रयासों में सफलता की संभावना का भी संकेत देती है, क्योंकि आपकी प्रतिभा और मौलिकता आपको कलात्मक या नवीन क्षेत्रों में अलग पहचान दिलाती है।

स्वाति नक्षत्र पहले भाव में

स्वाति नक्षत्र आपकी कुण्डली के प्रथम भाव में है, यह एक स्वतंत्र और सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व का प्रतीक है, जहाँ आप अपनी बातचीत में संतुलन और निष्पक्षता को महत्व देते हैं। आपमें आत्म-अभिव्यक्ति की तीव्र इच्छा है, और आप प्रायः आत्मविश्वास एवं शालीनता के साथ अपने अनूठे दृष्टिकोण का प्रदर्शन करते हैं। यह स्थिति कूटनीतिक प्रयासों में सफलता की संभावना का भी संकेत देती है, क्योंकि आपका स्वाभाविक आकर्षण और मध्यस्थता करने की क्षमता आपको एक प्रभावी एवं सम्मानित संवादक बनाती है।

विशाखा नक्षत्र दूसरे भाव में

विशाखा नक्षत्र आपकी कुण्डली के दूसरे भाव में है, यह महत्वाकांक्षी और प्रेरक संवाद को दर्शाता है, विशेषकर वित्तीय मामलों में, जहाँ आप स्थिरता और विकास प्राप्त करना चाहते हैं। आपमें दृढ़ निश्चयी और लक्ष्य-उन्मुख प्रयासों के माध्यम से धन संचय करने की क्षमता है। यह स्थिति मजबूत पारिवारिक मूल्यों एवं वित्तीय स्थिरता की गहरी इच्छा को भी दर्शाती है, क्योंकि आप अपने और अपने प्रियजनों के लिए एक सुरक्षित एवं समृद्ध आधार बनाने को प्राथमिकता देते हैं।

अनुराधा नक्षत्र दूसरे भाव में

अनुराधा नक्षत्र आपकी कुण्डली के द्वितीय भाव में है, यह संवाद के प्रति एक दृढ़ और अनुशासित दृष्टिकोण को दर्शाती है, विशेष रूप से वित्तीय मामलों में, जहाँ आपका ध्यान आपको सही निर्णय लेने में मदद करता है। आपमें निरंतरएवं अनुशासित प्रयासों के माध्यम से धन संचय करने की क्षमता है, जो त्वरित लाभ की तुलना में दीर्घकालिक स्थिरता को महत्व देते हैं। यह स्थिति मज़बूत पारिवारिक मूल्यों तथा वित्तीय स्थिरता की गहरी इच्छा को भी दर्शाती है, क्योंकि आप अपने एवं अपने प्रियजनों के लिए एक सुरक्षित आधार बनाने को प्राथमिकता देते हैं।

ज्येष्ठा नक्षत्र तीसरे भाव में

ज्येष्ठा नक्षत्र आपकी कुण्डली के तृतीय भाव में है, यह एक दृढ़ और केंद्रित संवाद शैली का संकेत देता है, जहाँ आपके शब्दों में अधिकार और प्रभाव होता है। आपको अनुशासित और लक्ष्य-उन्मुख गतिविधियों से जुड़ी छोटी यात्राओं या प्रयासों में सफलता मिलने की संभावना है। यह स्थिति संचार से जुड़े क्षेत्रों, जैसे लेखन, शिक्षण, या मीडिया में सफलता की संभावना का भी संकेत देती है, जहाँ आपकी स्पष्टता और दृढ़ संकल्प आपको दूसरों से अलग दिखने तथा उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद करते हैं।

मूला नक्षत्र तीसरे भाव में

मूला नक्षत्र आपकी कुण्डली के तीसरे भाव में है, आपकी संवाद शैली परिवर्तनकारी एवं केंद्रित है, जो प्रायः दूसरों पर एक अमिट छाप छोड़ती है। आपको व्यक्तिगत विकास और परिवर्तन से जुड़ी छोटी यात्राओं या प्रयासों में सफलता मिलने की संभावना है। यह स्थिति आपके करियर या संचार से जुड़ी गतिविधियों में सफलता की संभावना को भी उजागर करती है, जहाँ आपकी गहराई और स्पष्टता निखरती है।

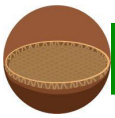

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र चौथे भाव में

आपके चतुर्थ भाव में पूर्वाषाढ़ा होने पर, आप अपने गृहस्थ जीवन में महत्वाकांक्षा और दृढ़ संकल्प लाते हैं, तथा एक स्थिर एवं सफल वातावरण बनाने का प्रयास करते हैं। यह स्थिति अचल संपत्ति या आपके निवास स्थान से संबंधित महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में संभावित सफलता का संकेत देती है। आप एक सुव्यवस्थित घर की प्रबल इच्छा रखते हैं जो आपकी उपलब्धियों को दर्शाता हो तथा सुख-सुविधा एवं सुरक्षा प्रदान करता हो।

उत्तराषाढ़ नक्षत्र चौथे भाव में

आपके चतुर्थ भाव में उत्तराषाढ़ा होने पर, आप अपने घर के वातावरण में महत्वाकांक्षा और दृढ़ संकल्प लाते हैं, तथा एक स्थिर एवं समृद्ध आधार बनाने का प्रयास करते हैं। यह स्थिति रियल एस्टेट उपक्रमों या आपके निवास स्थान से संबंधित महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में संभावित सफलता का संकेत देती है। आपकी एक सुव्यवस्थित और सफल गृहस्थ जीवन की प्रबल इच्छा है जो आपकी उपलब्धियों को दर्शाता हो तथा आपके परिवार को सुख-सुविधा एवं सुरक्षा प्रदान करता हो।

श्रवण नक्षत्र पाँचवें भाव में

आपके पंचम भाव में श्रवण नक्षत्र है, आप रचनात्मक गतिविधियों में खुद को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में उत्कृष्ट हैं, अपने विचारों एवं प्रतिभाओं को उजागर करते हैं। आपको दूसरों को सिखाने और मार्गदर्शन करने में सफलता मिलने की संभावना है, क्योंकि आपके संवाद कौशल प्रेरित एवं शिक्षित करते हैं। बच्चों की बात करें तो, आप शिक्षा और खुले संवाद पर ज़ोर देने की प्रबल इच्छा रखते हैं, जिससे उनके विकास एवं प्रगति को सार्थक तरीके से बढ़ावा मिलता है।

धनिष्ठा नक्षत्र पाँचवें भाव में

आपके पंचम भाव में धनिष्ठा नक्षत्र होने से, आपमें रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति और नेतृत्व की स्वाभाविक प्रतिभा होती है, जो प्रायः आपके आस-पास के लोगों को प्रेरित करती है। यह स्थिति रचनात्मक प्रयासों तथा प्रदर्शन कलाओं में सफलता का समर्थन करती है, जहाँ आपकी गतिशील ऊर्जा एवं प्रतिभा वास्तव में निखर सकती है। आप बच्चों के लिए प्रबल इच्छा रखते हैं, उनके विकास को पोषित करने तथा उन्हें उनके अपने लक्ष्यों में सफलता की ओर मार्गदर्शन करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

शतभिषा नक्षत्र पाँचवें भाव में

आपके पाँचवें भाव में शतभिषा नक्षत्र होने पर, आपकी आत्म-अभिव्यक्ति अत्यधिक अपरंपरागत और रचनात्मक होती है, जिससे आप अनोखे एवं नवीन रूप से दूसरों से अलग दिखते हैं। आपको उन गतिविधियों में सफलता मिलने की संभावना है जो पारंपरिक ढाँचों को तोड़ती हैं या नए विचारों की खोज करती हैं। बच्चों की बात करें तो, आप उनके व्यक्तित्व और रचनात्मकता को पोषित करने पर ज़ोर दे सकते हैं, उन्हें उनके अनूठे गुणों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

पूर्वाभाद्र नक्षत्र छठे भाव में

पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र आपकी कुण्डली के छठे भाव में होने से, आप नौकरी और दैनिक जिम्मेदारियों को एक परिवर्तनकारी मानसिकता के साथ देखते हैं, तथा अपने काम और दूसरों के जीवन में सार्थक बदलाव लाने का प्रयास करते हैं। यह स्थिति कार्यस्थल में चुनौतियाँ ला सकती है, विशेषकर परिवर्तनों को समझने या नए विचारों को प्रस्तुत करने में, लेकिन ये अनुभव प्रायः विकास की ओर ले जाते हैं। स्वास्थ्य संबंधी क्षेत्रों या उन क्षेत्रों में सफलता की आपकी तीव्र इच्छा होती है जहाँ आपके प्रयास उपचार एवं रूपान्तरण में योगदान दे सकते हैं।

उत्तरभाद्र नक्षत्र छठे भाव में

उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र आपकी कुण्डली के छठे भाव में होने से, आप सेवा और दैनिक ज़िम्मेदारियों को करुणा एवं दूसरों की मदद करने की सच्ची इच्छा के साथ निभाते हैं। हालाँकि इससे सार्थक योगदान मिल सकता है, लेकिन कार्यस्थल पर आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, विशेषकर आाध्यात्मिक आदर्शों और व्यावहारिक माँगों के बीच संतुलन बनाते समय। यह स्थिति स्वास्थ्य संबंधी क्षेत्रों में सफलता की ओर आपकी प्रबल प्रवृत्ति को दर्शाती है, जहाँ आपका

सहानुभूतिपूर्ण एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण परिवर्तनकारी प्रभाव डाल सकता है।

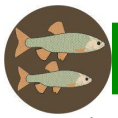

रेवती नक्षत्र सातवें भाव में

रेवती नक्षत्र आपकी कुण्डली के सप्तम भाव में, आपकी साझेदारियाँ करुणा, सद्भाव और भावनात्मक गहराई से युक्त होती हैं। आप स्वाभाविक रूप से ऐसे साथी की ओर आकर्षित होते हैं जिसका दृष्टिकोण सौम्य और आध्यात्मिक हो, जिससे आपसी समझ एवं सहानुभूति पर आधारित संबंध बनता है। आप एक ऐसे रिश्ते की इच्छा रखते हैं जो भावनात्मक सुरक्षा को प्राथमिकता दे तथा दोनों भागीदारों की भलाई का पोषण करे, एक ऐसे बंधन को बढ़ावा दे जो प्रेमपूर्ण और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध हो।

नक्षत्र देवी–देवता

वैदिक ज्योतिष में, नक्षत्र देवता प्रत्येक नक्षत्र की विशिष्ट विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन देवताओं से जुड़े मिथक नक्षत्रों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। ऐसा माना जाता है कि देवताओं की पूजा करने से उनके संबंधित नक्षत्र से जुड़े सकारात्मक गुणों और विशेषताओं में वृद्धि होती है, जिससे व्यक्तिगत विकास और सद्भाव को बढ़ावा मिलता है।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र देवी–देवता
लग्न	हस्ता (4)	सवितृ आदित्य
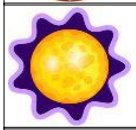 सूर्य	मूला (1)	निरृति
चन्द्रमा	हस्ता (2)	सवितृ आदित्य
मंगल	अश्विनी (2)	अश्विनी कुमार
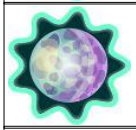 बुध	ज्येष्ठा (1)	इन्द्र
गुरू	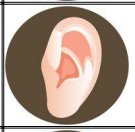 श्रवण (3)	विष्णु
शुक्र	श्रवण (1)	विष्णु
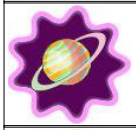 शनि	अरिद्रा (1)	रूद्र
राहु	मूला (2)	निरृति
केतु	मृगशिर (4)	सोमदेव
हर्षल	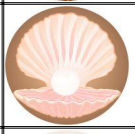 चित्रा (4)	विश्वकर्मा
नेपच्यून	अनुराधा (4)	मित्र आदित्य
प्लूटो	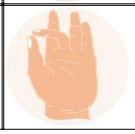 हस्ता (1)	सवितृ आदित्य

नक्षत्र शक्ति

वैदिक ज्योतिष में, प्रत्येक नक्षत्र में एक विशिष्ट शक्ति होती है, जो उसे नियंत्रित करने वाले देवता से प्राप्त होती है। यह शक्ति नक्षत्र के सार और प्रभाव को परिभाषित करती है। प्रत्येक नक्षत्र आरोही ऊर्जा, जो विकास और विस्तार को बढ़ावा देती है, और अवरोही ऊर्जा, जो आत्मनिरीक्षण और संकल्प को प्रोत्साहित करती है, दोनों का प्रतीक है।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र शक्ति
लग्न	हस्ता (4)	हस्त स्थापनीय अगम शक्ति
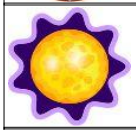 सूर्य	मूला (1)	बरहना शक्ति
चन्द्रमा	हस्ता (2)	हस्त स्थापनीय अगम शक्ति
मंगल	अश्विनी (2)	शिघ्र व्यापनि शक्ति
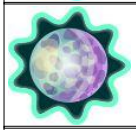 बुध	ज्येष्ठा (1)	आरोहण शक्ति
गुरू	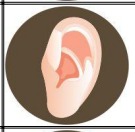 श्रवण (3)	संहनन शक्ति
शुक्र	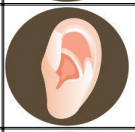 श्रवण (1)	संहनन शक्ति
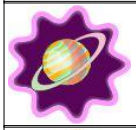 शनि	अरिद्रा (1)	यत्न शक्ति
राहु	मूला (2)	बरहना शक्ति
केतु	मृगशिर (4)	प्रिणाना शक्ति
हर्षल	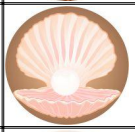 चित्रा (4)	पुण्यकैयानी शक्ति
नेपच्यून	अनुराधा (4)	राधना शक्ति
प्लूटो	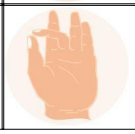 हस्ता (1)	हस्त स्थापनीय अगम शक्ति

नक्षत्र गुण (त्रि–गुण)

वैदिक ज्योतिष में, गुण प्रत्येक नक्षत्र की मूल प्रेरणा को दर्शाता है। सत्व सद्भाव, पवित्रता और ब्रह्मांड की पोषक शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। रजस क्रिया और इच्छा की प्रेरणा को दर्शाता है, जो रचनात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। तमस निष्क्रियता तथा परिवर्तन एवं नई शुरुआत के लिए आवश्यक विनाशकारी शक्ति को दर्शाता है।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र गुण (त्रि–गुण)
लग्न	हस्ता (4)	रजस (त त र)
सूर्य	मूला (1)	तमस (स र र)
चन्द्रमा	हस्ता (2)	रजस (त त र)
मंगल	अश्विनी (2)	तमस (र र र)
बुध	ज्येष्ठा (1)	सत्व (त स स)
गुरू	श्रवण (3)	सत्व (स त र)
शुक्र	श्रवण (1)	सत्व (स त र)
शनि	अरिद्रा (1)	तमस (र त स)
राहु	मूला (2)	तमस (स र र)
केतु	मृगशिर (4)	तमस (र त त)
हर्षल	चित्रा (4)	तमस (त त त)
नेपच्यून	अनुराधा (4)	तमस (त स त)
प्लूटो	हस्ता (1)	रजस (त त र)

नक्षत्र स्वभाव

वैदिक ज्योतिष में, नक्षत्रों की प्रवृति उनकी शक्तियों और कार्यों के लिए उपयुक्तता को परिभाषित करती है। स्थिर नक्षत्र स्थिर और परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी होते हैं, जबकि चर नक्षत्र परिस्थितियों के अनुसार शीघ्रता से ढल जाते हैं। तीक्ष्ण नक्षत्र बलशाली और निष्पक्ष होते हैं, जबकि आक्रामक नक्षत्र प्रेरित और भावनात्मक रूप से तीव्र होते हैं। लघु नक्षत्र बुद्धि और व्यवसाय में श्रेष्ठ होते हैं, सौम्य नक्षत्र कलात्मक और सहानुभूतिपूर्ण होते हैं, तथा मिश्रित नक्षत्र संवेदनशीलता एवं बाधाओं को दूर करने की क्षमता के बीच संतुलन बनाते हैं, जो अग्नि के सृजन या विनाश के दोहरे स्वभाव को मूर्त रूप देते हैं।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वभाव
लग्न	हस्ता (4)	लघु
सूर्य	मूला (1)	तीक्ष्ण
चन्द्रमा	हस्ता (2)	लघु
मंगल	अश्विनी (2)	लघु
बुध	ज्येष्ठा (1)	तीक्ष्ण
गुरू	श्रवण (3)	चर
शुक्र	श्रवण (1)	चर
शनि	अरिद्रा (1)	तीक्ष्ण
राहु	मूला (2)	तीक्ष्ण
केतु	मृगशिर (4)	मृदु
हर्षल	चित्रा (4)	मृदु
नेपच्यून	अनुराधा (4)	मृदु
प्लूटो	हस्ता (1)	लघु

नक्षत्र गण (स्वभाव)

वैदिक ज्योतिष में, नक्षत्रों को तीन स्वभावों में वर्गी.त किया गया है– देव (ईश्वरीय), मनुष्य (मानव), और राक्षस (दानव)। देव नक्षत्र नैतिक और पुण्य कार्यों पर केंद्रित होते हैं, मनुष्य नक्षत्र व्यावहारिक और परिणाम–उन्मुख होते हैं, जबकि राक्षस नक्षत्र वर्जनाओं और प्रतिबंधों को चुनौती देते हैं। प्रत्येक नक्षत्र इनमें से किसी एक स्वभाव के साथ संरेखित होता है, जो उसके अंतर्निहित गुणों और व्यवहारों को प्रभावित करता है।

ग्रह	नक्षत्र	गण (स्वभाव)
लग्न	हस्ता (4)	देव
सूर्य	मूला (1)	राक्षस
चन्द्रमा	हस्ता (2)	देव
मंगल	अश्विनी (2)	देव
बुध	ज्येष्ठा (1)	राक्षस
गुरू	श्रवण (3)	देव
शुक्र	श्रवण (1)	देव
शनि	अरिद्रा (1)	मनुष्य
राहु	मूला (2)	राक्षस
केतु	मृगशिर (4)	देव
हर्षल	चित्रा (4)	राक्षस
नेपच्यून	अनुराधा (4)	देव
प्लूटो	हस्ता (1)	देव

नक्षत्र त्रि–मूर्ति

वैदिक ज्योतिष में, नक्षत्र त्रिमूर्ति से जुड़े हैं– ब्रह्मा (सृजन), विष्णु (संरक्षण), और शिव (विनाश)। ब्रह्म नक्षत्र सृजन और क्रिया पर केंद्रित होते हैं, विष्णु नक्षत्र संरक्षण और रखरखाव करते हैं, आनंद पर बल देते हैं, जबकि शिव नक्षत्र विनाश और हानि के माध्यम से समझ का प्रतिनिधित्व करते हैं, सृजन और उसके प्रतिबिंब को जोड़ते हैं।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र त्रि–मूर्ति
लग्न	हस्ता (4)	ब्रह्मा
सूर्य	मूला (1)	ब्रह्मा
चन्द्रमा	हस्ता (2)	ब्रह्मा
मंगल	अश्विनी (2)	ब्रह्मा
बुध	ज्येष्ठा (1)	महेश
गुरू	श्रवण (3)	ब्रह्मा
शुक्र	श्रवण (1)	ब्रह्मा
शनि	अरिद्रा (1)	महेश
राहु	मूला (2)	ब्रह्मा
केतु	मृगशिर (4)	विष्णु
हर्षल	चित्रा (4)	विष्णु
नेपच्यून	अनुराधा (4)	विष्णु
प्लूटो	हस्ता (1)	ब्रह्मा

नक्षत्र गतिविधि (कार्य–शैली)

वैदिक ज्योतिष में, नक्षत्रों को क्रियाशीलता के आधार पर वर्गी.त किया जाता है– निष्क्रिय, सक्रिय और संतुलित। निष्क्रिय नक्षत्र ग्रहणशील और चौकस होते हैं, सक्रिय नक्षत्र पहल करते हैं और क्रियाओं को प्रेरित करते हैं, जबकि संतुलित नक्षत्र परिस्थिति के अनुसार सक्रिय या निष्क्रिय होकर अनुकूलन करते हैं।

ग्रह	नक्षत्र	गतिविधि (कार्य–शैली)
लग्न	हस्ता (4)	धैर्ययुक्त
सूर्य	मूला (1)	सक्रिय
चन्द्रमा	हस्ता (2)	धैर्ययुक्त
मंगल	अश्विनी (2)	धैर्ययुक्त
बुध	ज्येष्ठा (1)	सक्रिय
गुरू	श्रवण (3)	धैर्ययुक्त
शुक्र	श्रवण (1)	धैर्ययुक्त
शनि	अरिद्रा (1)	संतुलित
राहु	मूला (2)	सक्रिय
केतु	मृगशिर (4)	धैर्ययुक्त
हर्षल	चित्रा (4)	सक्रिय
नेपच्यून	अनुराधा (4)	धैर्ययुक्त
प्लूटो	हस्ता (1)	धैर्ययुक्त

नक्षत्र पुरुषार्थ

वैदिक ज्योतिष में, नक्षत्र पुरुषार्थ उनके लक्ष्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं– धर्म (जीवन का उद्देश्य), अर्थ (भौतिक कल्याण), काम (इच्छाओं की पूर्ति), और मोक्ष (दुख से मुक्ति)। किसी नक्षत्र में ग्रहों पर पड़ने वाले शुभ या अशुभ प्रभाव इस बात को प्रभावित करते हैं कि ये लक्ष्य कितनी अच्छी तरह प्राप्त होंगे।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र पुरुषार्थ
लग्न	हस्ता (4)	मोक्ष
सूर्य	मूला (1)	काम
चन्द्रमा	हस्ता (2)	मोक्ष
मंगल	अश्विनी (2)	धर्म
बुध	ज्येष्ठा (1)	अर्थ
गुरू	श्रवण (3)	अर्थ
शुक्र	श्रवण (1)	अर्थ
शनि	अरिद्रा (1)	काम
राहु	मूला (2)	काम
केतु	मृगशिर (4)	मोक्ष
हर्षल	चित्रा (4)	काम
नेपच्यून	अनुराधा (4)	धर्म
प्लूटो	हस्ता (1)	मोक्ष

नक्षत्र त्रिदोष

वैदिक ज्योतिष में, नक्षत्रों को तीन आयुर्वेदिक दोषों– वात, पित्त और कफ के आधार पर वर्गी.त किया जाता है। वात गति और रचनात्मकता का प्रतिनिधित्व करता है, ऊर्जा और खुले विचारों को बढ़ावा देता है, लेकिन असंतुलित होने पर चिंता या कठोरता उत्पन्न करता है। पित्त पाचन और परिवर्तन को नियंत्रित करता है, शरीर और मन में उग्र ऊर्जा को दर्शाता है। कफ स्थिरता और आत्मविश्वास प्रदान करता है, दयालुता और विश्वसनीयता को बढ़ावा देता है, लेकिन संतुलन से बाहर होने पर सुस्ती या वजन बढ़ने का कारण बनता है।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र त्रिदोष
लग्न	हस्ता (4)	वात (अध्या)
सूर्य	मूला (1)	वात (अध्या)
चन्द्रमा	हस्ता (2)	वात (अध्या)
मंगल	अश्विनी (2)	वात (अध्या)
बुध	ज्येष्ठा (1)	वात (अध्या)
गुरू	श्रवण (3)	कफ (अंत्य)
शुक्र	श्रवण (1)	कफ (अंत्य)
शनि	अरिद्रा (1)	वात (अध्या)
राहु	मूला (2)	वात (अध्या)
केतु	मृगशिर (4)	पित्त (मध्य)
हर्षल	चित्रा (4)	पित्त (मध्य)
नेपच्यून	अनुराधा (4)	पित्त (मध्य)
प्लूटो	हस्ता (1)	वात (अध्या)

नक्षत्र वर्ण (जाति)

वैदिक ज्योतिष में, नक्षत्रों को आध्यात्मिक महत्व के साथ चार वर्णों में वर्गी.त किया गया है– ब्राह्मण (पुजारी) आध्यात्मिकता का प्रतीक हैं, क्षत्रिय (योद्धा) सुरक्षा और जिम्मेदारी का प्रतिनिधित्व करते हैं, वैश्य (व्यापारी) व्यापार के माध्यम से जीविका पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और शूद्र (सेवा) दूसरों की सेवा करने के कर्तव्य का प्रतीक हैं।

ग्रह	नक्षत्र	वर्ण (जाति)
लग्न	हस्ता (4)	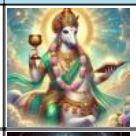 वैश्य
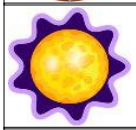 सूर्य	मूला (1)	क्रूर
चन्द्रमा	हस्ता (2)	वैश्य
मंगल	अश्विनी (2)	वैश्य
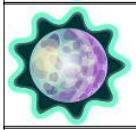 बुध	ज्येष्ठा (1)	कृषक
गुरू	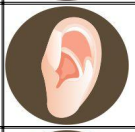 श्रवण (3)	चाण्डाल
शुक्र	श्रवण (1)	चाण्डाल
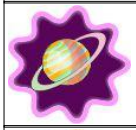 शनि	अरिद्रा (1)	क्रूर
राहु	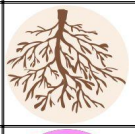 मूला (2)	क्रूर
केतु	मृगशिर (4)	कृषक
हर्षल	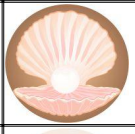 चित्रा (4)	वैश्य
नेपच्यून	अनुराधा (4)	शुद्र
प्लूटो	हस्ता (1)	वैश्य

नक्षत्र गोत्र (कबीला)

वैदिक परंपरा में, सप्तऋषियों, या सात ऋषियों को ब्रह्मा के मानस-पुत्र और ब्राह्मण गोत्रों के पूर्वज मान जाता है। इन्हें प्रायः सप्तऋषि मंडल के सात तारों से जोड़ा जाता है- मरीचि (प्रकाशमान और तीव्र), वशिष्ठ (धन के स्वामी), अंगिरस (उग्र), अत्रि (भस्म करने वाले), पुलस्त्य (चिकने बालों वाले), पुलह (अंतरिक्ष को जोड़ने वाले), और क्रतु (प्रेरणा देने वाले)। ये ऋषि आध्यात्मिक वंश और ब्रह्मांडीय ज्ञान के प्रतीक हैं।

ग्रह	नक्षत्र	गोत्र (कबीला)
लग्न	हस्ता (4)	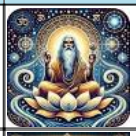 पुलह
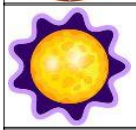 सूर्य	मूला (1)	पुलस्थ
चन्द्रमा	हस्ता (2)	पुलह
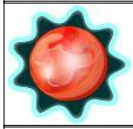 मंगल	अश्विनी (2)	मरिची
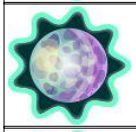 बुध	ज्येष्ठा (1)	अत्रि
गुरू	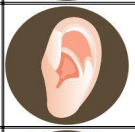 श्रवण (3)	वशिष्ठ
शुक्र	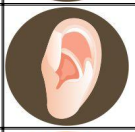 श्रवण (1)	वशिष्ठ
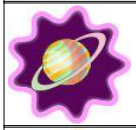 शनि	अरिद्रा (1)	पुलह
राहु	मूला (2)	पुलस्थ
केतु	मृगशिर (4)	पुलस्थ
हर्षल	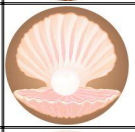 चित्रा (4)	क्रतु
नेपच्यून	अनुराधा (4)	अंगिरा
प्लूटो	हस्ता (1)	पुलह

नक्षत्र पंच महाभूत

वैदिक ज्योतिष में, नक्षत्र पाँच तत्वों या पंच महाभूतों से जुड़े होते हैं– पृथ्वी (भूमि), अपस (जल), अग्नि (आग), वायु (हवा), और आकाश (गगन)। ये तत्व प्रत्येक नक्षत्र की अंतर्निहित प्रवृति और ऊर्जा को प्रभावित करते हैं।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र पंच महाभूत
लग्न	हस्ता (4)	अग्नि
सूर्य	मूला (1)	वायु
चन्द्रमा	हस्ता (2)	अग्नि
मंगल	अश्विनी (2)	पृथ्वी
बुध	ज्येष्ठा (1)	वायु
गुरू	श्रवण (3)	वायु
शुक्र	श्रवण (1)	वायु
शनि	अरिद्रा (1)	जल
राहु	मूला (2)	वायु
केतु	मृगशिर (4)	पृथ्वी
हर्षल	चित्रा (4)	अग्नि
नेपच्यून	अनुराधा (4)	वायु
प्लूटो	हस्ता (1)	अग्नि

नक्षत्र अभिविन्यास

वैदिक ज्योतिष में, नक्षत्रों की दिशाएँ गतिविधियों की उपयुक्तता को प्रभावित करती हैं। अधोमुख (नीचे की ओर उन्मुख) नक्षत्र ध्यान, खुदाई या गूढ़ अध्ययन जैसे गहन, आंतरिक कार्यों को बढ़ावा देते हैं और तमस गुण से जुड़े होते हैं। उर्ध्वमुख (ऊपर की ओर उन्मुख) नक्षत्र सात्विक गुण से जुड़े होते हैं और करियर में उन्नति, अंतरिक्ष मिशन या निवेश जैसी ऊर्ध्वकेंद्रित गतिविधियों का समर्थन करते हैं। तिर्यगमुख (आगे की ओर उन्मुख) नक्षत्र पौधरोपण, सामाजिक यात्राओं या विनिर्माण जैसे निरंतर कार्यों के लिए आदर्श होते हैं। प्रत्येक दिशा विशिष्ट ऊर्जाओं और ग्रहों के प्रभावों के साथ संरेखित होती है।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र अभिविन्यास
लग्न	हस्ता (4)	त्रियंक मुख
सूर्य	मूला (1)	अधो मुख
चन्द्रमा	हस्ता (2)	त्रियंक मुख
मंगल	अश्विनी (2)	त्रियंक मुख
बुध	ज्येष्ठा (1)	त्रियंक मुख
गुरू	श्रवण (3)	उर्ध्व मुख
शुक्र	श्रवण (1)	उर्ध्व मुख
शनि	अरिद्रा (1)	उर्ध्व मुख
राहु	मूला (2)	अधो मुख
केतु	मृगशिर (4)	त्रियंक मुख
हर्षल	चित्रा (4)	त्रियंक मुख
नेपच्यून	अनुराधा (4)	त्रियंक मुख
प्लूटो	हस्ता (1)	त्रियंक मुख

नक्षत्र लिंग (योनि)

वैदिक ज्योतिष में, प्रत्येक नक्षत्र एक पशु प्रतीक (योनि) से जुड़ा होता है, जो उसकी विशेषताओं और गहन गूढ़ अर्थों को प्रकट करता है। परंपरागत रूप से, विवाह में यौन अनुकूलता का आकलन करने के लिए योनि का उपयोग किया जाता है। हालाँकि, ये पशु लक्षण अक्सर नक्षत्र की प्रवृति को प्रतिबिंबित करते हैं और पौराणिक कथाओं से जुड़े होते हैं, जो आगे की खोज करने पर गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र लिंग (योनि)
लग्न	हस्ता (4)	महिष (स्त्री)
सूर्य	मूला (1)	श्वान (पुरूष)
चन्द्रमा	हस्ता (2)	महिष (स्त्री)
मंगल	अश्विनी (2)	अश्व (पुरूष)
बुध	ज्येष्ठा (1)	शशक (पुरूष)
गुरू	श्रवण (3)	वानर (स्त्री)
शुक्र	श्रवण (1)	वानर (स्त्री)
शनि	अरिद्रा (1)	श्वान (स्त्री)
राहु	मूला (2)	श्वान (पुरूष)
केतु	मृगशिर (4)	सर्प (स्त्री)
हर्षल	चित्रा (4)	ब्याघ्र (स्त्री)
नेपच्यून	अनुराधा (4)	शशक (स्त्री)
प्लूटो	हस्ता (1)	महिष (स्त्री)

नक्षत्र पक्षी

पक्षियों के प्रतीकात्मक अर्थ होते हैं जो उनके संबंधित नक्षत्रों की ऊर्जा और गुणों के साथ प्रतिध्वनित होते हैं, जिससे उनके स्वभाव और प्रभाव के बारे में गहरी जानकारी मिलती है।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र पक्षी
लग्न	हस्ता (4)	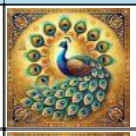 गिद्ध
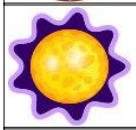 सूर्य	मूला (1)	लाल गिद्ध
चन्द्रमा	हस्ता (2)	गिद्ध
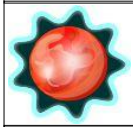 मंगल	अश्विनी (2)	जंगली बाज
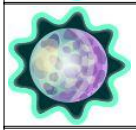 बुध	ज्येष्ठा (1)	ब्राह्मनी बत्तख
गुरू	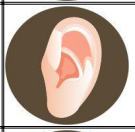 श्रवण (3)	तीतर (स्त्री)
शुक्र	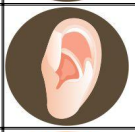 श्रवण (1)	तीतर (स्त्री)
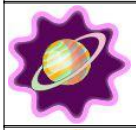 शनि	अरिद्रा (1)	एनड्रिल
राहु	मूला (2)	लाल गिद्ध
केतु	मृगशिर (4)	मुर्गी
हर्षल	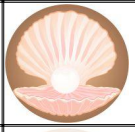 चित्रा (4)	कठफोड़वा
नेपच्यून	अनुराधा (4)	बुलबुल
प्लूटो	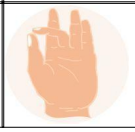 हस्ता (1)	गिद्ध

नक्षत्र पंचपक्षी

पंचपक्षी ज्योतिष की एक प्राचीन तमिल प्रणाली है जो पाँच प्रतीकात्मक पक्षियों– कौआ, मोर, मुर्गी, उल्लू और गिद्ध के आधार पर गतिविधियों को पाँच श्रेणियों में विभाजित करती है। प्रत्येक पक्षी विशिष्ट समयावधियों और गतिविधियों को नियंत्रित करता है, मानवीय क्रियाओं को ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ संरेखित करता है। नक्षत्र और पंचपक्षी प्रणालियों का संयोजन समय, अनुकूलता और व्यक्तिगत शक्तियों की समग्र समझ प्रदान करता है।

ग्रह	नक्षत्र	पंचपक्षी
लग्न	हस्ता (4)	काक – कौआ
सूर्य	मूला (1)	कुक्कुट – मुर्गा
चन्द्रमा	हस्ता (2)	काक – कौआ
मंगल	अश्विनी (2)	गरूड़ – गिद्ध
बुध	ज्येष्ठा (1)	कुक्कुट – मुर्गा
गुरू	श्रवण (3)	कुक्कुट – मुर्गा
शुक्र	श्रवण (1)	कुक्कुट – मुर्गा
शनि	अरिद्रा (1)	पिगंल – उल्लू
राहु	मूला (2)	कुक्कुट – मुर्गा
केतु	मृगशिर (4)	गरूड़ – गिद्ध
हर्षल	चित्रा (4)	काक – कौआ
नेपच्यून	अनुराधा (4)	कुक्कुट – मुर्गा
प्लूटो	हस्ता (1)	काक – कौआ

नक्षत्र दिशा

वैदिक ज्योतिष में, प्रत्येक नक्षत्र एक विशिष्ट दिशा से जुड़ा होता है, जो यात्रा, अनुष्ठान और शुभ स्थान के चयन जैसी गतिविधियों को प्रभावित कर सकता है। ये दिशात्मक संबंध नक्षत्र की अंतर्निहित ऊर्जा के आधार पर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र दिशा
लग्न	हस्ता (4)	दक्षिण पश्चिम
सूर्य	मूला (1)	उत्तर पश्चिम
चन्द्रमा	हस्ता (2)	दक्षिण पश्चिम
मंगल	अश्विनी (2)	पूर्व
बुध	ज्येष्ठा (1)	पश्चिम
गुरू	श्रवण (3)	उत्तर
शुक्र	श्रवण (1)	उत्तर
शनि	अरिद्रा (1)	दक्षिण पूर्व
राहु	मूला (2)	उत्तर पश्चिम
केतु	मृगशिर (4)	पूर्व
हर्षल	चित्रा (4)	दक्षिण पश्चिम
नेपच्यून	अनुराधा (4)	पश्चिम
प्लूटो	हस्ता (1)	दक्षिण पश्चिम

नक्षत्र पौधा

वैदिक ज्योतिष में, प्रत्येक नक्षत्र एक विशिष्ट वृक्ष से जुड़ा होता है, जो उसकी अनूठी ऊर्जा का प्रतीक है। एक व्यावहारिक उपाय यह है कि आप अपने जन्म के चंद्रमा के नक्षत्र से जुड़े वृक्ष की देखभाल करें, जिससे प्रवृति की ऊर्जा से जुड़ते हुए सद्भाव और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा मिले।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र पौधा
लग्न	हस्ता (4)	मालति, चमेली
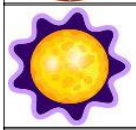 सूर्य	मूला (1)	अजकर्ण, डामर, साल
चन्द्रमा	हस्ता (2)	मालति, चमेली
मंगल	अश्विनी (2)	विषद्रम, तिन्दु, कुचिला
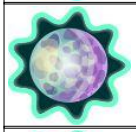 बुध	ज्येष्ठा (1)	शाल्मली, सेवर, सेमल
गुरू	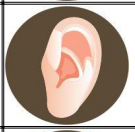 श्रवण (3)	अर्क, मदार
शुक्र	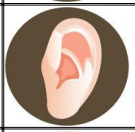 श्रवण (1)	अर्क, मदार
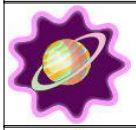 शनि	अरिद्रा (1)	कृष्णागरू, तेंदु, आबनूस
राहु	मूला (2)	अजकर्ण, डामर, साल
केतु	मृगशिर (4)	खदिर, खैर
हर्षल	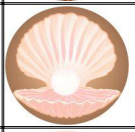 चित्रा (4)	बिल्व, बेल
नेपच्यून	अनुराधा (4)	बकुल, मौलसरी
प्लूटो	हस्ता (1)	मालति, चमेली

नक्षत्र रंग

वैदिक ज्योतिष में, प्रत्येक नक्षत्र एक विशिष्ट रंग से जुड़ा होता है, जो उसकी विशिष्ट ऊर्जा और गुणों को दर्शाता है। इन रंगों का उपयोग अनुष्ठानों, वस्त्रों या परिवेश में नक्षत्र के सकारात्मक प्रभाव को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र रंग
लग्न	हस्ता (4)	गहरा हरा
सूर्य	मूला (1)	भूरा पीला
चन्द्रमा	हस्ता (2)	गहरा हरा
मंगल	अश्विनी (2)	रक्त लाल
बुध	ज्येष्ठा (1)	श्वेताभ
गुरू	श्रवण (3)	हल्का नीला
शुक्र	श्रवण (1)	हल्का नीला
शनि	अरिद्रा (1)	हरा
राहु	मूला (2)	भूरा पीला
केतु	मृगशिर (4)	हल्का स्लेटी
हर्षल	चित्रा (4)	काला
नेपच्यून	अनुराधा (4)	भूरा लाल
प्लूटो	हस्ता (1)	गहरा हरा

नक्षत्र बीज – मंत्र

नक्षत्र बीज मंत्र पवित्र बीजाक्षर हैं जो प्रत्येक नक्षत्र और उसके अधिष्ठाता देवता की ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन मंत्रों का जाप व्यक्ति को ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं से जोड़ता है, सकारात्मक गुणों को बढ़ाता है और चुनौतियों को कम करता है। आध्यात्मिक विकास और भावनात्मक संतुलन के लिए वैदिक उपचारों और ध्यान में इनका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

ग्रह	नक्षत्र	बीज – मंत्र
लग्न	हस्ता (4)	ओम झम, ओम न्यं
सूर्य	मूला (1)	ओम नम्, ओम फम्
चन्द्रमा	हस्ता (2)	ओम झम, ओम न्यं
मंगल	अश्विनी (2)	ओम आं, ओम इं
बुध	ज्येष्ठा (1)	ओम धम्
गुरू	श्रवण (3)	ओम मम्
शुक्र	श्रवण (1)	ओम मम्
शनि	अरिद्रा (1)	ओम ऐं
राहु	मूला (2)	ओम नम्, ओम फम्
केतु	मृगशिर (4)	ओम एं
हर्षल	चित्रा (4)	ओम तम्, ओम थम्
नेपच्यून	अनुराधा (4)	ओम यम्, ओम रम्
प्लूटो	हस्ता (1)	ओम झम, ओम न्यं

नक्षत्र चंद्र मास

वैदिक ज्योतिष में, प्रत्येक नक्षत्र हिंदी चंद्र कैलेंडर के महीनों की विशिष्ट अवधियों से जुड़ा होता है, जो उस समय के दौरान उनके प्रभाव को दर्शाता है। ये संबंध अनुष्ठानों, त्योहारों और महत्वपूर्ण गतिविधियों के लिए शुभ समय निर्धारित करने में मदद करते हैं। किसी विशेष चंद्र माह में सक्रिय नक्षत्र की ऊर्जा के साथ कार्यों को संरेखित करके, व्यक्ति सफलता और सद्भाव के लिए उसकी ब्रह्मांडीय ऊर्जा का उपयोग कर सकते हैं।

ग्रह	नक्षत्र	चंद्र मास
लग्न	हस्ता (4)	चैत्र मास के पहले 9 दिन
सूर्य	मूला (1)	ज्येष्ठ मास का दूसरा भाग
चन्द्रमा	हस्ता (2)	चैत्र मास के पहले 9 दिन
मंगल	अश्विनी (2)	आश्विन मास का पहला आधा भाग
बुध	ज्येष्ठा (1)	ज्येष्ठ मास का पहला भाग
गुरू	श्रवण (3)	श्रावण मास के पहले 9 दिन
शुक्र	श्रवण (1)	श्रावण मास के पहले 9 दिन
शनि	अरिद्रा (1)	मार्गशीर्ष मास के मध्य के 9 दिन
राहु	मूला (2)	ज्येष्ठ मास का दूसरा भाग
केतु	मृगशिर (4)	मार्गशीर्ष मास के पहले 9 दिन
हर्षल	चित्रा (4)	चैत्र मास के मध्य के 9 दिन
नेपच्यून	अनुराधा (4)	वैशाख मास का दूसरा भाग
प्लूटो	हस्ता (1)	चैत्र मास के पहले 9 दिन

नक्षत्र चंद्र तिथि

वैदिक ज्योतिष में, प्रत्येक नक्षत्र विशिष्ट चंद्र तिथियों (चंद्रमा के चरणों) से जुड़ा होता है, जो विशेष दिनों पर उसके प्रभाव को दर्शाते हैं। ये संबंध आध्यात्मिक साधनाओं, अनुष्ठानों और महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए शुभ समय का मार्गदर्शन करते हैं। नक्षत्र की ऊर्जा के साथ उसकी तिथि पर कर्मों का समन्वय सफलता, संतुलन और सामंजस्य को बढ़ाता है।

ग्रह	नक्षत्र	चंद्र तिथि
लग्न	हस्ता (4)	द्वादशी
सूर्य	मूला (1)	प्रतिपदा, चतुर्थी
चन्द्रमा	हस्ता (2)	द्वादशी
मंगल	अश्विनी (2)	प्रतिपदा
बुध	ज्येष्ठा (1)	सप्तमी, चतुर्दशी
गुरू	श्रवण (3)	तृतीया
शुक्र	श्रवण (1)	तृतीया
शनि	अरिद्रा (1)	एकादशी
राहु	मूला (2)	प्रतिपदा, चतुर्थी
केतु	मृगशिर (4)	पंचमी
हर्षल	चित्रा (4)	द्वितिया
नेपच्यून	अनुराधा (4)	द्वादशी
प्लूटो	हस्ता (1)	द्वादशी

नक्षत्र गणेश (गणपति)

भगवान गणेश, या गणपति, बाधाओं को दूर करने वाले और ज्ञान व नई शुरुआत के देवता माने जाते हैं। नक्षत्रों के साथ, महत्वपूर्ण कार्यों या ज्योतिषीय उपायों के दौरान सुचारू प्रगति, विचारों की स्पष्टता और नकारात्मक प्रभावों से सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उनका आह्वान किया जाता है।

ग्रह	नक्षत्र	गणेश (गणपति)
लग्न	हस्ता (4)	वरदा गणपति
सूर्य	मूला (1)	उद्दंड गणपति
चन्द्रमा	हस्ता (2)	वरदा गणपति
मंगल	अश्विनी (2)	द्विज गणपति
बुध	ज्येष्ठा (1)	सृष्टि गणपति
गुरू	श्रवण (3)	द्विमुख गणपति
शुक्र	श्रवण (1)	द्विमुख गणपति
शनि	अरिद्रा (1)	हेरम्बा गणपति
राहु	मूला (2)	उद्दंड गणपति
केतु	मृगशिर (4)	क्षिप्रा गणपति
हर्षल	चित्रा (4)	ष्यक्षरा गणपति
नेपच्यून	अनुराधा (4)	एकदंत गणपति
प्लूटो	हस्ता (1)	वरदा गणपति